

ध्वस्त होते
लोकतंत्र

व्यर्थ गया
लक्ष्मी पूजन

समाज बांटता
कुंडली मिलान

तलाक के लिए
फसाद क्यों

सरिता

दिसंबर (प्रथम) 2020, ₹ 50



सब्सक्राइब करने के लिए 8588843437 पर मैसेज भेजें.
या देखें delhipress.in
अगला 'ई एडिशन फ्री' पाने के लिए ऊपरी नंबर पर मैसेज भेजें.

VISIT...

LANZAROTE
Caliente.COM

टेटमोसोल से रोज़ नहाना, मतलब, त्वचा के संक्रमण[^] को दूर भगाना।

डॉक्टर का सुझाया

No.1

ब्रैंड#

Monosulfiram Medicated Soap
TETMOSOL®

contains Monosulfiram 5% w/w

Prescribed by Doctors



नींबू जैसी ताज़ी महक



खुजली



चकत्ते



फोड़े



पपड़ी

से राहत दे



अपने सुझावों तथा सवालों के लिए, हमारे कंस्यूमर केयर अफसर से इस टोल फ्री नंबर 1800 22 9898 पर या consumercare@piramal.com पर सम्पर्क करें।

[^]खुजली (स्केबीज़) के कणों द्वारा हुए संक्रमण के लिए। स्थिति में सुधार न होने पर, डॉक्टर से सलाह लें। संक्रमण की संभावना तक रोज़ाना स्नान करें। #खाज और खुजली की दवाइयों की श्रेणी में डॉक्टरों द्वारा निर्धारित किया गया, MAT मई २०२० में किये गए IMS प्रिस्क्रिप्शन ऑडिट पर आधारित।

सभी प्रमुख मेडिकल स्टोर्स पर उपलब्ध।



लेख

26 कश्मीर में

बंदिशभरा माहौल

34 तलाक के लिए

गुनाह और फसाद क्यों

42 ध्वस्त होते

2 बड़े लोकतंत्र

48 लक्ष्मी पूजन

फिर भी जेब खाली की खाली

56 कुंडली मिलान

समाज को बांटे रखने का बड़ा हथियार

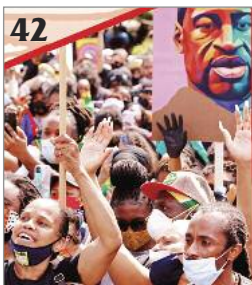
64 वर्जिनिटी

टूट रही हैं बेड़ियां

70 झारखंड की तसवीर

पर्यटन से बदलेगी





42



72



143

72 जीवन सरिता

करें खुद को मोटिवेट

80 पतिपत्नी का रिश्ता

कायम रखें रोमांस

कहानी

84 दूसरा विवाह

विशाल किसे दिल दे बैठा था



84

98 दुनिया पूरी

क्या वह पत्नी को दिया वचन निभा सका

106 ममता

माधुरी का सोचा क्या सच था ?

114 विषखेल

क्या शर्मिला का स्वभाव कभी बदला

126 रिश्तेदार

कैसे हो गए पराए अपने

और भी कहानियां पढ़ने के लिए
sarita.in पर login करें.

बातचीत

143 डेलनाज ईरानी

रिएलिटी शो में पैसे बहुत अच्छे मिलते हैं

व्यंग्य

136 जूता और जूते जी

जूता सिर पर भी रखा जाता है, समझे ?

स्टंभ

8 आप के पत्र

10 सरित प्रवाह

24 श्रीमतीजी

54 भारत भूमि युगे युगे

97 दिन दहाड़े

105 बच्चों के मुख से

125 ऐसा भी होता है

129 इन्हें आजमाइए

135 मेरे पापा

138 चंचल छाया



स्वास्थ्य का रखे ख्याल जीवन रहे खुशहाल

आपकी सेवा में
25 साल
का भरोसा



STOMAFIT®

Tablets & Liquid

एसिडिटी, गैस, बदहजमी, उल्टी, पेट दर्द, क्षीला पैखाना, डायरिया, कब्ज, आँव, इत्यादी !



HAEMOCAL

Delicious Taste

Iron Tonic Loaded with Glucose
खून व ताकत बढ़ाए



COVISAPE

Rinse-Free & Non-Sticky



Kills germs without water.

जब हाथ सुरक्षित रहेंगे तभी हम सुरक्षित रहेंगे



Suntuss

गले में खराश, सूखी खाँसी, बलगम, हरात व एलर्जी वाली खाँसी में आराम पहुँचाने में प्रभावशाली एवं गुणकारी दवा



Scabacid® LOTION

सिर की जूँऔं, रूसी व स्केबीस का नाशक



PYROGUM TOOTH DROPS

मसूहों से खून बहना बंद करे



CLEAR ON XTRA®

With Aloe & Almonds

इसके एंटीबायोटिक गुण कील-मुहाँसो को भगाने में मदद करते हैं



Geltop

Antisepsis & Pain Relieving Mouth Ulcer Gel

इसके एंटीसेप्टिक गुण मुँह के छालो को सफाया करने में मदद करते हैं



SALTEX

दाद, खान, खुजली व एकजिमा को दूर करे



FLAMISUN® GEL & SPRAY

घोट, मोच, गठिया, कमर दर्द, सूजन, स्पोर्ट्स इन्जरी, गुन घोट के दर्द में जल्द आराम पहुँचाए



अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:

सनकेयर फार्मूलेशनस प्रा. लि.

फोन: 8447977889/999, 011-46108735,

मेल: info@stomafit.com

फ्री होम डिलीवरी 8447977999

Bevitone

Multivitamins, Multiminerals & Iron Supplement Capsules

मल्टिविटामिन, मिनरल्स एवं आयरन का भंडार जो बनाए शरीर ताकतवर व उर्जावान





कविताएं

83 ऐसे नीलाम है ईसाफ

91 एक पल सुकून

103 बाढ़ जब आती है

मुख्य संपादकीय व विज्ञापन कार्यालय

दिल्ली प्रैस भवन, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

फोन : 011-41398888, 32468201, 32495622, 23529557, फैक्स : 011-41540714, 23625020.

अन्य कार्यालय : 31, ग्रांड फ्लोर, नारायण चैंबर, आश्रम रोड, अहमदाबाद-380009. फोन : 079-26577845. 11, फर्स्ट फ़्लास,

बालिया गार्डन, शिवाजी नगर, बेंगलुरु-560051. फोन : 080-42013076. गीतांजली टावर, शौच नं. 114 (व्यास अस्पताल के सामने),

अजमेर रोड, जयपुर-302006. फोन : 09529020226. ए-4, श्रीराम इंडस्ट्रियल एस्टेट, जीडी अंबेडकर मार्ग, वडाला,

फोन : 022-24122661. 16-ए, अमृता बनजी लेन, पहली मंजिल, कालीघाट, नजदीक बासुश्री सिनेमा, कोलकाता-700026. फोन :

033-40675040. 14, पहली मंजिल, सीसंस कॉम्प्लेक्स, मांटीअथ रोड, चेन्नई-600008. फोन : 044-28554448, 28412161.

122, चिनीय ट्रेड सेंटर, 116, पार्क लेन, सिकंदराबाद-500003. फोन : 040-27896947, 27841596. बी-जी/3.4 सगू मार्ग,

लखनऊ-226001. फोन : 0522-2618856. 12, ग्रांड फ्लोर, आशियाना टावर, ऐम्प्लिफिकेशन रोड, पटना-800001. फोन :

0612-2323840. जी-7, पायनियर टावर, मेरीन ड्राइव, कोच्चि-682031. फोन : 0484-2371537. बी-31, वर्धमान ग्रीन पार्क

कालोनी, 80 फिट रोड, अशोक गार्डन थाना के पीछे, भीपाल-462023. फोन : 0755-2759853, 2573057.

सब्सक्रिप्शन और सर्कुलेशन के लिए संपर्क करें : फोन : 011-41398888, फैक्स : 011-41540714.

एक्सटेंशन नंबर : 119, 221, 264 (सोमवार से शनिवार सुबह 10 बजे से शाम 6 बजे तक)

मोबाइल/एसएमएस/व्हाट्सएप नंबर : 08588843408 ईमेल : subscription@delhipress.in

© दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड की आज्ञा बिना कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए. सिरता में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक व्यक्तियों, संस्थाओं से उन को किसी भी प्रकार की समानता संयोग मात्र है.

दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक पोरा नाथ द्वारा ई-8, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 से प्रकाशित एवं पोरा नाथ प्रैस प्राइवेट लिमिटेड, डीएलएफ-50, इंडस्ट्रियल एरिया, फरीदाबाद, हरियाणा-121003 में मुद्रित. संपादक : पोरा नाथ.

मूल्य : एक प्रति ₹ 50. वार्षिक : ₹ 999, दो वर्ष : ₹ 1,860 (रजिस्टर्ड डाक से)

वार्षिक मूल्य : केवल चेक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा ही 'दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड' के नाम से ई-8, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 को ही भेजें. वी.पी.सी. नहीं. हमारी कोई डिपोजिट योजना नहीं है.

अंतर्राष्ट्रीय सब्सक्रिप्शन मूल्य (हवाई डाक से) : वार्षिक 100 अमेरिकी डॉलर.

संपर्क करें :

1. रचनाओं व स्तंभों के लिए ईमेल : article.hindi@delhipress.in
2. निमंत्रणों व प्रैस सूचनाओं के लिए ईमेल : invites.pressrelease@delhipress.biz
3. संपादक को पत्रों के लिए ईमेल : editor@delhipress.biz
4. ग्राहक विभाग के लिए ईमेल : subscription@delhipress.in

COPYRIGHT NOTICE

© Delhi Press Patra Prakashan Private Limited, New Delhi-110055, INDIA

ISSN 0971-1538

No article, story, photo or any other matter can be reproduced from this magazine without written permission.

THIS COPY IS SOLD ON THE CONDITION THAT JURISDICTION FOR ALL DISPUTES CONCERNING SALE, SUBSCRIPTION AND PUBLISHED MATTER WILL BE COURTS/FORUMS/TRIBUNALS AT DELHI.

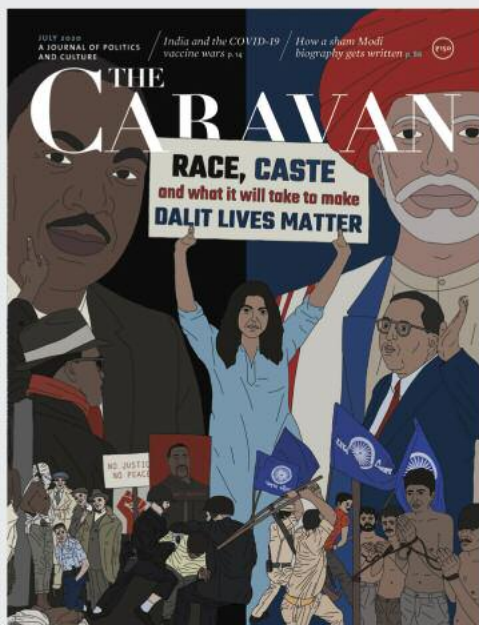
वर्ष : 75, अंक : 23

"India's best
English-language magazine"
—*The Guardian, UK*

"For those with an interest in India, it
has become an absolute must-read"
—*The New Republic, USA*

As India's only magazine devoted to long-form narrative journalism, *The Caravan* has quickly become renowned for its high standard of detailed reporting, elegant writing, and incisive commentary. As a literary and political journal, it has gained global recognition beyond its growing readership and is now at the forefront of Indian political debates. *The Caravan* is now considered the most respected and intellectually agile magazine in the country.

INDIA'S ONLY **NARRATIVE JOURNALISM** MAGAZINE



The Caravan now available for only Rs 1125 (12 issues)

Assured Delivery by Registered Post.

**THE
CARAVAN**
Journal of politics, culture & business.

www.caravanmagazine.in

To subscribe call toll free at: 1 800 103 8880, Landline 011-41398888, Ext. 119/221/264 (Monday to Saturday 10.00 am to 6.00 pm)

For subscribing online, kindly visit www.delhipress.in/subscribe or e-mail at subscription@delhipress.in

For advertising kindly call Mr. Shantanu Choudhury at +919810604922 or mail shantanu.choudhury@delhipress.in



सरित प्रवाह, नवंबर (प्रथम) 2020

नवंबर (प्रथम) अंक में प्रकाशित संपादकीय और अग्रलेख 'जेब खाली, कैसे मने दीवाली' पढ़ा. आप का आलोचना से कुछ ज्यादा ही लगाव है. आप सुझाव भी दीजिए कि क्या करना ठीक था या है. कुछ सकारात्मक लेख भी प्रकाशित कीजिए.

लौकडाउन निश्चितरूप से गलत था. लोगों को घरों में रहने को कहा गया. यह नहीं सोचा गया कि लोग घरों में रहेंगे तो किसी को तो उन्हें सुविधाएं देनी होंगी. इन सुविधाओं को देने वालों का क्या होगा? कितने लोग अपने को घर में बंद रख सकते हैं.

लौकडाउन ने दैनिक वेतनभोगियों पर कहर बरसाया है. यह समाज का सब से असुरक्षित वर्ग है. विपक्ष भी कोरोना से डरा हुआ है. विपक्ष की सरकारों में भी इस विषय पर कोई निश्चित विचार नहीं दिखता. सरकार का कहना है कि लौकडाउन से एक लाख मौतें बचा ली गई हैं. हमारी आबादी हर साल एक करोड़ बढ़ रही है. यह बचाव नगण्य है. सरकार को लौकडाउन करना ही नहीं चाहिए था.

आप को जीएसटी के बारे में बड़ी गलतफहमी है. मैं 55 वर्ष से व्यापार में

हूँ. मैं ने इस से अच्छा और सरल कानून नहीं देखा है. पहले इस एक्साइज, सर्विस टैक्स की पाबंदियों से बहुत बंधे हुए थे. काम करते हुए डर बना रहता था. बहुत भ्रष्टाचार था. सेल्स टैक्स भी हैरान करने वाला था. महाराष्ट्र में औक्ट्रॉइ टैक्स भी था. अब भ्रष्टाचार नहीं के बराबर है. पहले छोटी इकाइयां टैक्स चोरी कर के जीवित थीं. अब उन्हें अपनी योग्यता पर जीना है.

जीएसटी केंद्र और राज्यों, दोनों सरकारों की सहमति से आया है. आप इसे ठीक नहीं समझते, तो दोनों को दोष दीजिए. गोपाल कृष्णा

*

समस्याओं पर ध्यान दे सरकार

नवंबर (प्रथम) अंक में लेख 'वायरसों की गिरफ्त में देश' पढ़ा. बिल्कुल सही है कि देश में कोरोना ही अकेला वायरस नहीं है, बल्कि अनेक मुसीबतें भी तो वायरस ही की तरह हैं. उन का भी तो अंत किया जाना जरूरी है. मेरी सोच भी यही कहती है कि कोरोना को तो हम वैक्सीन निकाल कर कभी न कभी काबू में कर ही लेंगे, पर दूसरे वायरस, जैसे झूठ, बेईमानी, चोरी, औरतों पर अत्याचार आदि जो दीमक की तरह देश में बढ़ते ही जा रहे हैं, उन को कौन ठीक करेगा?

यदि पूजापाठ और हवन द्वारा ठीक होना होता तो अभी तक हो जाना चाहिए था.

ऐसे वायरसों को दूर करने के लिए मंथन और चिंतन की आवश्यकता होती है. यहां किसी को चुनावों से फुरसत हो, तब तो कोई ध्यान दे. ऐसे माहौल में मुझे यह जान कर खुशी है कि कुछ लोग अपने स्वयं के व्यक्तित्व की वजह से अकेले

अथवा एनजीओ द्वारा इस काम में जुटे हुए हैं। अंतर केवल यह है कि उन को काम से मतलब होता है, पीड़ितों की सेवा करनी होती है न कि अपनी शोहरत के गीत गाने होते हैं।

भला हो सोनी टीवी का जो ऐसे कर्मवीरों को शुक्रवार के दिन अपने सीरियल 'कौन बनेगा करोड़पति' में आमंत्रित कर न केवल हमारा मनोरंजन करते हैं बल्कि महत्वपूर्ण जानकारी भी देते हैं। इस का श्रेय अमिताभ बच्चन को भी जाता है जो अपने अनोखे तरीके से कर्मवीरों के कार्यों को हमारे सामने पेश करते हैं।

छत्तीसगढ़ की महिला फूलवासन बाई यादव ने गरीबी से जूझते हुए 2 लाख से अधिक गरीब महिलाओं को जोड़ा और सफल एनजीओ चला रही हैं। उन्हें पद्मश्री से सुशोभित किया जा चुका है। इसी तरह अनुराधा कपूर, जो 'स्वयं' नाम से एनजीओ चलाती हैं, डोमैस्टिक वायलेंस के खिलाफ आवाज उठाती हैं और पीड़ित महिलाओं की हर तरह से मदद करती हैं। ऐसे कर्मवीरों को बढ़ावा मिलना चाहिए। उन की तारीफ में जितना लिखा जाए, वह कम है। लोग उन से प्रेरणा ले कर उन से जुड़ सकते हैं।

ओ डी सिंह

*

भारतीयता का मतलब ही सर्वधर्म समभाव

लव जिहाद, औरन किलिंग, खाप पंचायत के फरमान, वैंलेंटाइन डे पर प्रेमी युगलों से मारपीट आदि व कई दूसरे तरीके हैं जिन के निशाने पर प्यार करने वाले होते हैं। धर्म, जाति, गोत्र, मानमर्यादा के नाम पर प्यार जैसे कोमल एहसास का

गला घोटने वाले नैतिकता के तथाकथित ठेकेदार असल में नफरत के सौदागर हैं। उन से अमनचैन और भाईचारे की उम्मीद नहीं की जा सकती। जब जीवनसाथी चुनने का ही हक न हो, तब बाकी सारे हक बेमानी हो जाते हैं।

माना कि कुछ लोग प्यार की आड़ में धोखाधड़ी करते हैं पर क्या वे सिर्फ विधर्मी होते हैं? क्या कानून बनाने से प्यार में धोखा देना बंद हो जाएगा? हकीकत यह है कि सुनील दत्त से इतर ऋतिक रोशन, सचिन पायलट, पंडित रविशंकर, दिनेश गुड्डू राव, मनीष तिवारी जैसे असंख्य लोग हैं जो बिना कोई धर्मयुद्ध किए प्यार में धर्म से ऊपर उठ गए। इस के साथ ही मुख्तार अब्बास नकवी, शाहनवाज हुसैन जैसे भी असंख्य लोग हैं जो विधर्मियों से शादी करने के बावजूद जिहादी नहीं हैं।

गौरतलब है कि भारतीयता का मतलब ही सर्वधर्म समभाव और धार्मिक सहिष्णुता है। तभी तो सैकड़ों वर्षों के मुगल शासन के बाद भी भारत का इस्लामीकरण नहीं हुआ, अंगरेजों के राज के बाद भी ईसाईकरण नहीं हुआ और अब मुट्ठीभर लोगों के चाहने से भगवाकरण भी नहीं होगा। हां, प्यार पर समाज के ठेकेदारों के पहरे जरूर बढ़ जाएंगे।

बृजेश माथुर •



आप भी भेजें

सरिता में प्रकाशित रचनाओं तथा अन्य सामयिक विषयों पर अपने विचार भेजिए। कृपया पत्रों पर अपना पता अवश्य लिखें। पत्र इस पते पर भेजिए : आप के पत्र, सरिता, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55.

नीचे लिखे नंबर पर एसएमएस या व्हाट्सएप के जरिए मैसेज/ऑडियो भी कर सकते हैं.

08527666772



सरित प्रवाह

संपादकीय

लव जिहाद का बहाना

लव जिहाद का बहाना बना कर हिंदू कट्टरपंथी युवाओं की प्रेम की स्वतंत्रता भी छीन लेने के लिए कानून बना देना चाहते हैं। शायद, उन की मंशा है कि युवा प्रेम कर के शादी करें ही नहीं, क्योंकि लड़कियों को प्रेम करने की आजादी कैसे दी जा सकती है। जब लड़कियां अपनी इच्छा से शादी नहीं कर सकेंगी तो युवाओं की प्रेम करने की स्वतंत्रता छिन जाएगी।

प्रस्तावित लव जिहाद का कानून वैसे तो भारतीय संविधान के खिलाफ होगा पर नरेंद्र मोदी सरकार ने सर्वोच्च न्यायालय को अब जिस तरह का बना दिया है, उस से कुछ भी मुमकिन है। सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय बारबार यही साबित कर रहे हैं कि सरकार ही नहीं, सरकार को चलाने वाले पोंगापंथी गुट भी सही हैं।

लव जिहाद केवल हिंदू लड़कियों के लिए है जो मुसलिम युवकों से विवाह कर लेती हैं। मुसलिम लड़कियां तो कहींकहीं ही हिंदू युवकों से शादी कर पाती हैं क्योंकि हिंदू परिवार उन्हें जगह नहीं देते। तनिष्क ज्वैलरी का विज्ञापन मानव एकता के बारे में चाहे जो कहता रहे, लेकिन हिंदू परिवारों में तो कट्टरता इस कदर है कि वे विधर्मी को तो दूर, विजातीय, विदेशी, दूसरे गोत्र, दूसरी भाषा, दूसरे क्षेत्र की लड़की को भी आसानी से स्वीकारते नहीं हैं।

गुजरात का एक वैदिक ब्राह्मण गुप सोशल मीडिया पर कहता है, 'सगोत्र विवाह, असवर्ण विवाह, तलाक आदि कुकृत्यों को कानूनी प्रोत्साहन दे कर हिंदू संस्कृति की रजवीर्य शुद्धिमूलक व्यवस्था को भ्रष्ट कर के वर्णसंस्कार सृष्टि द्वारा राष्ट्र के सर्वनाश का बीज बोया जा रहा है।' इस विचारधारा के अनुसार, विवाह युवकयुवती में प्रेम के लिए नहीं होता, विवाह संस्कार की आपूर्ति के लिए होता है। धार्मिक ग्रंथ में लिखा है, 'धर्मनिष्ठ पुत्र की प्राप्ति ही हिंदू संस्कृति में विवाह संस्कार का पवित्र उद्देश्य है.'

ये विचार पुरानी पुस्तकों में बंद नहीं हैं, आज सोशल मीडिया पर जम कर प्रचारित व प्रसारित किए जा रहे हैं। हिंदू संस्कृति वर्ण संस्कारिता में समाज एवं राष्ट्र का नियम देखती है... मनु, भृगु, अंगिरा आदि गणों द्वारा गोत्र की सृष्टि हुई थी और गोत्र आधारित विवाह हिंदू जाति के चिरंजीवी होने का प्रधान कारण हैं? जब इस तरह से एक हिंदू को दूसरे हिंदू से विवाह करने पर रोक है तो एक हिंदू को अन्य धर्मी से विवाह करने की छूट कैसे दी जा सकती है?

संविधान का अनुच्छेद 21 इंसान को अपनी इच्छा से जीवन जीने का अधिकार देता है पर जिस तरह के निर्णय अब आ रहे हैं, उन को देखते यह संभव है कि सर्वोच्च न्यायालय लव जिहाद के संबंध में बनाए जाने वाले कानून को सही मान

ले. न्यायालय अगर किसी के केवल उस की अपनी जाति, कुंडली आधारित विवाह को ही मान्य माने, तो बड़ी बात नहीं.

हिंदू विवाह कानून 1955 की धारा 7 में हिंदू विवाह करने के लिए विधियों का जिक्र है और यह कहा गया है कि पारिवारिक रिवाजों के अनुसार किया जाने वाला विवाह ही कानूनसम्मत होगा. सुप्रीम कोर्ट अब तक इस शर्त को उदारता से पढ़ता था पर नई व्यवस्था में वह यह कभी भी कह सकता है कि हर परिवार के पारंपरिक रिवाजों में कुंडली मिलान अनिवार्य है और जो विवाह कुंडली मिला कर नहीं हुआ, वह अवैध है. आज सर्वोच्च न्यायालय क्या न कह दे, इस का अनुमान नहीं लगाया जा सकता.

लव जिहाद को मिली सरकारी मान्यता इस बात का संकेत है कि आम व्यक्ति अब एक बार फिर पोंगापाखंड का गुलाम बनने जा रहा है. ऐसे में उस के व्यक्तिगत सपनों की बात रह जाएगी.

कांग्रेस की दुर्गति

बिहार के विधानसभा चुनाव और मध्य प्रदेश, गुजरात व अन्य प्रदेशों के हालिया उपचुनावों के नतीजों से यह साफ है कि कांग्रेस की समाप्ति का दौर शुरू हो चुका है. हालांकि आज भी कांग्रेस भारतीय जनता पार्टी के बाद सब से बड़ी पार्टी है पर फिर भी इस का संगठन इस कदर कमजोर होता जा रहा है कि राजस्थान,

छत्तीसगढ़, झारखंड, पंजाब में सत्ता होने के बावजूद कांग्रेसी हताश हैं और जनता कांग्रेस में भविष्य नहीं देख रही है.

पर यह कोई बड़ी बात नहीं है. 1971 के चुनावों के बाद कांग्रेस को लगभग श्रद्धांजलि दे दी गई थी. 1989 में भी कुछ ऐसा ही हुआ था. 1996 से 2004 तक कांग्रेस की मौजूदगी पर सवाल उठते रहे थे. आज फिलहाल वही हालत है.

कांग्रेस की यह खासीयत है कि वह न किसी खास धर्म की पार्टी रही है, न जाति की, न क्षेत्र की. उस की यह खासीयत उसे वोट दिलाती रही है तो छीनती भी. उस के वोटरों को जाति, धर्म, क्षेत्र, भाषा आदि नफरती मुद्दों पर भड़का कर उसे कभी छोटे इलाके, कभी पूरे राज्य तो कभी पूरे देश में सत्ता से बाहर किया जाता रहा है. फिर भी लौट कर कांग्रेस इसलिए आती रही है क्योंकि वह पूरे देश में मान्य पार्टी रही है.

लेकिन, अब हालात कुछ और हैं. भारतीय जनता पार्टी में ऐसे लोगों की भरमार हो गई है जो मार्केटिंग जानते हैं और जम कर पैसा भी खर्च कर सकते हैं. भाजपा की नफरती व कट्टर धार्मिक नीतियों के कारण मंदिर, आश्रम, तीर्थयात्रा ग्रुपों के कर्ताधर्ता, पुस्तक प्रकाशक, टीवी चैनल मालिक, ज्योतिषी, दवा निर्माता, बाबा आदि लाखों की संख्या में भगवे झंडे के नीचे जमा हो गए हैं. भाजपा आज लोगों की सोच पर राज

कर रही है, उन के हर रोज के कामकाज पर राज कर रही है.

कांग्रेस की डगमगाती स्थिति के पीछे सोनिया गांधी का बीमार पड़ना और राहुल गांधी का सत्ता में रुचि न लेना भी है. राहुल गांधी एक रिलक्टेंट लीडर हैं. वे नेता बनना नहीं चाहते, उन्हें जबरदस्ती बनाया जा रहा है. कांग्रेस में जो विरोध की आवाजें उठ रही हैं वे उन की हैं जो राहुल से भी ज्यादा निकम्मे हैं, लेकिन बोलने में वे राहुल से तेज हैं और लिखने में परफैक्ट हैं.

वे पकीपकाई खीर चाहते हैं पंडितों की तरह, जो जनजन के घर मुफ्त का खाने जाते हैं और शिकायत करते हैं कि हलवे में चीनी व खाने में मिर्च कम है.

भाजपा सत्ता में क्या सदा के लिए है? जवाब है नहीं. वह रूसी कम्युनिस्ट पार्टी या जर्मनी की नेशनलिस्ट पार्टी की तरह है जो इस तरह के विचारों में बंधी है कि तर्क, तथ्य, सच न देख सकती है, न सुन सकती है. भाजपा के कारण देश की आर्थिक स्थिति बिगड़ रही है. संस्थाएं चकनाचूर हो रही हैं. देश अफ्रीकी देश सा बन रहा है जहां हर समय विवाद खड़े रहते हैं. देशवासियों में एकदम शून्यता सी आ गई है. बहकाई जनता को समझ नहीं आ रहा कि वह क्या करे. पर, कब क्या हो जाए, कहा नहीं जा सकता. पर उस समय तक राहुल और प्रियंका गांधी की जोड़ी कांग्रेस को बनाए रखेगी, यह पक्का नहीं है.

देश को चाहिए तो एक उदार पार्टी जो सरकार चलाए, लोगों का दिल व दिमाग नहीं. कांग्रेस ही यह कर सकती है. पर वह बचे, तब न.

केंद्र की दोहरी नीति

विचारों की स्वतंत्रता के मामले को ले कर भारत सरकार ने फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुअल मैक्रों का मुसलिमबहुल देश तुर्की और पाकिस्तान के वाक्युद्ध में फ्रांस का साथ दिया है, हालांकि, भारत सरकार खुद वैचारिक स्वतंत्रता की समर्थक नहीं. वर्ष 2015 में फ्रांस की शाली हैब्डो पत्रिका द्वारा इसलाम के पैगंबर का कार्टून छापने पर खूनी घटनाएं घटी थीं, उसी सिलसिले में उक्त पत्रिका द्वारा अब फिर पैगंबर का कार्टून प्रकाशित करने पर ताजा विवाद खड़ा हुआ है.

फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुअल मैक्रों ने पत्रिका में पैगंबर का कार्टून छापे जाने को वैचारिक स्वतंत्रता कह कर समर्थन किया है. फ्रांस सरकार कह रही है कि वह हर हालत में वैचारिक स्वतंत्रता की रक्षा करेगी और इसलामिस्टों को मनमानी नहीं करने देगी. तुर्की, पाकिस्तान व कुछ दूसरे मुसलिम देश इस यूरोपीय रुख पर नाराज हैं. उन्होंने आरोप लगाया है कि इसलामी लोगों के विरुद्ध आम जनता को भड़काया जा रहा है. भारत सरकार ने बहुत ही जल्दी में यूरोपीय देशों का समर्थन किया है जो इमैनुअल मैक्रों के समर्थन में खड़े हुए हैं.

लेकिन, मोदी सरकार के इस समर्थन को उस की वैचारिक स्वतंत्रता के प्रति निष्ठा का प्रदर्शन न समझा जाए. यूरोपीय देशों को यह समर्थन इसलिए दिया जा रहा है क्योंकि तुर्की, पाकिस्तान और मलेशिया भारत की कश्मीर नीति के खिलाफ हैं.

वैचारिक स्वतंत्रता के बारे में तो मौजूदा भारत सरकार का खुद का ही रिकॉर्ड अच्छा नहीं है. भारत में अपनी बात कहने वालों को आएदिन सरकार की टेढ़ी आंखें भी देखनी होती हैं और सरकार समर्थक गुंडों के गैंगों की भी. भारत सरकार लगातार कह रही है कि संविधान व विचारों की आजादी का अधिकार अपनेआप में संपूर्ण नहीं है और उस पर सरकार को नियंत्रण लगाने का अधिकार है.

सरकार की दोहरी नीति का आलम यह है कि वह अपने विरोधियों और सत्तारूढ़ पार्टी के धर्म के खिलाफ सच बोलने या लिखने वालों पर कानून की विभिन्न धाराओं के तहत मामला दर्ज करा कर पुलिस के जरिए उन्हें रातोंरात गिरफ्तार करा देती है. चाहे, आखिरकार, सरकार के पक्ष का शिकायतकर्ता हार जाए क्योंकि मामले झूठे जो होते हैं. सो, फ्रांसीसी मामले में भारत सरकार के आंसू घड़ियाली ही हैं.

महिला के चरित्र पर संदेह

एक पति द्वारा पत्नी के चरित्र पर संदेह करने के मामले में गुजरात उच्च न्यायालय के न्यायाधीश विवेक अग्रवाल का यह निर्णय, 'डीएनए टेस्ट पत्नी की दुश्चरित्रता, विश्वसनीयता जांचने का सब से अच्छा तरीका है', एक तरह से पौराणिक विचारों को कानूनों में लाने वाला है. जस्टिस विवेक अग्रवाल भूल रहे हैं कि इस टेस्ट के लिए बलि का बकरा संतान को बनना होगा और अगर वह अपने वैधिक पिता की संतान न निकली तो उस पर हारामी होने का बिल्ला लग जाएगा.

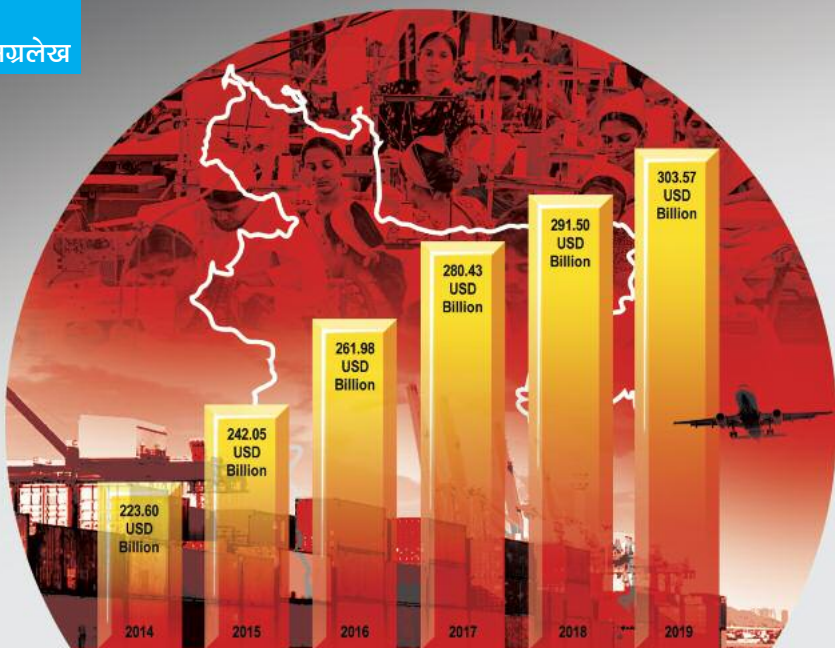
अब तक कानून यह कहता है कि कोई बच्चा अवैध नहीं होता और विवाह के पश्चात पैदा हुए हर बच्चे की नैतिक व आर्थिक जिम्मेदारी मां के साथी की ही है. जस्टिस विवेक अग्रवाल इस में पौराणिक पात्र सत्यकाम का सा बाना संतान को पहना रहे हैं कि उस के माध्यम से मां के चरित्र की पहचान की जाए.

महिलाओं को संपत्ति समझने का विचार हमारे पुराणों की रगरग में बसा है. जरूरत हो, तो नियोग करा लो. पर जरा सा भी संदेह हो, तो पत्नी को पत्थर की शिला बना देना या गर्भवती को निकाल देना आम बात है. धार्मिक गुरु तो चाहते ही हैं कि महिलाएं उन की गुलाम रहें. इस के लिए उन का कारगर तरीका है महिलाओं को कमजोर रखना, डरा व धमका कर रखना.

जस्टिस विवेक अग्रवाल के फैसले के मद्देनजर अब हर पति के पास गुजाराभत्ता न देने का या तलाक मांगते समय एक हथियार रहेगा कि वे बच्चों की पैत्रिकता पर सवाल उठा दें. और तब, बच्चों को अपमानित होने से बचाने के लिए मां हार मान लेगी और यह टेस्ट कराने को तैयार नहीं होगी और पति की शर्तें मानने को मजबूर हो जाएगी.

यह शिखंडी का वार पति चलाएगा जो मां पर लगेगा व बच्चों पर.

भक्तिरस में डूबे इस तरह के अदालती निर्णय कई और जगहों से आने लगे हैं. राममंदिर का निर्माण का निर्णय तो ऐसा है ही. एक उच्च न्यायालय के न्यायाधीश ने तो खुल्लमखुल्ला ब्राह्मणों को अन्य जातियों से जन्मतया श्रेष्ठ मानने की बात कह डाली है. ●



एशिया का नया आर्थिक ताड़गर

बंगलादेश

• नसीम अंसारी कोचर

छोटे व बेहद गरीब कहे व माने जाने वाले बंगलादेश ने 10-15 सालों में अपने से बड़े अपने ही हिस्से पाकिस्तान को ही नहीं, दुनिया के सब से बड़े लोकतंत्र भारत को भी कई मामलों में पीछे कर दिया है. उस ने ऐसी सफलता कैसे हासिल की, जानने के लिए पढ़िए यह खास लेख.

बात लखनऊ की है। वर्ष 2003 की। कुछ पाकिस्तानी छात्रछात्राओं का एक डैलिंगेशन अपने 4 टीचर्स के साथ लखनऊ आया था। माल एवैन्यू स्थित एक इंग्लिश मीडियम स्कूल के बच्चों से भी उन्हें मिलना था। उन के बीच बातचीत और सांस्कृतिक कार्यक्रम का आदानप्रदान होना था। ये पाकिस्तानी बच्चे 9वीं व 10वीं कक्षाओं से थे।

डैलिंगेशन में छात्रों के मुकाबले छात्राओं की संख्या अधिक थी। सभी छात्राएं सिर से पांच तक बुर्को से ढकी बस से उतरतीं। मगर स्कूल के भीतर दाखिल होने के बाद सभी ने अपने बुर्के उतार कर अपनी पीठ पर लटके बैग में डाल लिए, जबकि स्कूल में काफी मर्द अध्यापक, चपरासी और 10वीं व 12वीं के छात्र मौजूद थे। यह बड़ी दकियानूसी और दिखावटी सी बात लगी कि बाहर तो आप शरीर को बुर्के में ढके हैं और अंदर आ कर आप बेपरदा हो गए, जबकि गैरमर्द तो वहां भी बड़ी तादाद में थे।

मजेदार बात यह थी कि अधिकतर पाकिस्तानी लड़कियां बुर्के के नीचे जींस और टीशर्ट पहने हुए थीं। ऐसा लगता था कि आजादी और उड़ने की चाहत को जबरन बुर्के में लपेट दिया गया था। इंग्लिश माध्यम में पढ़ने और इंग्लिश में फरटिदार बातचीत करने के बावजूद बातबात में उभरती इसलाम और रोजेनमाज की बातें भी यह जाहिर कर रही थीं कि आधुनिकता और पिछड़ेपन के बीच काफी रस्साकशी चल रही है। उन में से कइयों ने वहां सब के सामने अपने नृत्य भी प्रस्तुत किए और बौलीवुड अभिनेताओं की मिमिक्री भी की, जो कबीलेतारीफ थी। लेकिन वापस लौटते समय वे सभी फिर बुर्को में सिमट गईं।

उसी साल 2 बंगलादेशी महिलाओं से भी मुलाकात हुई। बिना दुपट्टे के स्लीवलैस कुरतेसलवार, पोनीटेल, कानों में बड़ेबड़े छल्ले और माथे पर बड़ी सी बिंदी चिपकाए दोनों महिलाएं किसी रिसर्चपेपर पर काम करने के दौरान भारत आई थीं। दोनों ही मुसलिम तबके की थीं, मगर उन की बोली, पहनावा और श्रृंगार किसी हिंदू बंगाली महिला से ज्यादा मेल खाता था। वे साइंस और नएनए आविष्कारों पर खूब चर्चा करती थीं। वे बिंदास थीं। किसी भी जकड़न से आजाद। उन के कंधे उन के धर्म को नहीं ढो रहे थे। धर्म उन का निजी मामला था जो आम बातचीत में घुसपैठ नहीं करता था।

इन 2 देशों की महिलाओं को देख कर ही दोनों देशों के आंतरिक हालात, सोच और स्थिति का अंदाजा आसानी से लग जाता है। दोनों ही मुसलिम देश हैं। दोनों ने बंटवारे का दर्द सहा। पाकिस्तान ने एक बार तो बंगलादेश ने 2 बार बंटवारा देखा। बावजूद इस के, आज बंगलादेश तरक्की के मामले में पाकिस्तान से कहीं आगे निकल गया है।

बंगलादेश पाकिस्तान से आगे

वर्ष 1947 में भारतपाक बंटवारे के वक्त पूर्वी पाकिस्तान कहा जाने वाला व आज का बंगलादेश 1971 में पाकिस्तान से अलग होने के बाद भीषण गरीबी व तबाही से ग्रस्त इलाका था। लेकिन धीरेधीरे उस ने अपनी स्थिति सुधारी और अपने पैरों पर खड़ा होने लगा। इस में एक लंबा समय लगा।

2006 तक बंगलादेश की तसवीर से काफी धूल छंट गई और तरक्की की रेस में वह पाकिस्तान को पछाड़ता हुआ आगे निकल गया। दुनिया के मानचित्र में

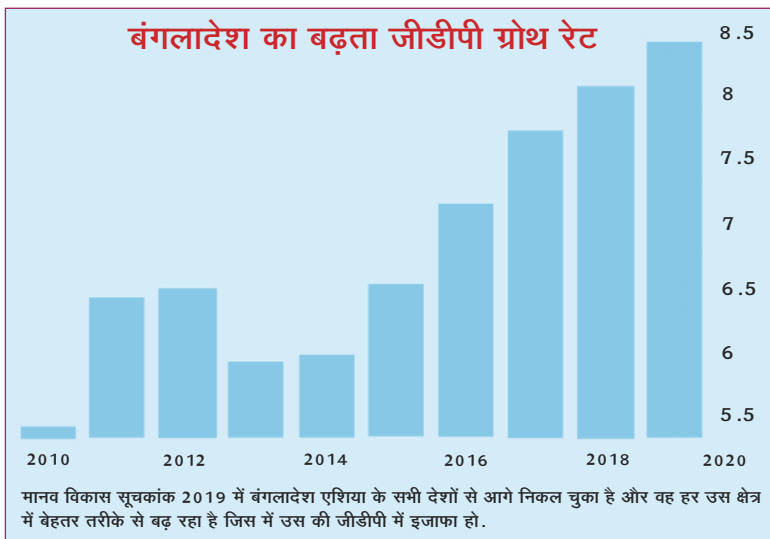
पिद्दी सा दिखने वाला बंगलादेश आज पाकिस्तान ही नहीं, बल्कि कई मानो में भारत को भी पीछे छोड़ चुका है।

मानव विकास सूचकांक 2019 पर बंगलादेश दक्षिण एशिया के सभी देशों से आगे है। वह शांत तरीके से अपनी कायापलट कर रहा है। वह हर उस क्षेत्र में शानदार प्रदर्शन कर रहा है, जिस से उस की जीडीपी में इजाफा हो।

बंगलादेश और पाकिस्तान दोनों ही

बंगलादेश बनने से पहले पूर्वी पाकिस्तान में पाकिस्तानी सेना ने स्थानीय नेताओं और धार्मिक चरमपंथियों की मदद से मानवाधिकारों का खूब हनन किया। 25 मार्च, 1971 को शुरू हुए औपरोशन सर्चलाइट से ले कर पूरे बंगलादेश की आजादी की लड़ाई के दौरान पूर्वी पाकिस्तान में जम कर हिंसा हुई।

बंगलादेश सरकार के मुताबिक, उस दौरान करीब 30 लाख लोग मारे गए।



मुसलिम राष्ट्र हैं। मुसलिम बाहुल्य इलाके होने की वजह से ही बंटवारे के वक्त दोनों इलाके भारत से अलग हुए थे। फिर क्या वजह रही कि बंगलादेश पाकिस्तान से हर मामले में बीस ही बैठता है। जबकि उस ने बंटवारे (1947) के जख्म भी खाए और जब तक वह पाकिस्तान से अलग (1971) नहीं हो गया, पश्चिमी पाकिस्तानियों के उत्पीड़न व प्रताड़नाओं के दौर से गुजरता रहा।

जानमाल की इतनी हानि के बावजूद आज बंगलादेश पाकिस्तान से कहीं आगे निकल चुका है।

बंगलादेश की त्रासदियां

1947 में भारत से अलग हो कर पूर्व और पश्चिम में 2 पाकिस्तान बने। पश्चिमी पाकिस्तान ने हमेशा खुद को अव्वल माना और पूर्वी हिस्से को सत्ता में कभी भी उचित प्रतिनिधित्व नहीं दिया।

वजह थी- भाषा और संस्कृति. पूर्वी पाकिस्तान के मुसलमान बांग्ला बोलते थे. उन का रहनसहन भारत के बंगालियों से मेल खाता था. जबकि, पश्चिमी पाकिस्तान में उर्दू, अरबी, फारसी को ज्यादा महत्व प्राप्त था. वहां के लोग अपने को सच्चा मुसलमान समझते थे.

लिहाजा, पूर्वी पाकिस्तान हमेशा सामाजिक व राजनीतिक रूप से उपेक्षित रहा. इस से पूर्वी पाकिस्तान के लोगों में जबरदस्त नाराजगी रहने लगी और इसी नाराजगी के परिणामस्वरूप उस समय पूर्व पाकिस्तान के नेता शेख मुजीब-उर-रहमान ने अवामी लीग का गठन किया और पाकिस्तान के अंदर ही और स्वायत्तता की मांग की. 1970 में हुए आम चुनाव में पूर्वी क्षेत्र में शेख की पार्टी ने जबरदस्त विजय हासिल की. उन के दल ने संसद में बहुमत भी हासिल किया. लेकिन बजाय उन्हें पूरे पाकिस्तान का प्रधानमंत्री बनाने के, जेल में डाल दिया गया और वहीं से पाकिस्तान के विभाजन की नींव पड़ गई.

1971 में पाकिस्तान के राष्ट्रपति जनरल याहिया खान ने पूर्वी हिस्से में फैली नाराजगी को दूर करने के लिए जनरल टिक्का खान को जिम्मेदारी दी. लेकिन टिक्का खान ने बातचीत के बदले दबाव से स्थिति सुधारने की कोशिश की और नतीजा यह हुआ कि मामला हाथ से निकल गया. 25 मार्च, 1971 को पाकिस्तान के इस हिस्से में सेना एवं पुलिस की अगुआई में जबरदस्त नरसंहार हुआ. इस से पाकिस्तानी सेना में काम कर रहे पूर्वी क्षेत्र के निवासियों में जबरदस्त रोष पैदा हुआ और उन्होंने अलग मुक्ति वाहिनी बना ली.

पाकिस्तानी फौज का निरपराध, हथियारविहीन लोगों पर अत्याचार जारी

रहा. जिस से लोगों का पलायन भारत की तरफ होने लगा. इस को देखते हुए भारत ने भी अंतर्राष्ट्रीय समुदाय से अपील की कि पूर्वी पाकिस्तान की स्थिति सुधारी जाए. लेकिन किसी देश ने ध्यान नहीं दिया और जब वहां के विस्थापित लगातार भारत आते रहे तो अप्रैल 1971 में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने मुक्ति वाहिनी को समर्थन दे कर बंगलादेश की आजादी में महत्वपूर्ण रोल अदा किया.

पश्चिम पाकिस्तान की तत्कालीन सरकार के अन्याय के विरुद्ध 1971 में भारत के सहयोग से एक रक्तरेजित युद्ध



मुसलिम देश होने के बावजूद बंगलादेश मानव विकास सूचकांक में भारत व पाकिस्तान से आगे है.

के बाद स्वाधीन राष्ट्र बंगलादेश का उद्भव हुआ. स्वाधीनता के बाद बंगलादेश के प्रारंभिक वर्ष राजनीतिक अस्थिरता से परिपूर्ण थे. देश में 13 राष्ट्रशासक बदले गए और 4 सैन्य बगावतें हुईं.

1971 में पाकिस्तान से आजादी की लड़ाई के बाद बंगलादेश ने कई त्रासदियों को झेला. भयावह गरीबी देखी, गंगाबहापुत्र के मुहाने पर स्थित इस देश में प्रतिवर्ष मौसमी उत्पात और

चक्रवात आम हैं. दुनिया के सब से बड़े शरणार्थी संकट से भी बंगलादेश जूझ रहा है. 7 लाख 50 हजार रोहिंग्या मुसलमान पड़ोसी म्यांमार से अपना घरबार छोड़ बंगलादेश में आ बसे हैं. बावजूद इस के, धार्मिक कट्टरता को हाशिए पर धकेल कर आज बंगलादेश हर दिशा में शानदार प्रदर्शन कर रहा है.

बंगलादेश अपनी आर्थिक सफलता की नई इबारत लिख रहा है. वहीं पाकिस्तान धार्मिक कट्टरता के कारण गर्त में जा रहा है. आतंकवाद, बम धमाके, गोलीबारी, हत्याकांड, अपहरण की खबरें पाकिस्तान की हकीकत बयां करती हैं. वह कभी चीन की जीहुजूरी में लगा रहता है, कभी अमेरिका के सामने खड़ा कांपता है. आज पाकिस्तान जहां अपनी दकियानूसी कठमुल्ला प्रवृत्ति के कारण आतंकवाद, पिछड़ेपन, गरीबी और तबाही की गर्त में जा रहा है, वहीं बंगलादेश ने वैज्ञानिक तरीकों को अपना कर अपनी तरक्की का मार्ग प्रशस्त किया.

त्रासदियों से उबरता बंगलादेश

भारतपाकिस्तान बंटवारे के बाद पूर्वी पाकिस्तान यानी बंगलादेश ने तत्कालीन पश्चिमी पाकिस्तान के कारण बड़ी त्रासदी झेली. बंटवारे में पूर्व और पश्चिम मुसलिम बाहुल्य इलाके पाकिस्तान तो घोषित किए गए, लेकिन दोनों इलाकों के मुसलमानों में काफी फर्क था. पूर्वी पाकिस्तान, जिसे आज बंगलादेश कहते हैं, और पश्चिमी पाकिस्तान के मुसलमानों में ये फर्क जातिगत, रहनसहन, खानपान और भाषा के थे. पाकिस्तान के गठन के समय पश्चिमी क्षेत्र में सिंधी पठान, बलोच और मुजाहिदों की बड़ी संख्या थी, जिसे पश्चिम पाकिस्तान कहा जाता था, जबकि पूर्व वाले

हिस्से में बंगाली बोलने वालों का बहुमत था, जिसे पूर्व पाकिस्तान कहा जाता था.

बांग्लाभाषी मुसलमानों का रहनसहन, खानपान और बोली पश्चिमी पाकिस्तानी लोगों से भिन्न थे. इस मामले में वे पश्चिम बंगाल के रहवासियों के ज्यादा करीब थे. बंगालियों का माछभात प्रिय भोजन था और उन की औरतें बंगाली औरतों की तरह साड़ी पहनने व श्रृंगार करने की शौकीन थीं. बुर्के का चलन है मगर उस तरह नहीं जैसा कि पाकिस्तान में है. अधिकतर महिलाएं बिना बुर्के के रहने में सहूलियत समझती हैं. पूर्व पाकिस्तान यानी बांग्लादेश के लोगों में न तो धार्मिक कट्टरता है और न उन्होंने कभी अपनी औरतों को उस तरह चारदीवारी में कैद रखा जैसा कि पाकिस्तान का आम रवैया है.

बंगलादेश में राजनीतिक चेतना की भी कमी नहीं थी. वहां औरतों का भी राजनीति की तरफ खासा रुझान था. खालिदा जिया, शेख हसीना जैसी नेत्रियां बंगलादेश का प्रतिनिधित्व लंबे समय से करती आ रही हैं.

1971 में आजादी हासिल करने के बाद से बंगलादेशी महिलाओं ने महत्वपूर्ण प्रगति की है. तस्लीमा नसरीन जैसी नामी लेखिका इसी मिट्टी में जन्मी हैं जिन्होंने पुरुषों द्वारा औरतों के लिए रची हर जंजीर को तोड़ने का हौसला दिखाया है. पिछले 4 दशकों में वहां महिलाओं के लिए राजनीतिक सशक्तीकरण में वृद्धि हुई है, बेहतर नौकरी की संभावनाएं, शिक्षा के अवसर बढ़े हैं और उन के अधिकारों की रक्षा के लिए नए कानूनों को अपनाया गया है.

2018 तक बंगलादेश की प्रधानमंत्री, संसद के अध्यक्ष, विपक्ष के नेता महिलाएं थीं. ये तमाम बातें दर्शाती हैं कि

बंगलादेश पाकिस्तान की तरह संकुचित दिलदिमाग वाला रूढ़िवादी, कट्टरपंथी कठमुल्लों का राष्ट्र नहीं है, बल्कि आधुनिक और वैज्ञानिक सोच रखने वाला देश है जो लकीर का फकीर न हो कर समय की गति के साथ कदम मिला कर आगे बढ़ रहा है.

आर्थिक संपन्नता

पाकिस्तान बंगलादेश से क्षेत्रफल में पांचगुना बड़ा है. लेकिन विदेशी मुद्रा उस के पास बंगलादेश के मुकाबले लगभग पांचगुना ही कम है. पाकिस्तान का विदेशी मुद्रा भंडार 8 अरब डॉलर है जबकि बंगलादेश का विदेशी मुद्रा भंडार लगभग 35 अरब डॉलर है.

बंगलादेश की वृद्धिदर 8 फीसदी है जबकि पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था 5 और 6 फीसदी के बीच जूझ रही है. कोरोनाकाल के आगमन से पहले भारत की अर्थव्यवस्था की वृद्धिदर भी घट कर 4 फीसदी रह गई थी.

बंगलादेश में प्रतिव्यक्ति कर्ज 434 डॉलर है जबकि पाकिस्तान में प्रतिव्यक्ति 974 डॉलर है.

एक और हैरान करने वाली बात है कि 1951 की जनगणना के अनुसार पूर्वी पाकिस्तान यानी आज के बंगलादेश की आबादी 4.2 करोड़ थी और पश्चिमी पाकिस्तान की आबादी 3.37 करोड़ थी, वहीं आज बंगलादेश की आबादी 16.5 करोड़ है जबकि पाकिस्तान की आबादी 20 करोड़ है. यानी, बंगलादेश ने कुछ हद तक परिवार नियोजन के महत्त्व को समझा और अपनाया. उस ने अपनी आबादी को नियंत्रित किया है जो पाकिस्तान और भारत नहीं कर पाए. पाकिस्तान में तो परिवार नियोजन इस्लाम के विरुद्ध माना जाता है.

वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम के अनुसार तो बंगलादेश की 120 से ज्यादा कंपनियां आज एक अरब डॉलर से ज्यादा की सूचना और प्रौद्योगिकी तकनीक दुनिया के 35 देशों में निर्यात कर रही है. बंगलादेश ने आर्थिक प्रगति के उन हिस्सों में भी मजबूती से दस्तक देना शुरू कर दिया है जहां भारत का दबदबा रहा है. औक्सफोर्ड इंटरनेट इंस्टिट्यूट के अनुसार, बंगलादेश दुनिया में दूसरा सब से बड़ा देश है जहां ऑनलाइन वर्कर सब से ज्यादा हैं.



बंगलादेशी मुसलमानों का रहनसहन, बोली और खानपान पाकिस्तानी मुसलमानों से भिन्न है और भारतीय बंगाली समाज से मिलताजुलता है.

दक्षिण एशिया में भारत की बादशाहत को बंगलादेश चुनौती दे रहा है. हाल के एक दशक में बंगलादेश की अर्थव्यवस्था औसत 6 फीसदी की वार्षिक दर से आगे बढ़ी है. बंगलादेश की आबादी 1.1 फीसदी दर से प्रतिवर्ष बढ़ रही है जबकि पाकिस्तान की 2 फीसदी की दर से बढ़ रही है. इस का मतलब यह भी है कि पाकिस्तान की तुलना में बंगलादेश में प्रतिव्यक्ति आय भी तेजी से बढ़ रही है. साल 2018 के जून महीने में यह वृद्धिदर 7.86 फीसदी तक पहुंच गई थी.

1974 में भयानक अकाल के बाद 16.6 करोड़ से ज्यादा की आबादी वाला बंगलादेश खाद्य उत्पादन के मामले में आज आत्मनिर्भर बन चुका है। बंगलादेश में बड़ी संख्या में लोग गरीबी में जीवनबसर कर रहे हैं लेकिन विश्व बैंक के आंकड़ों के अनुसार, प्रतिदिन 1.25 डॉलर में अपना जीवन चलाने वाले कुल 19 फीसदी लोग थे जो अब 9 फीसदी ही रह गए हैं।

विश्व बैंक के आंकड़ों के अनुसार, 2017 में बंगलादेश में जिन लोगों का बैंक खाता है उन में से 34.1 फीसदी लोगों ने डिजिटल लेनदेन किया जो दक्षिण एशिया में औसत 27.8 फीसदी ही है। भारत में ऐसे लोगों की तादाद 48 फीसदी है जिन के पास बैंक खाता तो है लेकिन उस से कोई लेनदेन नहीं करते। ऐसे खातों को डौर्मट अकाउंट (निष्क्रिय खाता) कहा जाता है। दूसरी तरफ बंगलादेश में ऐसे सिर्फ 10.4 फीसदी लोग ही हैं। यही वजहें हैं कि बंगलादेश को आज दक्षिण एशिया का नया टाइगर कह कर पुकारा जा रहा है।

कपड़ा एक्सपोर्ट

यों तो ज्यादातर मोरचों पर बंगलादेश प्रदर्शन के मामले में अपने सरकारी लक्ष्यों से आगे निकल चुका है, मगर मैन्युफैक्चरिंग सैक्टर पर वह सब से ज्यादा ध्यान दे रहा है। कपड़ा उद्योग में बंगलादेश का प्रभुत्व दुनियाभर में बढ़ रहा है। इस मामले में बंगलादेश चीन के बाद दूसरे नंबर पर है। भारत के कपड़ा एक्सपोर्ट पर भी आज बंगलादेश छा गया है।

बंगलादेश में बनने वाले कपड़ों का निर्यात सालाना 15 से 17 फीसदी की दर से आगे बढ़ रहा है। 2018 में जून महीने तक कपड़ों का निर्यात 36.7 अरब डॉलर

तक था। 2019 के लिए यह लक्ष्य 39 अरब डॉलर का रखा गया था और माना जा रहा था कि 2021 में बंगलादेश जब अपनी 50वीं वर्षगांठ मनाएगा तो यह आंकड़ा 50 अरब डॉलर तक पहुंच जाएगा। हालांकि, कोरोना वायरस ने इस उम्मीद को पूरा होने में थोड़ी रुकावट जरूर डाल दी है।

बंगलादेश की आर्थिक सफलता में रेडिमेड कपड़ा उद्योग की सब से बड़ी भूमिका मानी जाती है। कपड़ा उद्योग ही बंगलादेश के लोगों को सब से ज्यादा रोजगार भी मुहैया कराता है। कपड़ा उद्योग से बंगलादेश में 40.5 लाख लोगों को रोजगार मिला हुआ है। बंगलादेश में कपड़ों की सिलाई का काम व्यापक पैमाने पर होता है और इस में बड़ी संख्या में महिलाएं शामिल हैं। 2013 के बाद से वहां औटोमेटेड मशीनों का इस्तेमाल हो रहा है। कपड़ा फैक्ट्रियों को अपग्रेड किया गया है और उन में काम करने वाले कामगारों की स्थिति में बेहतरी के लिए कई कदम सरकार ने उठाए हैं। 2009 से बंगलादेश में प्रतिव्यक्ति आय तीनगुनी हो गई है।

अमेरिका और चीन के बीच छिड़े ट्रेड वार में बंगलादेश की टैक्सटाइल इंडस्ट्री को काफी उम्मीद है। बंगलादेश को लगता है कि अगर चीन का कपड़ा निर्यात कम हुआ तो वह इस की भरपाई की क्षमता रखता है। हालांकि, इस का फायदा वियतनाम, तुर्की, म्यांमार और इथोपिया को भी मिल सकता है। भारत फिसडूडी ही रहेगा।

बढ़ते उद्योगधंधे व टैक्नोलौजी

बंगलादेश की सरकार देशभर में 100 विशेष आर्थिक क्षेत्रों का नैटवर्क तैयार करना चाहती है। इन में से 11 बन कर तैयार हो गए हैं और 79 पर काम चल

रहा है. चीन कई मोरचों पर बंगलादेश को 'वन बैल्ट वन रोड' परियोजना के तहत मदद कर रहा है. चीन बंगलादेश के कई बड़े प्रोजेक्टों में आर्थिक मदद भी मुहैया करा रहा है. 2018 में चीन ने बंगलादेश के ढाका स्टोक एक्सचेंज का 25 फीसदी हिस्सा खरीद लिया था. इसे खरीदने की कोशिश भारत ने भी की थी कि लेकिन चीन ने इस की ज्यादा कीमत चुकाई और भारत के हाथ से यह सौदा निकल गया.

बंगलादेश पाकिस्तान के बाद चीन से सैन्य हथियार खरीदने वाला दुनिया का दूसरा सब से बड़ा देश है.

धर्म और बंगलादेश

बंगलादेश ने कभी भी धर्म को अपनी उन्नति में बाधक नहीं बनने दिया. कठमुल्लों और उन की सड़ीबुसी बातों को कभी तक्जुह नहीं दी गई. बंगलादेश ने महिलाओं की शिक्षा, गर्भनिरोध के प्रचार, व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा के साथ माध्यमिक और उच्च शिक्षा पर अधिक जोर दिया है. डिजिटल व्यवस्था की ओर उस के कदम तेजी से आगे बढ़ रहे हैं.

उल्लेखनीय है कि वर्ष 2009 में शेख हसीना ने डिजिटल बंगलादेश लॉन्च किया था ताकि टैक्नोलौजी को बढ़ावा दिया जा सके. शेख हसीना ने अपने कार्यकाल में डिजिटल व्यवस्था को



शेख हसीना

काफी दुरुस्त किया है. इस के लिए अमेरिका में पढ़े शेख हसीना के बेटे सजीब अहमद की भूमिका को काफी अहमियत दी जाती है. उन के प्रयासों से बंगलादेश

में सूचना टैक्नोलौजी का काफी विस्तार हुआ और देशभर में इस से जुड़े 12 हाईटैक पार्क बनाए गए.

बंगलादेश आज आईटी सेक्टर में भारत से मुकाबला कर रहा है. सॉफ्टवेयर कंपनी टैक्नो हैवन और बंगलादेश एसोसिएशन ऑफ सॉफ्टवेयर एंड इंफॉर्मेशन सर्विसेस के सह संस्थापक हबीबुल्लाह करीम के मुताबिक, 'बंगलादेश में बीते साल 30 जून तक आईटी सर्विसेस और सॉफ्टवेयर का निर्यात 80 करोड़ डॉलर तक पहुंच गया. सरकार ने 2021 तक इस का लक्ष्य 5 अरब डॉलर रखा है जो कि काफी चुनौतीपूर्ण है. बंगलादेश में आईटी सेक्टर में कई काम हुए हैं. अब यहां एयरलाइन, होटल बुकिंग और इंश्योरेंस क्लेम सबकुछ ऑनलाइन हो रहा है.'

दुनियाभर में जेनरिक दवाइयों के निर्माण में भारत का नाम है, लेकिन बंगलादेश इस क्षेत्र में चुनौती दे रहा है. अल्पविकसित देश का दर्जा होने के कारण बंगलादेश को पेटेंट के नियमों से छूट मिली हुई है. इस छूट के कारण बंगलादेश जेनरिक दवाइयों के निर्माण में भारत को चुनौती रहा है. बंगलादेश जेनरिक दवाइयों के निर्माण में दूसरा सब से बड़ा देश बन गया है और 60 देशों में इन दवाइयों का निर्यात कर रहा है.

बाल मृत्युदर, लैंगिक समानता और औसत उम्र के मामले में बंगलादेश भारत को पीछे छोड़ चुका है. बंगलादेश में एक व्यक्ति की औसत उम्र 72 साल हो गई है जो कि भारत के 68 साल और पाकिस्तान के 66 साल से ज्यादा है.

बंगलादेश में महिलाओं का सशक्तीकरण तेजी से हो रहा है. कपड़ा उद्योग में पुरुषों के मुकाबले महिलाओं

की संख्या अधिक है. बंगलादेश की अर्थव्यवस्था में महिलाओं का विशेष योगदान है.

अर्थव्यवस्था को दुरुस्त करने में विदेशों में काम करने वाले करीब 25 लाख बंगलादेशियों की भी बड़ी भूमिका है. ये विदेशों से जो पैसे कमा कर भेजते हैं उन में सालाना 18 फीसदी की बढ़ोतरी हो रही है. 2018 में यह 15 अरब डॉलर तक पहुंच गया था.

ऐसे में आप दूसरों की दया पर ज्यादा निर्भर करते हैं. एक बार जब आप उस श्रेणी से बाहर निकल जाते हैं तो किसी की दया पर नहीं, बल्कि अपनी क्षमता के दम पर आगे बढ़ते हैं.

बंगलादेश भारत के लिए एक बड़ी मानसिक चुनौती बन रहा है. जिन बंगलादेशियों को भारत में भूखेनंगे कह कर अपमानित किया जाता है और उन पर घुसपैठिए होने का आरोप लगता था, वे



कपड़ा उद्योग में बंगलादेश का प्रभुत्व दुनियाभर में बढ़ रहा है. इस मामले में वह चीन के बाद दूसरे नंबर पर है.

बंगलादेश के लिए वह पल काफी निर्णायक रहा जब संयुक्त राष्ट्र ने बंगलादेश को अल्पविकसित देश की श्रेणी से निकाल 2024 में विकासशील देशों की पंक्ति में खड़ा करने की बात कही. अल्पविकसित श्रेणी से बाहर निकलना बंगलादेश के आत्मविश्वास और उम्मीदों की मजबूती के लिए बहुत खास है. अगर आप निचले दर्जे में रहते हैं तो प्रोजैक्ट और प्रोग्राम पर बातचीत भी उन्हीं की शर्तों के हिसाब से होती है.

अब फख्र से सिर उठा कर चलेंगे. बंगलादेश से भाग कर आने वाले तो कम हो ही जाएंगे. उलटे, भारतीय बंगाली अपने को, बंगलादेशी कह कर बंगलादेश में काम ढूँढ़ने व घुसने लगें, तो बड़ी बात न होगी. भारत की आंतरिक स्थिति बेहद नाजुक है जबकि बंगलादेश उस से गुजर चुका है. नागरिकता संशोधन कानून जैसे कानून अब भारत के लिए बेमाने हो गए हैं क्योंकि इन के सहारे भारतीयों को बंगलादेश में जाने का मौका मिलेगा. ●

दिल्ली
प्रेस

गृहशोभा

सचेत, सक्षम, सफल, स्मार्ट

फैशन, ब्यूटी के
पलपल बदलते
ट्रेंड से अपडेट
कर दिखाए
आप को हरपल
खूबसूरत

पाक्षिक
पत्रिका

सब्सक्रिप्शन के लिए टोलफ्री नंबर 1800 103 8880 पर संपर्क करें
या <http://www.delhipress.in/subscribe> देखें.



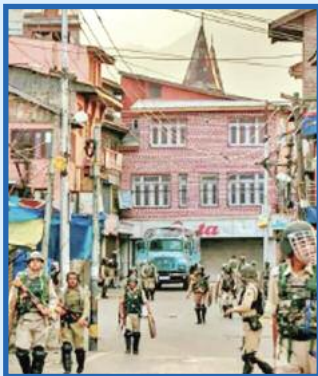


मुद्दा



कश्मीर में बंदिशभरा माहौल

संविधान के अनुच्छेद 370 और 35 ए खत्म हो जाने के बाद भी कश्मीर के हालात में कोई खास बदलाव नहीं आया है. यह कहा गया था कि कश्मीर से अनुच्छेद 370 खत्म होने के बाद विकास की गति बढ़ जाएगी. पर एक साल के बाद भी एक कदम नहीं बढ़ पाए हैं.



लखनऊ में रहने वाली रेशमा का मायका श्रीनगर में है. रेशमा हर साल ईद के मौके पर अपने मायके जरूर जाती थी. इस बार की ईद तालाबंदी में गुजरी. अक्टूबर माह से वह अपने मायके में हैं.

रेशमा कहती है, 'श्रीनगर पहुंचने के बाद हमें समझ नहीं आ रहा था कि अपने घर कैसे जाएं? कश्मीर में सड़कें सूनी थीं. यातायात के साधन बेहद कम थे. घर से लेने आई कार से हम चले तो रास्ते पूरी तरह से वीरान नजर आ रहे थे. पता चला

कि बिना प्रशासन की इजाजत के बाहर निकलना मना है.

'कश्मीर की जिन वादियों में अद्भुत नजारा रहता था, वह सूना पड़ा था. कई जगह हमें चेकिंग का सामना करना पड़ा. हमें लग रहा था, जैसे हम अपने वतन में नहीं, गैरमुल्क में आए हैं.

'घर पहुंचे तो वहां भी आसपास के माहौल में सन्नाटा पसरा हुआ था. घर के अंदर बैठे लोगों तक में खामोशी थी. ऐसा लग रहा था, जैसे हम बंदिशभरे माहौल में हों.

‘बात केवल बाहर से यहां आने वाले लोगों के लिए ही नहीं है, कश्मीर में एक जिले में दूसरे जिले जाने वाले स्थानीय लोगों को भी दिक्कत हो रही है.’

कश्मीर के श्रीनगर में ही सुरक्षा व्यवस्था में तैनात मैदानी इलाके में रहने वाले एक अधिकारी बताते हैं, ‘यहां फोन की सुविधाएं बहाल हो गई हैं. पर इंटरनेट की स्पीड 2जी है. ब्रौडबैंड के नेट सर्विस में दिक्कत नहीं है. अनुच्छेद 370 के हटने के बाद माहौल को नॉर्मल करने के लिए सरकार ने जब कदम उठाए तो दहशत फैलाने वाली घटनाएं बढ़ने लगीं. ऐसे लोगों के पास हथियार भले नहीं हैं, पर वे किसी न किसी तरीके से दहशत फैलाने का काम करने लगे हैं.

‘युवाओं को रोजगार देने का काम करना जरूरी है. पत्थर मारने की घटनाओं



कश्मीर की गलियों में आज भी खोफ फैला हुआ है. जब तक खौफ खत्म नहीं होगा, कश्मीर में अमन कायम नहीं हो सकता.

में कमी आई है. पंचायत चुनाव होने के समय कुछ दहशतगर्दी वाली घटनाएं बढ़ सकती हैं. चुनाव के बाद स्थानीय स्तर पर बदलाव होने की संभावना व्यक्त की जा रही है.’

असल में जम्मूकश्मीर में पुलिस के खिलाफ भ्रष्टाचार के ज्यादा आरोप लगते रहे हैं. इस वजह से स्थानीय पुलिस से

जुड़े अपराध भी अधिक होते हैं. जम्मूकश्मीर के बडगाम जिले में जम्मूकश्मीर पुलिस के जवान मोहम्मद अशरफ का शव मिला. इस को अशरफ आंतकियों ने मारा. ऐसी घटनाएं अब बढ़ने लगी हैं.

सोनिया गुलाटी सितंबर और अक्टूबर माह में 10-10 दिन के लिए 2 बार कश्मीर ग्रुप टूर ले कर गई थीं. वे बताती हैं कि यहां आने वाले पर्यटकों के लिए कोई दिक्कत नहीं होती है. स्थानीय लोग पर्यटकों का खासा खयाल रखते हैं. पर्यटकों के कम आने से यहां के लोगों के सामने बेरोजगारी बढ़ती जा रही है.

15 माह से अधिक का समय हो चुका है. सुंदर कश्मीर के हालात जस के तस हैं. जम्मूकश्मीर के बहुत से इलाकों में अभी भी धारा 144 लागू है. वहां कर्फ्यू जैसे हालात हैं. नेताओं की नजरबंदी हटने के बाद भी कश्मीर की फिजाओं में बेचैनी है. माहौल शांत नहीं है.

बेहद सुंदर माना जाने वाला कश्मीर आज भी वीरान पड़ा है. डल झील में पड़े शिकारे कबाड़ हो रहे हैं. स्थानीय लोग घबराए हुए हैं. जो लोग अपने परिवार से दूर हैं, उन को घरपरिवार की चिंता है. सोशल मीडिया ही अकेला माध्यम रह गया है, जहां

पर लोगों के विचार दुनिया के सामने आ सकते हैं. यहां भी पूरी आजादी नहीं है. शब्दों का चयन बहुत ही चुनचुन कर करना पड़ता है.

संविधान बदल देने से दिल नहीं बदले हैं. कश्मीर के नेताओं ने एक मंच बना कर अनुच्छेद 370 की बहाली की मांग उठा दी है. वे अपनी लड़ाई भाजपा के खिलाफ बता



पर्यटन का रोजगार एकदम ठप होने से कश्मीर की झीलों में सूनापन है। पर्यटकों को झीलों की शेर कराने वाली नावें और शिकारे पानी में सड़ रहे हैं।

रहे हैं, जिस से उन पर देश के विरोध का ठप्पा न लग सके।

कश्मीर से बाहर रह रहे लोग विस्थापित कश्मीरी पंडितों के सच को भी जानना चाहते हैं। पर कहीं से भी पूरी बात सामने नहीं आ रही। ऐसे में कश्मीर की लड़ाई में मैदानी लोगों को जोड़ना आसान काम नहीं है, भाजपा कश्मीरी नेताओं के विरोध को। देश के खिलाफ बता कर मैदानी इलाकों में रहने वाले हिंदू कट्टरवादियों को सीना फुलाने का मौका दे रही है, जिस से कश्मीर की लड़ाई के सहारे वोटों को धार्मिक ध्रुवीकरण में बदला जा सके।

साल 1990 के बाद कश्मीरी पंडितों के पलायन और वहां आतंकवाद के फैलते पंजे के चलते कश्मीर राज्य के स्पेशल स्टेटस पर सवाल उठने लगे। अनुच्छेद 370 का पुरजोर विरोध शुरू होने लगा।

5 अगस्त, 2019 को केंद्र सरकार ने कश्मीर से अनुच्छेद 370 और 35ए को खत्म कर दिया। इस के साथ ही 31 अक्टूबर, 2019 को जम्मूकश्मीर के पुनर्गठन ऐक्ट को मंजूरी दे दी।

भाजपा सरकार ने कश्मीर में हालात बदलने के जितने भी प्रयास किए, वे जस के तस रहे। अनुच्छेद 370 के पहले और बाद के हालात में किसी भी तरह का कोई बदलाव नहीं आया है। कश्मीर में अमनचैन, आजादी और विकास सपने की तरह ही रह गया।

कश्मीर को दूर से देखने वाले हिंदू कट्टरवादी लोगों के लिए अनुच्छेद 370 हटने के बाद सीना फुलाने वाला माहौल भले ही बना हो, पर संविधान बदलने से माहौल नहीं बदला और सरकार का रवैया।

कश्मीर में अनुच्छेद 370 हटाने के समय सब से बड़ा सब्जबाग यह दिखाया गया कि अब वहां सस्ती जमीन मिलेगी। बड़े स्तर पर वहां उद्योगपति निवेश करेंगे, जिस से साल 2025 तक कश्मीर स्वर्ग बन जाएगा। लेकिन धारा 370 हटने के एक साल बाद भी बदलाव की कोई शुरुआत होती नहीं दिखी है। केंद्र सरकार ने कश्मीर में इनवैस्टर मीट कराने की योजना बनाई थी। अनुच्छेद 370 हटाने के बाद अगर कश्मीर में अमनचैन बहाल हो गया होता, तो वहां के स्थानीय नेताओं को केंद्र सरकार के विरोध का मौका नहीं मिलता।

मुसीबत खड़ी करेगा नया मोरचा

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का जम्मूकश्मीर से अनुच्छेद 370 को खत्म करने का फैसला वैसा ही था, जैसे कालाधन लाने

के लिए नोटबंदी और कोरोना पर काबू करने के लिए तालाबंदी का. 1 साल से अधिक का समय बीत जाने के बाद भी कश्मीर में न तो डर का माहौल खत्म हुआ है और न ही अमनचैन बहाल हो पाया है.

इस दौरान कश्मीर में बेरोजगारों की तादाद में तेजी से इजाफा हुआ है. यहां का टूरिज्म और व्यापार पूरी तरह बंद हो चुका है. बड़ी तादाद में लोगों के सामने भुखमरी के हालात बन गए हैं. युवाओं को अपना भविष्य अंधेरे में नजर आने लगा है. विपक्षी स्थानीय नेताओं को अब मौका मिलने लगा है.

डाक्टर फारूक अब्दुल्ला, उमर अब्दुल्ला, महबूबा मुफ्ती और तमाम दूसरे नेताओं को जब 10-11 माह के बाद रिहा किया गया, तो वे आपसी दूरियां भूल कर एक मंच पर खड़े हो कर अनुच्छेद 370 को पहले की तरह बहाल करने की मांग करने लगे हैं. इस के लिए पीपुल्स अलायंस फौर गुपकार डिक्लेरेशन यानी पीएजीडी बना लिया गया है. नेशनल कौन्सिल के नेता फारूक अब्दुल्ला को अध्यक्ष, पीडीपी नेता महबूबा मुफ्ती को उपप्रमुख, सीपीएम नेता मोहम्मद यूसुफ तारिगामी को समन्वयक, पीपुल्स कौन्सिल के सज्जाद गनी लोन को प्रवक्ता पद दिए गए हैं.

पीपुल्स अलायंस फौर गुपकार डिक्लेरेशन यानी पीएजीडी का झंडा पहले के जम्मूकश्मीर का झंडा होगा. संगठन जल्द ही अनुच्छेद 370 हटने के बाद एक साल के हालात पर एक श्वेतपत्र जारी करेगा.

केंद्रीय मंत्री और भाजपा के वरिष्ठ नेता रविशंकर प्रसाद ने कहा, “श्वेतपत्र एक साल का नहीं, बल्कि आजादी के बाद से अनुच्छेद 370 के पहले और बाद का

तुलनात्मक अध्ययन करते हुए जारी होना चाहिए. भारत के झंडे के अपमान और कश्मीरी पंडितों के पलायन व अत्याचार के हालात देश के सामने आने चाहिए.”

हिंदुत्व के प्रति नरम होते फारूक

कश्मीर की लड़ाई में कश्मीर के बाहर रहने वालों को भी साथ लेना होगा. फारूक अब्दुल्ला को यह बात समझ आ रही है. यही कारण है कि पीपुल्स अलायंस फौर गुपकार डिक्लेरेशन का गठन करने के बाद फारूक अब्दुल्ला जम्मूकश्मीर के डलगोट इलाके में 700 साल पुराने बने दुर्गा नाग मंदिर में दर्शन करने गए. यही नहीं, फारूक अब्दुल्ला ने विस्थापित कश्मीरी पंडितों से वापस कश्मीर लौटने की अपील की.

फारूक अब्दुल्ला को यह पता है कि कश्मीर की लड़ाई में जब तक कश्मीर से बाहर के लोग शामिल नहीं होंगे, तब तक यह लड़ाई आसान नहीं होगी. इसी वजह से वे पीपुल्स अलायंस फौर गुपकार डिक्लेरेशन के गठन को भाजपा का विरोधी बताते हैं, देश का नहीं.

भाजपा ‘पीपुल्स अलायंस फौर गुपकार डिक्लेरेशन’ को देश विरोधी कह कर प्रचार कर रही है. इस का जवाब देते हुए फारूक अब्दुल्ला कहते हैं, ‘अनुच्छेद 370 को समाप्त कर जम्मूकश्मीर को 2 केंद्रशासित प्रदेशों में बांट कर भाजपा ने संघीय ढांचे को तोड़ा है. देश के संविधान को दरकिनार कर के समाज को बांटने का काम किया है. हमारी केवल इतनी मांग है कि जम्मूकश्मीर और लद्दाख के लोगों के अधिकारों को बहाल किया जाए. यह कोई धार्मिक लड़ाई नहीं है. यह हमारी पहचान की लड़ाई है. इसी पहचान के बलबूते ही एक मंच पर तमाम लोग आए हैं.’

यह नहीं भूलना चाहिए कि देश के सारे राज्य भाषा या जातीय पहचान पर बंटे हैं प्रशासनिक या ऐतिहासिक दृष्टि से नहीं।

केंद्र के निशाने पर फारूक

जवाब में केंद्र सरकार ने कश्मीर के नेता फारूक अब्दुल्ला पर शिकंजा कसना शुरू कर दिया। केंद्र सरकार ने उन के पीछे ऐनफोर्समेंट डायरेक्ट्रेट यानी ईडी को लगा दिया। फारूक अब्दुल्ला पर एक पुराना मामला है।

फारूक अब्दुल्ला जम्मूकश्मीर क्रिकेट

सिलसिले में ईडी फारूक अब्दुल्ला से पूछताछ कर चुका है।

सवाल उठता है कि अगर फारूक अब्दुल्ला के खिलाफ जांच करनी थी तो जब उन को नजरबंद किया गया था, उसी समय क्यों नहीं ऐसा कर लिया गया ?

फारूक अब्दुल्ला कहते हैं, 'वे इस तरह की कार्यवाही से डरने वाले नहीं हैं। वे आगे भी इस के लिए तैयार हैं। अगर अनुच्छेद 370 की बहाली के लिए उन्हें फांसी पर भी चढ़ना पड़े, तो वे इस के लिए तैयार हैं। यह हमारी सियासी लड़ाई



‘गुपकार’ के जरिए कश्मीर के सभी दलों का एक मंच पर आना भाजपा के लिए परेशानी का सबब बन गया है।

एसोसिएशन के अध्यक्ष थे. साल 2002 से 2011 के बीच जम्मूकश्मीर क्रिकेट एसोसिएशन को 112 करोड़ रुपए दिए गए, जिन में से आरोप है कि 43.69 करोड़ रुपयों का गबन किया गया था. ईडी उसी की जांच कर रहा है. जुलाई, 2019 में और उस से पहले भी इस

है और बहुत लंबी सियासी लड़ाई है. हम यह लड़ाई पूरी ताकत से लड़ेंगे.’

फारूक अब्दुल्ला कश्मीर की लड़ाई में देश के बाकी लोगों खासकर विस्थापित हुए कश्मीरी पंडितों को भी जोड़ना चाहते हैं. वे बारबार इस को हिंदूमुसलिम की लड़ाई से दूर रखना

चाहते हैं। पीपुल्स अलायंस फौर गुपकार डिक्लेरेशन में शामिल महबूबा मुफ्ती जैसे नेताओं के भड़काऊ बयान फारूक अब्दुल्ला के प्रयासों को नुकसान पहुंचा सकते हैं।

कश्मीर पर वार पलटवार

नजरबंदी से आजाद होने के बाद जिस समय कश्मीर के नेता एक मंच पर आ कर केंद्र सरकार के खिलाफ लड़ाई का चैलेंज कर रहे थे, ठीक उसी समय केंद्र सरकार जम्मूकश्मीर में भूस्वामित्व अधिनियम में संशोधन कर के नोटिफिकेशन जारी कर रही थी, जिस के बाद देश का कोई भी नागरिक जम्मूकश्मीर में मकान, दुकान और कारोबार के लिए जमीन खरीद सकता है। अब खेती की जमीन को छोड़ कर कोई पाबंदी नहीं होगी।

जम्मूकश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने कहा, 'हम चाहते हैं कि बाहर से आ कर लोग यहां उद्योगधंधे लगाएं। कश्मीर की औद्योगिक जमीन में इनवैस्टमेंट की जरूरत है। हालांकि खेती की जमीन केवल राज्य के लोगों के लिए ही रहेगी।'

5 अगस्त, 2019 से पहले जब कश्मीर में अनुच्छेद 370 लागू था, तो कश्मीर को अलग राज्य का दर्जा मिला था। उस समय केवल जम्मूकश्मीर के स्थायी नागरिक ही जमीन खरीद सकते थे। देश के अन्य हिस्सों के रहने वाले लोग केवल पट्टे के आधार पर शर्तों के साथ ही जमीन प्राप्त कर सकते थे।

उमर अब्दुल्ला ने कहा, 'जमीन कानून में बदलाव स्वीकार नहीं है। पूरे जम्मूकश्मीर को बेचने के लिए रख दिया गया है। जमीन के गरीब मालिक की मुसीबतें इस से बढ़ेंगी।'

पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा मुफ्ती ने कहा, 'केंद्र सरकार ने जम्मूकश्मीर को बेचना शुरू कर दिया है। इस का मकसद यहां के लोगों को अधिकारविहीन करना है। यह केंद्र सरकार की साजिश है।'

फिजा बदलने के इंतजार में

अनुच्छेद 370 को हटाने के बाद कश्मीर के तत्कालीन राज्यपाल सतपाल मलिक ने कहा था कि कश्मीर में 50,000 नौकरियां दी जाएंगी। यह बात भी केवल दिखावाभर रही। कश्मीर के विकास को ले कर केंद्र सरकार ने जो छवि पेश की थी, उस के अनुसार कश्मीर बेहद अविकसित प्रदेशों में शामिल किया गया था। अनुच्छेद 370 खत्म होने के बाद कश्मीर में विकास की गंगा बहाने का वादा किया गया था। कश्मीर को ले कर पूरे देश की एक ही धारणा है कि वहां केवल पर्यटन उद्योग और सेब की बागबानी पर ही पूरी आर्थिक व्यवस्था टिकी है।

जम्मूकश्मीर में देश के कुल सेब उत्पादन का 77 फीसदी हिस्सा पैदा होता है। कश्मीर में दूसरे तरह के खनिज मिलते हैं, जो पूरे देश में कहीं नहीं मिलते। इस में चूना, पत्थर, संगमरमर, जिप्सम, ग्रेनाइट, बौक्साइट, डोलोमाइट, कोयला और सीसा प्रमुख रूप से उल्लेखनीय हैं। इस तरह के कारोबार को करने वालों के लिए कश्मीर व्यवसाय की नजर से स्वर्ग लग रहा है। कश्मीर में भूमि सुधार कानून लागू था। जिस वजह से देश के दूसरे हिस्सों के मुकाबले यहां की भूमि पर सुधार का असर अधिक पड़ा।

आंकड़े भी इस अंतर को बताते हैं। 2010-11 में जम्मूकश्मीर में ग्रामीण गरीबी का अनुपात 8.1 था, वहीं पूरे देश में यह 33.8 था। गरीबीरेखा के आंकड़े

को देखें, तो जहां पूरे देश की 21 फीसदी आबादी गरीबीरेखा के नीचे रहती है, वहीं जम्मूकश्मीर में केवल 10 फीसदी आबादी ही गरीबी रेखा के नीचे रहती है.

साल 2011 में जम्मूकश्मीर में साक्षरता दर 68.74 फीसदी थी, जो देश के किसी भी विकसित राज्य के मुकाबले कम नहीं है.

जम्मूकश्मीर राज्य राष्ट्रीय विकास के सूचकांक के दूसरे कई बिंदुओं पर देश के विकसित राज्यों से पीछे नहीं है. सेहत से जुड़े कई मामलों में तो वह देश के

देश में भूमिहीनों की तादाद गांव में रहने वालों की एकतिहाई है, जबकि जम्मूकश्मीर में भूमिहीनों की तादाद केवल गांव की आबादी का महज 2 फीसदी ही है.

अनुच्छेद 370 के तहत जम्मूकश्मीर को ले कर कई किस्म की भ्रांतियां पूरे देश में फैली हुई हैं. सब से बड़ी धारणा यह थी कि देश का सब से अधिक पैसा जम्मूकश्मीर को जा रहा है. दूसरे शब्दों में कहें, तो पूरा देश मिल कर जम्मूकश्मीर का पालनपोषण कर रहा था. असल बात इस से अलग है. विशेष राज्य का दर्जा



कश्मीर में सेब के बाद केला भी बाजार में खूब दिख रहा है. पर्यटकों के न आने से फल और मेवा का कारोबार भी चौपट हो रहा है.

विकसित राज्यों से बेहतर हालत में है. 5 साल से कम उम्र के बच्चों की औसत मृत्युदर पूरे देश में 36 प्रति हजार है, जबकि जम्मूकश्मीर में यह आंकड़ा 35 प्रति हजार ही है. बिजली, स्वच्छ पेयजल, साफसफाई, खाना बनाने में अच्छे ईंधन का प्रयोग, जम्मूकश्मीर में देश के दूसरे राज्यों उत्तर प्रदेश, झारखंड और छत्तीसगढ़ से बेहतर है.

केवल जम्मूकश्मीर को ही नहीं मिला था, बल्कि पिछले कुछ सालों में विशेष राज्य का दर्जा पाने वाले दूसरे प्रदेशों जैसे अरुणाचल और सिक्किम से कम सहायता जम्मूकश्मीर को मिलती थी.

देश में ऐसा माहौल बन गया था, जैसे कश्मीर से अनुच्छेद 370 खत्म होने के बाद विकास की गति बढ़ जाएगी. एक साल के बाद भी ऐसा नहीं हो पाया. -शैलेंद्र सिंह •

परिवार

तलाक के लिए गुनाह और फसाद क्यों

• भारत भूषण श्रीवास्तव



शादीशुदा जीवन में कलह व विवाद होना आम है. ये विवाद मुकदमे की शक्ल में अदालत तभी पहुंचते हैं जब पानी सिर से ऊपर उठने लगता है. ऐसे में तलाक की वजह से पतिपत्नी कई बार ऐसे फसादों व गुनाहों को अंजाम देने की तरफ बढ़ चलते हैं जो दोनों के लिए ठीक नहीं होते. कैसे, जानें इस लेख में.



27 साला चेतन सुभाष सुराले पेशे से सौफ्टवेयर इंजीनियर हैं. पुणे में रहने वाले चेतन की शादी इसी साल मार्च में स्मितल सुराले नाम की लड़की से धूमधाम से हुई थी जो मेकैनिकल इंजीनियर है. चेतन बहुत खुश था क्योंकि 25 साला खूबसूरत और पढ़ीलिखी स्मितल मौडर्न और स्मार्ट भी थी. ऐसी बीवी आजकल के लड़कों की पहली पसंद होती है. एकदूसरे को नजदीक से समझने और मौजमस्ती के लिए दोनों हनीमून पर नहीं जा पाए थे क्योंकि शादी के तुरंत बाद लौकडाउन लग गया था.

लौकडाउन हटा और जिंदगी पटरी पर आने लगी तो दोनों बीती 18 अक्टूबर को हनीमून मनाने के लिए महाबलेश्वर जा पहुंचे जहां की खूबसूरती और आबोहवा

दुनियाभर में मशहूर है. दोनों ने अपने बजट के मुताबिक एक अच्छे होटल में डेरा डाल लिया और जिंदगी के हसीन लमहों को यादगार बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी, खासतौर से चेतन ने जिस का दिल एक सैकंड भी नईनवेली बीवी से जुदा होने को नहीं करता था. दोनों दिनभर बांहों में बांहें डाले महाबलेश्वर में घूमते थे और रात को होटल के अपने कमरे में आ कर एकदूसरे के आगोश में ऐसे खो जाते थे मानो दुनिया की कोई ताकत अब उन्हें जुदा नहीं कर पाएगी.

अजब प्यार की गजब कहानी

होटल में दोनों की मुलाकात 22 साला कोस्तुभ अनिल गोगाटे नाम के नौजवान से हुई जो अकेला ही महाबलेश्वर आया था. अनिल खुशमिजाज था और यारबाज

भी. लिहाजा, उस की पहल पर चेतन 2 दिनों में ही उस का दोस्त बन गया क्योंकि वह भी पुणे का ही था. शाम को दोनों ज़िगरी दोस्तों की तरह साथ बैठते हमप्याला, हमनिवाला हो गए.

स्मितल ने इस दोस्ती और नजदीकी पर कोई एतराज नहीं जताया बल्कि दोनों के साथ बैठ कर वह भी इन की महफिल में शरीक होने लगी. इस तरह खाली वक्त और अच्छे से गुजरने लगा.

तीसरे दिन ही अनिल ने बातों ही बातों में चेतन के सामने रोना रोया कि



यदि प्रेमीप्रेमिका अपने प्यार को शादी के बंधन में बांधने में कामयाब हो जाएं, तो तलाक के मामले कम हो जाएं.

लौकडाउन के चलते उस की नौकरी छूट गई है और अब तो उस के पास मकान का किराया देने को भी पैसे नहीं बचे हैं. ऐसे में अगर वह उस की मदद करे तो बड़ा एहसान होगा. नौकरी मिल जाने के बाद वह उस की पाईपाई चुका देगा. मदद के नाम पर उस ने मांगा यह कि चेतन उसे

कुछ दिन अपने घर में रहने की इजाजत दे दे. नरम दिल चेतन पसीज गया और हामी भर दी. महाबलेश्वर से ये लोग वापस पुणे आए, तो अनिल भी उन के घर में रहने लगा.

हफ्ताभर ठीकठाक गुजरा, अनिल इन दोनों से कुछ इस तरह घुलमिल गया जैसे सालों से इन्हें जानता हो और घर का ही सदस्य हो. लेकिन जब उस की हकीकत चेतन को पता चली तो उस के पैरोंतले जमीन खिसक गई और वह बेइंतहा घबरा उठा क्योंकि अनिल उस को तो नहीं, बल्कि

स्मितल को न केवल सालों से जानता था बल्कि उस से प्यार भी करता था और दोनों शादी भी करने वाले थे पर जाति अलग होने के चलते उन के घर वाले तैयार नहीं हुए थे जिन के दबाव में आ कर स्मितल ने मजबूरी में चेतन से शादी कर ली थी.

दरअसल, एक दिन चेतन ने अनिल का मोबाइल खोला तो वह यह जान कर सकते में आ गया कि उस के साथ ज़िंदगी का सब से बड़ा धोखा हुआ है. महाबलेश्वर में अनिल का अचानक या इत्तफाक से मिल जाना पत्नी और उस के प्रेमी की तयशुदा साजिश थी. बात यहीं खत्म हो जाती तो और थी, लेकिन अनिल और स्मितल के मोबाइल पर एकदूसरे से लिपटते हुए फोटो और चैटिंग उस ने पूरी देखी तो उस के

रहेसहे होश भी फाखा हो गए. इन दोनों ने यह तक तय कर लिया था कि स्मितल मौका देख कर चेतन के अंग की नस काट कर उसे हमेशा के लिए नामर्द बना देगी और इसी नामर्दी की बिना पर वह उस से तलाक ले कर अनिल से शादी कर हमेशा के लिए उस की हो जाएगी.



पतिपत्नी में लड़ाईझगड़ा आम बात है लेकिन तलाक तक नौबत तभी आती है जब पानी सिर से ऊपर पहुंच जाता है.

इतना सबकुछ हो गया और चेतन को भनक भी नहीं लगी. लेकिन सचाई उजागर होते ही उस ने तुरंत पुणे के मालवाडी थाने में दोनों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई. वह इतना डरा हुआ था कि रिपोर्ट लिखाने के पहले सीधा अपने घर अहमदाबाद जा कर मांबाप को सारी कहानी बताई थी. अब पुलिस इस अजब प्यार की गजब कहानी की तफ्तीश कर रही है जिस की जड़ में एक कड़वा सच स्मितल का यह सोचना भी है कि अगर वह बिना किसी तगड़ी वजह के तलाक के लिए अदालत जाती तो तलाक मिलने में सालोंसाल लग जाते. लिहाजा, वजह उस ने आशिक के साथ मिल कर पैदा कर ली, लेकिन उस में कामयाब नहीं हो पाई.

यह वाकेआ जिस ने भी सुना, उस ने दांतोंतले उंगली दबा ली कि ऐसा भी होता है. लेकिन इस तरफ किसी का ध्यान नहीं गया कि इस फसाद की जड़ स्मितल की गलती के साथसाथ आसानी से

तलाक न मिलने का डर भी था हालांकि इस में कोई शक नहीं कि वह प्यार अनिल से करती थी और इस हद तक करती थी कि उस से शादी की खातिर सीधेसादे और बेगुनाह पति का प्राइवेट पार्ट काटने तक की हिम्मत जुटा बैठी थी. अगर यही हिम्मत वह प्रेमी से शादी करने को दिखा पाती तो आज बजाय कोर्टकचहरी करने के, सुकून से जिंदगी अनिल के साथ गुजार रही होती.

और भी हैं फसाद

स्मितल ने तलाक के लिए बजाय अदालत का दरवाजा खटखटाने के एक संगीन गुनाह करने का मन क्यों बना लिया था, इस सवाल का जवाब आईने की तरह साफ है कि देश की अदालतों में तलाक के मुकदमे सालोंसाल घिसटते हैं लेकिन पतिपत्नी को तलाक के बजाय मिलती है तारीख पर तारीख जिस से उन की जिंदगी नरक से भी बदतर हो जाती है. कई तो पेशियां करतेकरते बूढ़े हो जाते हैं. लेकिन अदालत को उन की परेशानियों से कोई वास्ता नहीं रहता कि वे भयंकर तनाव में जी रहे होते हैं. मुकदमे के फैसले तक वे दूसरी शादी भी नहीं कर पाते क्योंकि यह कानूनन जुर्म है.

घर, परिवार और समाज में भी तलाक का मुकदमा लड़ रहे पतिपत्नी को अच्छी निगाह से नहीं देखा जाता. एक तरह से उन्हें बाहर निकाल दिया जाता है मानो वे अछूत हों. औरतों को ज्यादा दुश्वारियां झेलनी पड़ती हैं क्योंकि हर किसी की गिद्ध सी निगाह उन की जवानी पर रहती है.

भोपाल की वसंती (बदला नाम) का तलाक का मुकदमा अपने पति से 3 साल से चल रहा है. वह बताती है कि उस की हालत तो कटी पतंग जैसी हो गई है जिसे

हर कोई लूटना चाहता है. घरों में झाड़ू पोंछा कर गुजरबसर कर रही गैरतमंद वसंती को उस वक्त गहरा धक्का लगा था जब उस के एक पड़ोसी, जिसे उस ने भाई माना हुआ था, ने उस की कलाई पकड़ते बेशर्मी की तरह यह कहा था कि कब तक प्यासी भटकती रहोगी, जब तक मुकदमे का फैसला नहीं हो जाता तब तक हम से प्यास बुझा लो और हमारी भी प्यास बुझा दो.

गरीब वसंती के दिल पर क्या गुजरी होगी, इस का अंदाजा हर कोई नहीं लगा सकता सिवा उन लोगों के जो सालों से तलाक का मुकदमा लड़ते ज़िंदगी से बेजार होने लगे हैं. ऐसे ही भोपाल के ही एक

तलाक कानूनों और अदालतों के ढुलमुल तौरतरीकों को ठहराते हैं, तो उन्हें गलत नहीं कहा जा सकता.

गुनाह की तरफ बढ़ते कदम

पुणे की स्मितल जैसा ही एक मामला लौकडाउन के ही दौरान 20 अगस्त को बहादुरगढ़ से भी सामने आया था जब शहर के सैक्टर 9 में रहने वाले प्रदीप शाह की हत्या उस की पत्नी ने 10 अगस्त को अपने प्रेमी दिल्ली के रहने वाले यशपाल के साथ मिल कर कर दी थी क्योंकि पति उसे तलाक देने को राजी नहीं हो रहा था. बिलाशक, यह खतरनाक गुनाह था. लेकिन अगर कानून में ऐसे कोई इंतजाम



पतिपत्नी दोनों ही कई बार अपनी घुटनभरी शादीशुदा ज़िंदगी से छुटकारा चाहते हैं, नहीं मिलता तो वे गुनाह का रास्ता पकड़ लेते हैं.

नौजवान पत्रकार योगेश तिवारी 12 साल से तलाक के लिए अदालतों के चक्कर काटते 44 साल के हो चुके हैं. अब तो उन की दूसरी शादी कर घर बसाने की ख्वाहिश भी दम तोड़ चुकी है और बूढ़े मांबाप की सेवा करतेकरते वे खुद बूढ़े दिखने लगे हैं. योगेश अपनी इस हालत का जिम्मेदार

होते कि पति या पत्नी, वजह कोई भी हो, तलाक की फरियाद ले कर अदालत जाए और तुरंत तलाक हो जाए तो ऐसे जुर्म होंगे ही नहीं क्योंकि पति व पत्नी दोनों को आजादी और मरजी से जीने का हक मिल जाएगा.

तलाक आसानी से न होने पर पत्नी की

हत्या का एक मामला मार्च के तीसरे सप्ताह में बहराइच से उजागर हुआ था। इस मामले में नेपाल से सटे गांव अडगोडवा में हसरीन नाम की औरत की लाश मिली थी। पुलिसिया छानबीन में पता चला था कि हसरीन का पति रियाज 3 साल से सऊदी अरब में रह रहा था। उस की पटरी मायके में रह रही पत्नी से नहीं बैठती थी, जिस के चलते वह उसे तलाक दे कर दूसरी शादी करना चाहता था। पत्नी की हत्या के लिए रियाज ने मुंबई में रहने वाले अपने भाई मेराज को बहराइच भेजा, जिस ने साजिश रच कर हसरीन को मार डाला। लेकिन, पकड़ा गया।

ऐसे हजारों मामले हैं जिन में पति या पत्नी ने तलाक के लिए हत्या जैसा गुनाह किया या फिर एकदूसरे को किसी न किसी तरीके से नुकसान पहुंचाया। अगर तलाक आसानी से मिलता होता तो ये अपराध शायद ही होते। जो हिंसा नहीं कर पाते या नहीं कर सकते वे घटिया और ओछे हथकंडे अपना कर तलाक हासिल करने की कोशिश करते हैं। उन की मंशा भी अपना पक्ष मजबूत करने की होती है जिस से उन्हें लगता है कि अदालत पसीज जाएगी और आसानी से तलाक उन्हें मिल जाएगा।

आजमगढ़ की एक औरत ने थाने में रिपोर्ट लिखाई थी कि कुछ लोग उसे गंदे मैसेज और वीडियो भेज रहे हैं जिस से वह दिमागीतौर पर परेशान है। छानबीन में पता चला कि उस का पति पुनीत ही यह सब खुद कर रहा था और कुछ दोस्तों से भी करवा रहा था कि जिस से पत्नी परेशान हो कर तलाक के लिए राजी हो जाए। पुनीत ने अपनी पत्नी की नंगी सी तसवीरें उस के फोन नंबर के साथ फेसबुक पर डालते लिखा था कि सेवा के लिए हमेशा मौजूद। इस से कई मनचले

पत्नी को फोन कर उस का रेट पूछने लगे थे। यानी, तलाक के लिए पति, पत्नी घटिया से घटिया तरीका आजमाने से नहीं चूकते। पुनीत की मंशा यह थी कि पत्नी बदनाम हो जाएगी तो इस बिना पर उसे जल्द तलाक मिल जाएगा।

मुकदमे से तंग आ कर खुदकुशी भी

यह तो तलाक के लिए हैरानपरेशान पति, पत्नियों का एक पहलू था लेकिन दूसरा भी कम चिंताजनक नहीं जिस में तलाक के मुकदमे के चलते पति, पत्नी में से कोई उम्मीद के साथसाथ खुदकुशी कर जिंदगी भी छोड़ जाते हैं क्योंकि ईसाफ की उन की आस पूरी होती नहीं लगती। वजह, मुकदमे का लंबा खिंचना होता है।

ललितपुर के गांव थवारी के 23 साला नौजवान राजकुमार ने भी यही रास्ता चुना था जिसे वक्त रहते तलाक नहीं मिला तो उस ने परेशान हो कर नरक होती जिंदगी ही छोड़ दी। 13 फरवरी को राजकुमार ने जहर खा कर खुदकुशी कर ली थी। उस के पिता बसन्ते के मुताबिक, राजकुमार तलाक न मिलने से टैंशन में आ गया था। अदालत में पेशियों पर पेशियां लगती जा रही थीं और अदालत को कोई सरोकार उस के तनाव से नहीं था। राजकुमार का गुनाह इतनाभर था कि उस की अपनी बीवी से पटरी नहीं बैठ रही थी।

ऐसा ही एक चर्चित मामला ग्रेटर नोएडा के सैक्टर डेल्टा 1 में रहने वाले अरुण कुमार का है, जिस की पत्नी शीतल ने सुहागरात के हसीन वक्त में उस के ख्वाब यह कहते चकनाचूर कर दिए थे कि मांबाप ने उस की शादी जबरदस्ती कर दी है जबकि वह 7 साल से मनीष

नाम के नौजवान से प्यार करती है और उस के साथ जिंदगी नहीं गुजार सकती. अरुण को समझ आ गया कि अब कुछ नहीं हो सकता, तो उस ने तलाक की बात कही. लेकिन शीतल और उस के घर वाले तलाक के एवज में 60 लाख रुपए की मांग पर अड़ गए. दोहरी परेशानी से आजिज आ गए बेकुसूर अरुण ने फांसी लगा कर जान दे दी. उसे यह समझ आ गया था कि तलाक का मुकदमा सालों चलेगा और उसे दहेज मांगने के इलजाम में जेल की हवा भी खानी पड़ेगी.

असली गुनाहगार तो ये हैं

आखिर क्यों पति, पत्नी तलाक के लिए अदालत जाने के बजाय फसाद और गुनाह का शौर्टकट अपनाने लगे हैं, इस सवाल का जवाब बेहद कड़वा है कि पति, पत्नी अदालत की चौखट पर एड़ियां रगड़तेरगड़ते रो देते हैं लेकिन कानून बजाय उन की परेशानी सुलझाने के, हर पेशी पर उन्हें तारीख दे देता है. तलाक के लिए उस की वजह बताना जरूरी होती है जो अगर अदालत के गले न उतरे तो मुकदमा खारिज भी हो जाता है. पति, पत्नी का यह कहना कोई माने नहीं रखता कि आपसी मनमुटाव और खयालात न मिलने के चलते वे एक छत के नीचे सुकून से नहीं रह सकते, इसलिए तलाक की उन की अर्जी मंजूर की जाए.

अदालतों में उलटी गंगा बहती है. पति या पत्नी अपना दुखड़ा और फरियाद लिए कोर्ट पहुंचते हैं, तो जज कहता है, और सोच लो और फिर अगली तारीख लगा देता है. इस से तलाक चाहने वालों, जो घुटघुट कर जी रहे होते हैं, को लगता है कि कोई ऐसी तगड़ी और वजनदार वजह बताई जाए जिस से अदालत जल्द

तलाक दे दे. इसलिए, अधिकांश मामलों में पति पत्नी के चालचलन पर उंगली उठाता है, उसे कलह करने वाली बताता है तो पत्नी पति पर नामर्दी और मारपीट वगैरह के इलजाम लगाती है. दोनों ही अधिकतर मामलों में झूठे होते हैं.

अदालतें क्यों पति, पत्नी को साथ रहने को मजबूर करती हैं, जबकि दोनों अच्छी तरह समझ चुके होते हैं कि अब पति पत्नी की तरह साथ रहना मुमकिन ही नहीं. इस का जवाब न तो कानून बनाने वाली संसद के पास है न इंसान करने वाले जजों के और न ही तलाक के मुकदमों की आग में घी डालने वाले वकीलों के पास, जो हर पेशी पर तगड़ी दक्षिणा अपने हैरानपरेशान मुक्किलों से पंडेपुजारियों की तरह झटकते रहते हैं.

पहली पेशी पर तलाक चाहने वाला अपनी बात रखता है, तो अदालत कहती है कि पहले फैमिली कोर्ट या परिवार परामर्श केंद्र में जाओ. वहां कार्डसलर तुम्हें समझाएगा कि तलाक के बजाय समझौता कर लो, इस से तुम्हारी घरगृहस्थी बसी रहेगी. यह समझाइश बेहद बेकार का टोटका साबित होने लगी है क्योंकि पति या पत्नी तलाक के लिए तभी जाते हैं जब वे दूसरे के साथ रह नहीं पाते. 3 नवंबर को भोपाल की आयशा (बदला नाम) से पेशी के दिन अदालत ने कहा कि पहले ससुराल जा कर करवाचौथ का त्योहार मनाओ, फिर हमें रिपोर्ट दो कि क्या हुआ. आयशा ने शादी के लिए इस शर्त पर ही हामी भरी थी कि वह शादी के बाद अपनी पढ़ाई जारी रखेगी और अपने पांवों पर खड़ी होगी.

लेकिन वादे से मुकरते शादी के बाद पति और ससुराल वालों ने उसे आगे पढ़ने से मना कर दिया. यहीं से कलह



लड़की अपने घरवालों के दबाव में आ कर शादी तो कर लेती है लेकिन मुश्किल तब आती है जब ससुराल वालों और पति से नहीं बनती.

शुरू हुई और मामला अदालत तक जा पहुंचा जहां आयशा को इंसाफ के बजाय अदालती नसीहत मिली और वह मजबूर हो कर दोबारा ससुराल चली गई. अब आगे कुछ भी हो, लेकिन यह जरूर साफ हो गया कि एक औरत को अपना कैरियर बनाने और पढ़ने देने से अदालत ने कोई वास्ता नहीं रखा.

औरत ज्यादा घुटती है

आयशा को समझ आ रहा होगा कि तलाक यों ही नहीं मिल जाता, इसलिए मुमकिन है वह अपने सपनों का गला घोट कर ससुराल वालों के कहे मुताबिक रहने लगे जो उस की मजबूरी बना दी गई है. अदालत ने देखा जाए तो कोई नई बात नहीं कही है बल्कि वही बात कही है जो धर्म, समाज और संस्कृति के ठेकेदार औरतों से कहते रहते हैं कि औरत का वजूद और जिंदगी पति और उस के घर वालों से ही है. उसे आजादी और अपनी मरजी से जीने का कोई हक नहीं. फिर

भले ही पति शराबी, कबाबी, लंपट, जुआरी, लुच्चा, लफंगा और दूसरी औरतों से ताल्लुक रखने वाला क्यों न हो.

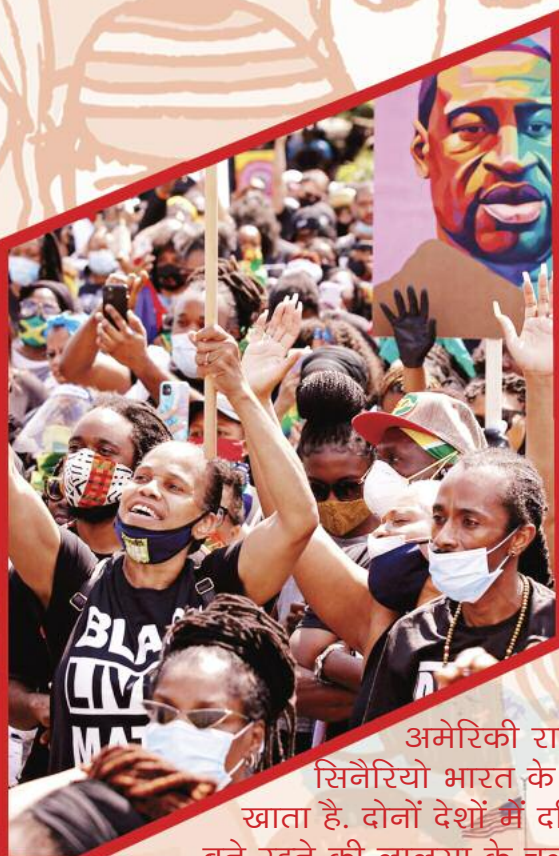
अहम बात यह है कि अदालतों के ऐसे ही फरमानों और तलाक की कार्रवाई कठिन होने के चलते पत्नी तो पत्नी, कई बार पति भी अदालत का रुख नहीं करते क्योंकि उन्हें उपदेशों और प्रवचनों की बेअसर खुराक नहीं, बल्कि घुटनभरी शादीशुदा जिंदगी से छुटकारा चाहिए रहता है.

जो नहीं मिलता तो कई बार वे गुनाह और फसाद का रास्ता पकड़ने को मजबूर हो जाते हैं या फिर घुटघुट कर ही जीते रहते हैं.

शादीशुदा जिंदगी में कलह या विवाद आम बात है. लेकिन यह बात मुकदमे की शक्ल में अदालत तक तभी पहुंचती है जब पानी सिर से गुजरने लगता है. ऐसे में अदालतों को चाहिए कि वे पति, पत्नी की परेशानी समझते तुरंत उन के रास्ते अलग कर दें, यानी, तलाक की डिक्री दे दें. इस से होगा यह कि इंसाफ मिलने के साथसाथ तलाक से जुड़े जुर्म भी कम होंगे जो दिनोंदिन बढ़ते जा रहे हैं. वरना जो पुणे की स्मिथल ने किया, जो बहराइच के रियाज ने किया वह और तेजी से बढ़ेगा जो समाज या देश या किसी के भी हित में किसी लिहाज से अच्छा नहीं कहा जा सकता. और इस फसाद की इकलौती वजह तलाक मिलने में देरी है, इसलिए शादी की तर्ज पर तलाक भी झटपट होना चाहिए. ●

अंतर्राष्ट्रीय
मुद्दा

ध्वस्त होते 2 बड़े लोकतंत्र



अमेरिकी राजनीति का सिनैरियो भारत के सिनैरियो से मेल खाता है. दोनों देशों में दक्षिणपंथियों की सत्ता में बने रहने की लालसा के चलते लोकतंत्र का सत्यानाश हो रहा है. ध्रुवीकरण, नफरत और रंग/धर्म के भेदभाव की राजनीति भाजपा के चालचरित्र में ऐसी ही है जैसी ट्रंप प्रशासन में दिखी. ट्रंप हार गए हैं पर अमेरिका को दो फाड़ कर गए हैं.





ट्रैमोक्रेट जो बाइडेन से करारी शिकस्त मिलने के बाद भी डोनाल्ड ट्रंप वाइट हाउस छोड़ने को तैयार नहीं हैं। सत्ता में बने रहने की लोलुपता में वे कानूनी दांवपेंच का सहारा ले रहे थे और वोटों की गिनती में धांधली का आरोप भी लगा रहे थे। जो बाइडेन के मुताबिक, 'यह अफसोसनाक है जो ट्रंप कर रहे हैं, वे लोकतंत्र के बारे में दुनिया को हानिकारक संदेश भेज रहे हैं। ट्रंप अगर कामयाब न भी हुए तो भी वे आने वाले चुनावों के लिए एक ऐसी मिसाल कायम कर रहे हैं जो अमेरिकी लोगों के अमेरिकी लोकतंत्र और संस्थाओं में भरोसे को कमजोर करेगी.'

जो बाइडेन को अमेरिकी चुनाव में जीत दर्ज किए 3 हफ्ते बाद भी डोनाल्ड ट्रंप अपनी हार मानने को तैयार नहीं थे। श्वेत नस्ल को सर्वोच्च समझने और दक्षिणपंथी सोच के समर्थक डोनाल्ड ट्रंप अपने समर्थकों और कानूनी दांवपेंचों के जरिए अपनी हार को जीत में बदलने का सपना देख रहे थे।

चुनाव के नतीजों को वे कानूनी मकड़जाल में उलझा कर ट्रंप राष्ट्रपति की गद्दी पर जबरन बने रहना चाहते थे। नतीजों को कानूनी चुनौती देने के लिए ट्रंप की टीम ने अनेक राज्यों में दर्जनों केस तो दायर किए, मगर ट्रंप अपनी बातों को साबित करने के लिए अब तक कोई सुबूत कोर्ट में पेश नहीं कर पाए हैं। मिशिगन में अपने आरोपों को साबित करने में नाकाम रहने पर उन्हें केस वापस लेना पड़ा।

मिशिगन में जो बाइडेन 1,60,000 वोटों से ट्रंप से जीते हैं। कई अन्य राज्यों में भी ट्रंप समर्थकों को केस वापस लेने पड़े क्योंकि उन के पास अपनी बात सिद्ध

करने के लिए सुबूत नहीं थे। जॉर्जिया राज्य ने 50 लाख बैलेट की दोबारा गिनती की और जो बाइडेन को 12 हजार से ज्यादा वोटों से विजयी बताया है। राज्य द्वारा नतीजे पर मुहर लगने के बाद ट्रंप को करारा झटका लगा।

साजिश पर उतारू ट्रंप

एक के बाद एक कानूनी रास्ते बंद होने के बाद अब सत्ता में बने रहने की ट्रंप की रणनीति कानूनी लड़ाई से राजनीतिक लड़ाई की ओर शिफ्ट होने लगी। वे पीछे हटने को हरगिज तैयार नहीं थे। उन के समर्थक अमेरिका की सड़कों पर प्रदर्शन और उत्पात पर उतर आए। वे इस कोशिश में जुटे रहे कि राज्यों में वोट सर्टिफिकेशन की प्रक्रिया को रोक सकें, कानूनी मुकदमों के जरिए रुकावट खड़ी कर सकें या रिपब्लिकन रुझान के गवर्नरों व अधिकारियों को आपत्ति उठाने के लिए उकसाते रहें।

उन राज्यों के रिपब्लिकन प्रतिनिधियों को, जहां जो बाइडेन बहुत कम अंतर से जीते हैं, ट्रंप की कोशिश है कि वहां 'चुनाव में धांधली' का प्रचार कर के पौपुलर वोट के नतीजों को खारिज करवाया जा सके। उस के बाद प्रतिनिधियों को इस बात के लिए मना लें कि वे अपने राज्य के इलैक्टोरल कालेज के वोटों को 14 दिसंबर को बाइडेन के बजाय ट्रंप को दे दें।

ट्रंप उन लोगों पर भी दबाव बना रहे थे जो इस मामले में प्रभाव रखते हैं कि राज्य किसे राष्ट्रपति के पद के लिए चुने। इस का खुलासा तब हुआ जब उन्होंने डेट्रॉयट के नतीजों को सर्टिफाई करने से इनकार करने वाले रिपब्लिकन

अधिकारियों को फोन किया। एक राष्ट्रपति का इतने छोटे स्तर के 2 अधिकारियों से सीधी बात करने को अमेरिकी मीडिया ने असामान्य और ओछी हरकत करार दी है। लेकिन ट्रंप को शर्म नहीं आई। सत्ता की हवस ने उन को अंधा कर दिया है। येनकेनप्रकारेण वे, बस, सत्ता में बने रहना चाहत थे।



अमेरिकी चुनाव में जो बाइडेन से करारी शिकस्त के बाद भी डोनाल्ड ट्रंप अपनी हार को पचा नहीं पा रहे हैं।

अमेरिका की छवि को नुकसान से गुरेज नहीं

हालांकि, ट्रंप भी जानते थे कि चांस बहुत कम है क्योंकि इस के लिए कई राज्यों में ऐसा करना पड़ेगा जहां जो बाइडेन की जीत का अंतर हजारों से ले कर लाखों तक का है। यह साल 2000 जैसा नहीं है जहां सिर्फ फ्लोरिडा ही मुख्य बाईस्लाइन राज्य था। अब तो मिशिगन, विस्कॉन्सिन, पेंसिलवेनिया और नवाडा जैसे बड़े राज्य हैं जिन में से कई में डेमोक्रेट गवर्नर हैं और वे सब होता देख हाथ पर हाथ धरे तो नहीं बैठे रहेंगे।

दरअसल, दक्षिणपंथी सोच और ध्रुवीकरण की राजनीति में माहिर ट्रंप ने अपने कार्यकाल का बड़ा हिस्सा राष्ट्रपति पद की परंपराओं को तोड़ने में बिताया है।

ऐसा लग रहा है कि कार्यकाल के ये आखिरी दिन भी ज्यादा अलग नहीं होंगे। जिस तरह से ट्रंप चुनाव अधिकारियों या राज्य के प्रतिनिधियों पर दबाव बना रहे हैं, ऐसा पहले कभी किसी राष्ट्रपति कार्यकाल में देखने को नहीं मिला। हारने वाला नेता हमेशा जीतने वाले को फोन कर के बधाई देता है और अपनी हार स्वीकार करता है, लेकिन लगता नहीं कि ट्रंप ऐसा करेंगे।

ट्रंप आखिरी समय तक गद्दी पर काबिज होने के दांवपेंच खेलते रहेंगे, भले इस से दुनिया के सामने अमेरिका की छवि को कितना ही नुकसान क्यों न पहुंचे। अमेरिकी लोकतंत्र को नुकसान पहुंचाने वाले ट्रंप के ये कृत्य विवादास्पद तो हैं, मगर अमेरिकी कानून के मुताबिक गैरकानूनी नहीं हैं, इसलिए ट्रंप इन दांवपेंचों में राष्ट्रपति के पद को उलझाए रखने की कुचेष्टा में जुटे हैं।

भारत की राजनीति से मेल खाती मौजूदा अमेरिकी राजनीति

इस वक्त अमेरिकी राजनीति का सिनैरियो बिल्कुल भारत के सिनैरियो की तरह है जहां सत्ता में बने रहने की लालसा में भाजपा लोकतंत्र का सत्यानाश करने पर उतारू है। ध्रुवीकरण की राजनीति, बंटवारे की राजनीति, नफरत की राजनीति, अमेरिकी श्वेतअश्वेत की तरह हिंदूमुसलिम की राजनीति, चुने हुए विधायकों व सांसदों को दलबदल के

लिए लालच देने की राजनीति भाजपा के चालचरित्र में नजर आती है। कुछ यही चरित्र ट्रंप प्रशासन का भी है।

दुनिया के 2 बड़े लोकतंत्र अपने नेताओं की इन कारगुजारियों के चलते नष्ट होने की कगार पर पहुंच गए हैं। इसलिए जो बाइडेन का कथन कि, ट्रंप जो कर रहे हैं वह लोकतंत्र और संस्थाओं में लोगों के भरोसे को कमजोर करेगा, बिलकुल सही है क्योंकि ट्रंप अगर सत्ता में नहीं लौटे, जिस की आशा भी बहुत क्षीण है, तब भी वे अमेरिका का इतना नुकसान कर जाएंगे जिस को संभालने में जो बाइडेन की सरकार को कड़ी मेहनत करनी पड़ेगी।

अमेरिका और भारत दोनों के लोकतंत्र और अर्थतंत्र पर भी खात्मे की तलवारें लटक रही हैं। भाईचारे और विकास की बातें कहीं बहुत पीछे छूट चुकी हैं और उन की जगह शक, नफरत, हिंसा और उग्रता ने ले ली है। ट्रंप और भाजपा सरकार ने अपनेअपने कार्यकाल में अपनेअपने देशों को यही सौगात दी है। दोनों देश बीमारी, बेरोजगारी, गरीबी, हिंसा, शक और प्रताड़ना के दौर से गुजर रहे हैं। ये तमाम चीजें चीन को मजबूती देने के साथ रास्ता दे रही हैं, कि वह आए और हम पर राज करे।

यह साफ है कि जब तक हम को ये देश अंदरूनी कलहों, कमजोरियों से नहीं उबरते, चीन जैसी महाशक्ति का मुकाबला नहीं कर सकते। हालांकि, दक्षिणपंथी सोच रखने वाले सत्ता में आसीन लोग देश को कभी भी एकजुट नहीं होने देंगे, चाहे देश फिर से गुलामी, गरीबी की जंजीरों में क्यों न जकड़ जाए।



अमेरिकी चुनाव में जीत दर्ज करने वाले जो बाइडेन का मानना है कि ट्रंप जो कर रहे हैं वह लोकतंत्र को कमजोर करेगा।

धर्मपाखंड पर जोर, विज्ञान की उपेक्षा

विज्ञान के प्रति उपेक्षा ने अर्थव्यवस्था और आम आदमी के जीवन को खतरे में डाल दिया है। अमेरिकी और भारत दोनों जगह विज्ञान और तकनीक से ज्यादा धर्म और पाखंडों ने जोर पकड़ा हुआ है। ये दोनों चीजें जनता को जल्दी आकर्षित करती हैं, उन पर जल्दी हावी हो जाती हैं क्योंकि जनता कमजोर है और परेशान भी।

भारत में जहां आर्थिक मंदी और बेरोजगारी से उबरने के उपाय तलाशने की जगह मंदिर, आरती, तालीथाली ने जोर पकड़ा हुआ है, कुछ ऐसा ही सीन अमेरिका में नजर आ रहा है जहां जगहजगह औरतों का जमावड़ा डोनाल्ड ट्रंप को सत्ता में लाने के लिए प्रेरण कर रहा था और ईश्वर के आगे प्रलाप करता नजर आ रहा था।

हम सभी को पता है, हमारी समस्याएं कोविड-19 से कहीं अधिक हैं।

कोविड-19 लक्षण है, बीमारी नहीं। अमेरिका और भारत दोनों ही राष्ट्र इस वक्त गहरे संकट में हैं और कई मानो में कोविड-19 का केवल एक लक्षण है। वायरस तब ही आप पर हमला करता है जब आप का शरीर कमजोर हो, जब आप अपनी रक्षा न कर पाएं। गौरतलब है कि ट्रंप बिलकुल धक्कामार तरीके से वाइट हाउस पहुंचे थे। अपने 4 साल के कार्यकाल में उन्होंने अमेरिका में लोकतंत्र को बिखरने का काम किया और अब बड़ी ढिठाई से दोबारा अपनी कुरसी बचाए रखने की कोशिश में जुटे रहे।

ट्रंप ने कोरोना वायरस की महामारी में जिस ढंग की बदईतजामी दिखाई, उस से विकसित और अविकसित देशों के बीच का फर्क एकदम से मिटता दिखा। चुनावों के तुरंत पहले उन्होंने सुप्रीम कोर्ट में जिस तरह जजों की नियुक्ति की, उस से जाहिर हुआ कि दुनिया के सिरमौर कहलाने वाले लोकतंत्र की शीर्ष न्यायपालिका में जजों की नियुक्ति खुद में कितना बड़ा गड़बड़झाला साबित हो सकती है।

नस्ली गैरबराबरी को हवा दी डोनाल्ड ने

‘ब्लैक लाइव्स मैटर’ आंदोलन के दौरान वाइट सुप्रीमसी यानी गोरी रंगत के लोगों के तरफदारों की उन की खुल्लमखुल्ला हिमायत से यह बात भी दिन के उजाले की तरह लोगों के सामने साफ हो गई कि अमेरिकी जनजीवन में नस्ली गैरबराबरी बहुत गहरे पहुंच गई है। और अब ट्रंप की करतूतों से पूरी दुनिया का ध्यान इस बार के अमेरिकी राष्ट्रपति के चुनाव पर रहा जहां एक बड़े लोकतंत्र

के बिखरते ढांचे को देख कर दुनिया सकते में है।

ट्रंप प्रशासन के 4 सालों में यह भी साफ हो गया है कि अमेरिकी जनमत को भरमाए रखना, उसे मनमुताबिक किसी खास तरफ मोड़ देना किस हद तक आसान है। ट्रंप के शासन में रहते यह बात साबित हुई कि जनसंचार माध्यमों और सोशल मीडिया के फैलाव ने समस्याओं को गहरा किया है, आम लोगों के बीच दूरियों को बढ़ाया है और नफरत की जड़ों को मजबूत किया है। यह बात भारत के बारे में भी सटीक बैठती है।

अमेरिका में ट्रंप के राष्ट्रपति रहते यह बात साफ हो गई है कि अमेरिका में झूठ, फरेब और नफरत फैलाते हुए राष्ट्रपति बना रहा जा सकता है और, इस से भी खराब बात यह कि ट्रंप ने साबित कर दिखाया है कि दुनिया की सब से ताकतवर मीडिया की मौजूदगी में भी झूठ और फरेब का जाल धड़ल्ले से बुना जा सकता है।

देश को ताकतवर बनाने, विकास के नए कीर्तिमान स्थापित करने, जनता को सुखी और सबल बनाने व लोकतंत्र की प्रतिमा तक पहुंचाने वाला सफर बड़ा कठिन है। आप को इस सफर पर बढ़ते हुए हर कदम पर आगे के कंकड़पत्थर हटाने होते हैं, खाईखंदक पाटने होते हैं और रास्ता समतल बनाते हुए चलना पड़ता है। लेकिन श्रेष्ठता के अहंकार में डूबे किसी नेता के लिए अपनी जनता के लिए इस में से कुछ भी कर पाना संभव नहीं है। यह बात जितनी डोनाल्ड ट्रंप के अमेरिका के बारे में सच है उतनी ही नरेंद्र मोदी के भारत के बारे में भी। —नसीम अंसारी कोचर ●



14:55

गृहशोभा सरिता मुक्ता

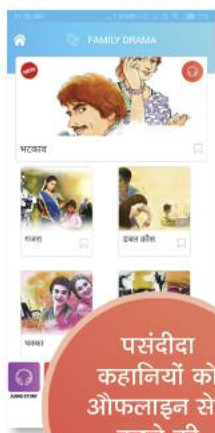
सरस सलिल सत्यकथा मनोहर कहानियाँ

पत्रिकाओं की सैकड़ों रोचक कहानियां
पढ़ने के लिए आज ही डाउनलोड करें



रोमांस,
क्राइम, फैमिली,
रिलेशनशिप व हास्य
में से अपनी
पसंदीदा विधा चुनने
का विकल्प

Kahani
सरिता
ऐप



पसंदीदा
कहानियों को
ऑफलाइन सेव
करने की
सुविधा



प्रतिदिन
नई कहानियां
व व्यंग्य



सुविधानुसार
फॉट साइज
कमज्यादा करने
की सुविधा



गूगल प्लेस्टोर पर उपलब्ध

DELHI
PRESS
MAGAZINES

आर्थिक



लक्ष्मी पूजन फिर भी जेब खाली की खाली

• शैलेंद्र सिंह

कोरोना के नाम पर पूरे देश में केंद्र सरकार द्वारा असफल तालाबंदी लागू की गई. परिणाम इतना भयावह है कि तालाबंदी थोपे जाने के 8 माह बाद भी देश किसी भी स्तर पर संभल नहीं पाया है. मजबूरीवश देशवासियों ने इस साल तमाम त्योहारों पर हाथ भींच लिए और अब दीवाली, शादियों की धूमधाम भी तालाबंदी की भेंट चढ़ रही है.



तालाबंदी और कोरोना संक्रमण काल के 8 माह के बाद दीवाली पर लोगों को बाजार में तेजी की उम्मीद थी. कारोबारियों को उम्मीद थी कि दीवाली में लक्ष्मीपूजन से उन की तिजोरी भर जाएगी. तालाबंदी के बाद मंदी में डूबे कारोबार के बीच दीवाली तो आई पर लक्ष्मी नहीं लाई. इस से यह साफ हो गया कि लक्ष्मी दीवाली के पूजन से नहीं आती. लक्ष्मी मेहनतकश लोगों के खूनपसीने से आती है.

तालाबंदी से फैली मंदी और बेरोजगारी दीवाली की रौनक वापस नहीं ला सकी. लक्ष्मीगणेश के पूजन से तिजोरी भरने की आशा निराशा में बदल गई. दीवाली पूजन में पहले लोग पीतल, चांदी और सोने तक की मूर्तियों की

खरीदारी करते थे. इस साल ज्यादातर लोग मिट्टी से बनी मूर्तियों के सहारे ही पूजा करने को मजबूर थे. सस्ते होने के कारण चाइनीज प्रोडक्ट्स की खरीदारी भी हुई. बाजार में चाइनीज विरोध नजर नहीं आया. तमाम तरह के औफर और छूट के बाद भी ग्राहकों ने कम ही खरीदारी की.

तालाबंदी के बाद बाजार के बिगड़े हालात दीवाली के लक्ष्मीपूजन के बाद भी नहीं बदले. कारोबारियों ने अपनी तरफ से कोई कसर नहीं छोड़ी थी. कारोबारियों को उम्मीद थी कि दीवाली के थोड़ा पहले से अगर खुशनुमा माहौल बनाने का काम किया जाए तो नवरात्र से ले कर दशहरा और दीवाली के साथ ही साथ वैडिंग सीजन में बाजार में उछाल आ

जाएगा. माहौल को खुशनुमा बनाने के लिए कारोबारियों ने स्थानीय अखबारों में अपने बिजनेस के प्रचारप्रसार के लिए विज्ञापन भी दिए.

तालाबंदी और कोरोना के प्रभाव में 24 पेज के अखबार 12 और 16 पेज पर सिमट कर रह गए थे. खुशनुमा माहौल बनाने के लिए अखबारों में सब से अधिक खबरें बाजार की तैयारियों की छपने लगीं.

विज्ञापनों से भी अधिक, अखबारों ने अपने लेखों व समाचारों के जरिए खुशनुमा माहौल बना कर ग्राहकों को बाजार की तरफ लाने का काम किया. दीवाली और धनतेरस में बाजार में तेजी आए, इस के लिए उन दिनों होने वाली बाजारों की साप्ताहिक बंदी को भी कैसिल कर के दुकानें खोली गईं. इस के बाद भी बाजार मंदी में डूबे रहे. बाजारों में बिजली की चमक जरूर थी पर कारोबारियों के चेहरों की चमक गायब ही रही.

दीवाली पर छाई रही तालाबंदी

दीवाली तो आई पर पहले की तरह लक्ष्मी नहीं आई. 2019 की दीवाली के मुकाबले इस साल की दीवाली बेहद फीकी रही. लौकडाउन और कोरोना के दौरान छाई मंदी कारोबार को उबरने नहीं दे रही है. पिछले साल के मुकाबले इस साल दीवाली के कारोबार में 40 फीसदी कारोबार कम रहा. दीवाली के समय में सोनेचांदी, वाहन, मिठाई, ब्यूटी सैलून, रिटेल और कपड़ों के कारोबार में तेजी आती थी. फैस्टिवल सीजन के साथसाथ



दीवाली आई लेकिन बाजारों की फीकी रौनक से साफ जाहिर था कि लोगों की जेब खाली है.

विंटर के वैडिंग सीजन होने से भी कारोबार में उछाल रहता था.

सराफा एसोसिएशन के महामंत्री विनोद माहेश्वरी कहते हैं, “दीवाली के पहले धनतेरस वाले दिन सामान्यतौर पर



विनोद माहेश्वरी

सब से अधिक खरीदारी होती थी. हमारी दुकान कई पीढ़ियों से लखनऊ के चौक बाजार की सराफा गली में खुली है. 30 साल से मैं खुद

दुकान पर बैठ रहा हूं.

“सब से बड़ी मंदी इस साल की दीवाली में देखने को मिली है. चांदी के सिक्कों की खरीदारी में भी पहले जैसी तेजी नहीं थी. लोगों ने असली चांदी के सिक्कों की जगह लक्ष्मी, गणेश वाले सस्ते चांदी के सिक्कों की खरीदारी की. केवल हमारी दुकान में ही नहीं, पूरे सराफा कारोबार का यही हाल रहा है.

“तालाबंदी के बाद बंद पड़े बाजार को इस दीवाली केवल सांस लेने भर का

मौका मिला था. पिछले साल की तुलना में कारोबार में बहुत मंदी रही. झालर और दीयों की चमक के बाद भी कारोबारियों के चेहरे उदास ही रहे.”

कामचलाऊ रही खरीदारी

दीवाली में मिठाई के कारोबार में तेजी देखने वाली होती थी. धनतेरस से ले कर भैयादूज तक मिठाई की दुकानों में भीड़ देखने वाली होती थी. मिठाई की ज्यादातर दुकानों में चाट की दुकान भी होती थी. दीवाली में ग्राहकों की संख्या बढ़ने की वजह से मिठाई की दुकानें अपने चाट वाले काउंटर बंद कर देते थे. इस दीवाली मिठाई की दुकानों में सन्नाटा छाया रहा. पिछले साल से तुलना करें तो 30 से 40 फीसदी मंदी इस दीवाली रही. पिछले साल लखनऊ में दीवाली के दिनों में 300 करोड़ रुपए का मिठाई कारोबार हुआ था. इस साल यह कारोबार 150-180 करोड़ के बीच ही रहा.

अखिल भारतीय उद्योग व्यापार मंडल के अध्यक्ष संदीप बंसल बताते हैं, “मिठाई की दुकानों में फुटकर खरीदारी तो कम हुई ही, कौर्पोरेट ऑर्डर के भी न आने से और ज्यादा नुकसान हुआ. दीवाली में पहले की तरह से दिए जाने वाले गिफ्ट में काजू और मेवे की महंगी मिठाई सब से ज्यादा पसंद की जाती थी, पर इस साल ऑफिस बंद होने और उपहारों के बजट में कटौती होने से मिठाई कारोबार में मंदी दिखाई दी.”

गुप्ता स्वीट्स, गणेशगंज, लखनऊ के मालिक पंकज गुप्ता कहते हैं, “हर तरह



संदीप बंसल

की मिठाई की खरीदारी कम मात्रा में हुई. लोगों ने केवल पूजनभर की मिठाई ही खरीदी. इस का कारण यह भी था कि लोगों की अपनी जेब ही खाली थी, तो वे खरीदारी कैसे करते.”

वेतन कटौती का असर

मिठाई और सर्राफा के साथसाथ कपड़ा, बरतन, सजावट, रियल एस्टेट, लाइट की दुकानों में पहले जैसा खुशनुमा माहौल नहीं था. संदीप बंसल कहते हैं, “बाजार में छाई मंदी की वजह से खरीदारी कम हुई. लोगों ने केवल उतना ही खरीदा जितने से दीवाली पूजन हो जाए. यह केवल लखनऊ की ही बात नहीं है, पूरे उत्तर प्रदेश और प्रदेश के बाहर के कारोबारियों से जो सूचनाएं मिलीं उन के अनुसार हर जगह ऐसा ही माहौल रहा.”

दीवाली में लोग वाहन की खरीदारी खूब करते हैं. कई बार लोग महीनों पहले से गाड़ियां बुक करा देते हैं और उन की डिलीवरी धरतेरस के दिन लेते हैं. जिस कारण गाड़ियों के शोरूम के बाहर इतनी भीड़ लग जाती थी कि सड़क पर पैदल चलना मुश्किल हो जाता था. फेसबुक पर लोग अपनी नई गाड़ी के साथ फोटो जरूर पोस्ट करते थे. इस दीवाली सड़क, शोरूम और फेसबुक तक पर सन्नाटा छाया हुआ था. लखनऊ के औटो सैक्टर में साढ़े 4 हजार बाइक, 15 सौ कारों के बिकने की जानकारी मिली है. पिछले साल की दीवाली के मुकाबले यह बाजार 30 से 40 फीसदी की मंदी पर रहा.

ज्यादातर गाड़ियां नौकरीपेशा लोग बैंकलोन और ईएमआई के भरोसे खरीदते थे. इस साल बहुत सारे लोगों की नौकरियां चली गईं. कई लोग ऐसे हैं जिन

के वेतन में कटौती के बाद भी वेतन कब मिलेगा, यह पता न होने के कारण वे बैंक से लोन लेने की हालत में नहीं थे. इस साल जो वाहन बिके उन में से सब से बड़ी संख्या ऐसे वाहनों की थी जिन को शादी में दिया जाना था. नौकरियों के जाने और समय पर वेतन न मिल पाने की हालत के कारण वाहन बाजार में मंदी रही. फैंस्टिवल सीजन के पहले इस सैक्टर को सब से अधिक उम्मीद थी पर दीवाली तो आई पर लक्ष्मी नहीं लाई.

मोबाइल बाजार भी ठंडा

तालाबंदी के दौरान सब से अधिक मोबाइल और लैपटॉप की खरीदारी हुई. दीवाली में मोबाइल बाजार में रौनक नहीं दिखाई दी. लखनऊ के अशोक मार्ग स्थित श्रीराम टावर मोबाइल का सब से बड़ा बाजार है. यहां के शौपकीपर रंजन श्रीवास्तव कहते हैं, “पिछले साल के मुकाबले 50 फीसदी कारोबार कम रहा. इस की सब से बड़ी वजह ऑनलाइन शॉपिंग को माना जा रहा है. जानकारी के मुताबिक, पिछली दीवाली में करीब 2 सौ करोड़ रुपए का कारोबार हुआ था. इस साल 100 करोड़ से भी कम का कारोबार हो पाया. ज्यादातर लोगों ने ऑनलाइन मोबाइल की खरीदारी की. वहां पर लोगों को तमाम तरह के ऑफर भी मिल गए थे.

अखिल भारतीय उद्योग व्यापार मंडल के अध्यक्ष संदीप बंसल कहते हैं, “तालाबंदी और मंदी के अलावा बाजार को सब से अधिक चुनौती ऑनलाइन शॉपिंग से हुई है. वहां नए मॉडल कम कीमत में घर बैठे मिल जाते हैं. ग्राहकों को तमाम तरह के डिस्काउंट कूपन भी मिल जाते हैं. जिस के चलते लोग घरों में

बैठ कर ऑनलाइन खरीदारी करने लगे हैं. इस के बावजूद, यह बात भी सही है कि मोबाइल बाजार से जितनी उम्मीद थी उतनी बिक्री नहीं हुई.”

हजरतगंज में कपड़े की शौप चलाने वाली नेहा सिंह कहती हैं, “हमारे यहां कोलकाता और राजस्थान के कपड़ों की बिक्री होती है. इस साल पिछले साल के मुकाबले आधी सेल भी नहीं हुई.”

नहीं दिखा चीनी प्रोडक्ट्स का विरोध

दीवाली के कुछ माह पहले ही पूरे देश में चाइनीज प्रोडक्ट्स का बायकौट बढ़चढ़ कर किया गया. सभी बाजारों में



तालाबंदी और कोरोना के डर से लोगों ने ऑनलाइन शॉपिंग पर जोर दिया जिस का बुरा असर खुदरा कारोबार पर पड़ा.

चाइनीज प्रोडक्ट्स की होली तक जलाई गई थी. दीवाली आते ही लोग चाइनीज प्रोडक्ट्स का बायकौट भूल गए. लोग इंडियन झालर लेने के लिए बाजार गए पर

वहां जब चाइनीज झालर सस्ती दिखी तो उस की ही खरीदारी की. बजट में फिट होने के कारण न चाहते हुए भी लोगों ने चाइनीज प्रोडक्ट्स खरीदे. इंडियन झालर एक तो महंगी पड़ रही थी, दूसरे, उस में वैराइटीज भी ज्यादा नहीं थीं. यह बिक्री भी पिछली दीवाली के मुकाबले कम थी. इंडियन झालर के मुकाबले चाइनीज झालर अधिक बिकीं.

लखनऊ के नाका हिंडोला में इलैक्ट्रिक प्रोडक्ट्स की सब से बड़ी मार्केट है. यहां के कारोबारियों से बात करने पर पता चला कि भारत के तैयार सामान को जगह बनाने में अभी 4 से 5 साल लग जाएंगे. लखनऊ और आसपास के जिलों के लोग यहां से खरीदारी करते हैं. दीवाली में यहां से करीब 2 सौ करोड़ रुपए का कारोबार होता है. इस साल यह कारोबार 125 से 135 करोड़ रुपए तक का ही हो पाया.

शर्मा इलैक्ट्रिक शॉप के दिनेश शर्मा ने बताया, “इस साल केवल झालर की खरीदारी हुई. सस्ती कीमत वाली झालर ही खरीदी गई. दूसरे सजावटी सामान की खरीदारी नहीं की गई. इस की वजह मंदी ही मानी जा रही है. जिस परिवार के लोग 500 से 1,000 रुपए के बीच दीवाली में झालर और सजावटी सामान की खरीदारी करते थे उन्होंने केवल काम चलानेभर के लिए खरीदारी की.”

कम शादियों का प्रभाव

दीवाली के साथसाथ विंटर सीजन में शादियां अधिक होने के कारण कारोबार में तेजी आ जाती थी. इस बार दीवाली की ही तरह वैडिंग सीजन में भी कारोबार कम हुआ. इस का सब से बड़ा

कारण यह था कि शादियां कम हुईं. जो शादियां हुईं उन में भी मेहमानों की संख्या कम थी. लोगों ने कम बजट में शादियां कीं. नतीजतन, इस से जुड़े हर कारोबार में गिरावट आई. दीवाली के बाद का वैडिंग सीजन कारोबारियों के लिए मुनाफे की उम्मीद ले कर आता था. कोरोना संक्रमण के कारण यह कारोबार भी कमजोर रहा.

अमीनाबाद में शादी के कार्ड की दुकान चलाने वाले अनूप छाबड़ा कहते हैं, “पिछले साल के मुकाबले केवल 30 फीसदी कार्ड प्रिंट हुए हैं. इस में भी लोगों ने 40 से 50 कार्ड छपवा कर ही काम चला लिया.”

त्योहारों में लोग सुंदर दिखना चाहते हैं. यह उम्मीद रहती है कि ब्यूटीपार्लर के कारोबार में तेजी आएगी. परपल इन सैलून चला रही पायल श्रीवास्तव कहती हैं, “तालाबंदी के बाद सैलून खुल गए थे.

“उम्मीद की जा रही थी कि दीवाली के फेस्टिवल सीजन में लोगों से सैलून गुलजार होंगे. पर ऐसा हुआ नहीं. केवल हेयर



पायल श्रीवास्तव

कटिंग ही लोग कराने आए. वैडिंग सीजन में भी केवल ब्राइड मेकअप तक कारोबार सीमित रहा. वैडिंग में भी कम लोगों के हिस्सा लेने के कारण कारोबार ठप्प सा रहा. दूसरे, पिछले साल के मुकाबले इस साल शादियां भी कम ही हुईं. दीवाली हो या वैडिंग, पिछले साल के मुकाबले बाजार में 30 से 40 फीसदी की गिरावट हर तरफ देखने को मिली है. दीवाली के लक्ष्मी पूजन से बाजार की मंदी दूर नहीं हुई.” ●



आउट ऑफ कोर्स

घोषिततौर पर वामपंथी व 'राष्ट्रद्रोही' लेखिका अरुंधति राय को जाने क्यों भगवा गैंग देश निकाला नहीं दे पा रहा, जबकि वे दिनरात उस की आंखों में खटकती रहती हैं. देश न सही, कालेजों के सिलेबस से हटाने की शृंखला में उन की एक और चर्चित व हाहाकारी किताब 'वाकिंग विद द कौमरेड्स' को अखिल



भारतीय विद्यार्थी परिषद की मांग पर तमिलनाडु की मनोनमनियम सुंदरनगर यूनिवर्सिटी से हटा लिया गया है. परिषद के मुताबिक, इस किताब के जरिए नक्सली और माओवादी विचारधारा को 3 साल से थोपा जा रहा था.

अब उम्मीद की जानी चाहिए कि धोती, कुरता, जनेऊ और तिलक वगैरह धारण किए रामधुन पर नृत्य करते युवा

संस्कृतिरक्षक घंटा बजा रहे होंगे. इसी में उन का और उन के देश का कल्याण है. रही बात अरुंधति की, तो ऐसे मामलों की वे आदी हो चुकी हैं. उन्हें बेहतर मालूम है कि देश में खुलीहवा का दौर खत्म हो गया है और धार्मिक घुटन जिंदगी का हिस्सा बना दी गई है.

बुजुर्गों की हास्य क्रांति

बहुत हो गया, अब तो कुछ होना चाहिए, जैसा उत्तेजक विचार वरिष्ठ बुजुर्ग कांग्रेसी नेताओं गुलाम नबी आजाद और कपिल सिब्बल के दिल में आया तो उन्होंने अपनी पार्टी के बारे में कई ऐसी बातें कहीं जो उन के हिसाब से बड़ी क्रांतिकारी थीं. बिहार की हार से निराश इन नेताओं ने करने के नाम पर कभी कुछ किया नहीं. ये तो पंडों की तरह मुफ्त की मलाई खाते रहे हैं, जो



अब छिनती दिख रही है तो इन्हें अपनी चिंता सताने लगी है.

कांग्रेस की महती जरूरत इन और ऐसे एहसानफरामोश सुस्त व चाटुकार नेताओं से नजात पाने की है जिन्हें उस ने बेवजह पीठ पर लाद रखा है. रायता लुढ़काने के विशेषज्ञ ये बुजुर्ग, दरअसल, पहले भी किसी काम के नहीं थे. ऐसे में बंगाल के सांसद अधीर रंजन चौधरी ने अलग पार्टी

बनाने की सलाह दे कर आईना तो इन्हें दिखा ही दिया।

चंदे का धंधा शुरू

अयोध्या के निर्माणाधीन राममंदिर में कितने करोड़ या अरब रुपए फूंक रहे हैं, यह न कोई पूछने वाला है और न ही कोई बताने वाला है। दीवाली पर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने लाखों दीये अयोध्या में रोशन कर जता दिया कि भव्यता से कोई समझौता नहीं किया जाएगा। बेरोजगार युवा नौकरी को तरसते रहें, इस से भी उन्हें कोई सरोकार नहीं। ये तो अपने कर्मों के चलते पापों की सजा भुगतते हैं। राम नाम भजें, तो जरूर कल्याण हो सकता है।

लेकिन असल कल्याण की स्क्रिप्ट विहिप और रामजन्म भूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट ने लिखनी शुरू कर दी है कि



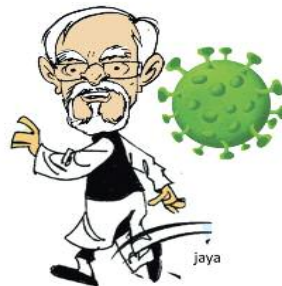
देशभर के 11 करोड़ परिवारों से चंदा लिया जाएगा। इस बाबत टोलियां बनाया जाना भी शुरू हो गया है जो संक्रांति से आर्यावर्त में फैल कर चंदा इकट्ठा करेंगी। दानदाताओं को मंदिर का आकर्षक फोल्डर दिया जाएगा। उम्मीद ही की जा सकती है कि यह पुण्यकार्य ज्यादातर ब्राह्मण युवकों से कराया जाएगा जो शायद सवर्ण परिवारों से ही

चंदा लेंगे। देशवासियों को अपनी जेबें ढीली करने के लिए तैयार हो जाना चाहिए, उन के भाग्य का बंद द्वार जो अब खुलने वाला है।

कोरोना और राष्ट्रवाद

कोरोना और राष्ट्रवाद में कनैक्शन पूर्व उपराष्ट्रपति और शिक्षाविद हामिद अंसारी ही बता सकते हैं, जो उन्होंने बताया भी कि कोरोना से पहले 2 घातक महामारियां धार्मिक कट्टरता और आक्रामक राष्ट्रवाद समाज और देश को जकड़ चुकी थीं। कांग्रेसी नेता शशि थरूर की नई किताब का डिजिटल विमोचन करते उन्होंने अपने मन की कई बातें साझा कीं, जो भगवा गैंग को रास नहीं आ रहीं।

देश के मौजूदा हालात और माहौल पर दोटूक कहने वाले हामिद जब बोलते हैं



तो किसी का लिहाज नहीं करते। इस के पहले यह कह कर वे विवादों से घिर गए थे कि देश में मुसलमान असुरक्षित हो चले हैं। कोरोना की वैक्सीन कभी न कभी ईजाद हो जाएगी लेकिन बाकी 2 महामारियों का क्या होगा, इस पर कोई रोशनी डाल सके, तो आभार उस का भी व्यक्त करेंगे।

—भारत भूषण श्रीवास्तव •

धर्म का
धंधा



कुंडली मिलान

समाज को बांटे रखने का बड़ा हथियार

• शाहनवाज

लड़केलड़की की कुंडलियों में यदि 36 गुणों में सभी गुणों का मिलान हो जाए तो क्या इस की कोई गारंटी है कि वैवाहिक जीवन खुशहाल रहेगा? यदि ऐसा न हुआ तो इस में किस का दोष माना जाएगा? क्या शादी से पहले कुंडली मिलान करना आवश्यक है या फिर कुंडली मिलान की प्रक्रिया के पीछे समाज को बांटे रखने वाली मानसिकता काम करती है? क्या यह सिर्फ एक धर्म में ही है या इस जैसी कोई प्रक्रिया अन्य धर्मों में भी पाई जाती है?

साल था जनवरी 2018, जब राजीव की शादी के लिए जगहजगह लड़की तलाशने के लिए लोगों के घर जाया जा रहा था. उन के घर वाले ऐसी बहू की तलाश में थे जो सुंदर हो, सुशील हो, घरबार का काम करना आता हो, पढ़ीलिखी हो इत्यादि. खानदान के पंडित बड़ी मेहनत से कुंआरी लड़कियों के रिश्ते का पता करते और एक के बाद एक लड़के की कुंडली के अनुसार लड़कियों को छंटते रहे. घर वालों ने तो पंडितजी से साफ कह दिया था कि लड़केलड़की की कुंडली में कम से कम 24 गुण तो मिलने ही चाहिए.

राजीव की कुंडली के अनुसार घर के पंडित का लड़की ढूंढना थोड़ा मुश्किल होने लगा तो घर वालों ने अपने गांव के कुछ और पंडितों को भी लड़की ढूंढने के इस काम में शामिल कर लिया. अंत में पंडितों के काफी तलाशने के बाद ऐसी लड़की मिल ही गई जिस से राजीव की कुंडली के 36 में से 32 गुणों का मिलान हो गया. राजीव के घर वाले बहुत खुश हुए और जल्द ही लड़की वालों से मिल कर रिश्ते की बात भी पक्की कर आए. अप्रैल तक आतेआते राजीव की शादी हो गई और नया जोड़ा

हनीमून के वास्ते कुछ दिनों के लिए शिमला चला गया.

राजीव और कल्पना की शादी के कुछ महीने अभी हुए भी नहीं थे कि उन के बीच छोटीमोटी बातों को ले कर अनबन होनी शुरू हो गई. पहले बात केवल एकदूसरे के प्रति नाराजगी तक थी, लेकिन कुछ समय बाद यह छोटीमोटी अनबन छोटेमोटे झगड़ों का रूप धारण करने लगी.

घर वाले उन के बीच इन छोटे झगड़ों को इग्नोर किया करते थे और कहते थे, “जिन पतिपत्नी के बीच झगड़ा होता है उन के बीच प्यार भी उतना ही होता है.” अब यह बात कितनी सही कितनी गलत थी, यह तो बाद में ही समझ आया जब छोटेमोटे झगड़े इतने बढ़ने लगे कि सभी को चिंता होने लगी.

जैसेतैसे राजीवकल्पना की शादी को 7-8 महीने गुजर गए. उन का कोई भी दिन ऐसा नहीं गुजरता था जब वे झगड़ा न करते हों. साल 2019 की शुरुआत में ही वे दोनों एकदूसरे से इतने परेशान हो गए कि उन दोनों ने ही अपने परिवार की न मानते हुए एकदूसरे को तलाक देने का फैसला कर लिया. और अप्रैल 2019 के आतेआते वे दोनों कानूनी तरीके से एकदूसरे से अलग हो गए.

जिस जोड़े की कुंडली में 36 में से 32 गुणों का मिलान हो जाए, उस के बाद भी यदि शादी के बाद इतनी समस्याएं हों तो इस में किस का दोष है? क्या कुंडली मिलान करने वाले पंडित से गलती हुई? या फिर यह कुंडली वाला पूरा सिस्टम ही इस के पीछे का दोषी है? क्या शादीब्याह से पहले कुंडली देखना और गुणों का मिलान करना मात्र ढकोसला है या फिर इस के पीछे समाज को बांटे रखने वाली मानसिकता काम करती है?

एक पल के लिए यदि हम मान भी लें कि कुंडली मिलाने वाले पंडित की गलती के कारण ये सभी समस्याएं नवविवाहित जोड़े को सहनी पड़ीं, लेकिन हम ने अपने जीवन में कई ऐसे उदाहरण देखे हैं जिन में सर्वगुण संपन्न कुंडली मेल के बाद भी विवाहित जोड़ा अपना वैवाहिक जीवन सफल नहीं बना पाता. और हम ने यह भी देखा है कि कुंडली मेल बिलकुल भी न होने पर कई जोड़े बेहद सुखद वैवाहिक जीवन गुजारते हैं. ऐसे में कुंडली मिलान की परंपरा पर सवाल उठना उचित हो जाता है कि जब इस के मिलने या न मिलने से विवाहित जोड़े के जीवन में कोई असर नहीं पड़ता तो अभी भी बहुसंख्य शादीब्याहों में इस परंपरा को इतना अधिक मोल क्यों दिया जाता है?

क्या है कुंडली मिलान

दावा किया जाता है कि कुंडली आप की ऊर्जा प्रणाली और उस पर ग्रहों की प्रणाली के प्रभावों का वर्णन करती है.

विवाह के समय लड़के और लड़की की जन्म कुंडलियों को मिला कर देखा जाता है. कुंडली मिलान की इस विधि में

36 गुण होते हैं. विवाह की मान्यता के लिए 36 में से कम से कम 18 गुणों का मिलान होना चाहिए. इन 18 गुणों में नाड़ी, माकुट, गण, मैकी, योनि, तारा वासिफ वर्ण जैसे 8 कूटों में बंटे अंक होते हैं.

कुंडली मिलान अपनेआप में वैज्ञानिक नहीं है. सब से पहले तो एस्ट्रोलौजी को ही वैज्ञानिक नहीं माना गया है.

क्यों बन गया जरूरी

यदि हम कुंडली मिलान प्रथा को और इस की प्रक्रिया को ध्यान से अध्ययन करें तो पाएंगे कि इस मिलान के 36 गुणों में सब से महत्वपूर्ण गुण (जिसे गुण नहीं माना जाना चाहिए) वर्ण कूट है. वर्ण कूट से अभिप्राय वर्ण व्यवस्था से है. यानी, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र. इन्हीं वर्णों से ही जातियों का उत्थान होता है. और तो और, वर्ण कूट को कुंडली मिलान की प्रक्रिया में सब से पहला स्थान दिया गया है.

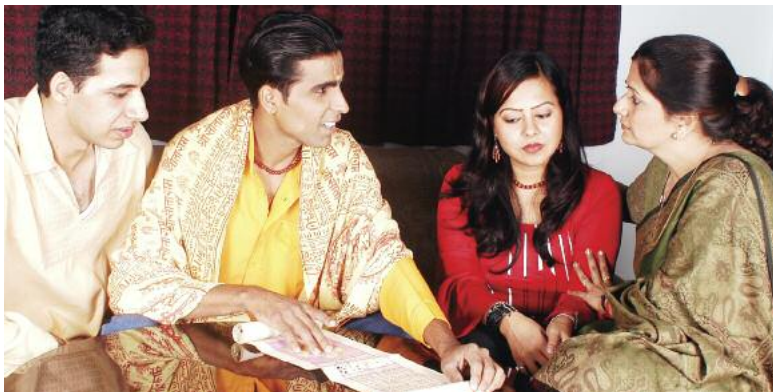
कुंडली मिलान की यह प्रक्रिया समाज में तब से ही चलती आ रही है जब से भारतीय समाज में जाति व्यवस्था का उत्थान हुआ. पुराने समय में कुंडली मिलान की उपयोगिता केवल बेहतर साथी की तलाश के लिए (जिस की कोई गारंटी अभी भी नहीं है) ही नहीं, बल्कि जाति व्यवस्था कायम रखने के लिए भी थी.

वर्ण व्यवस्था समाज में एक तरह की छतरी के समान होती है, जिस के अंदर अलगअलग जातियों का समावेश होता है. हिंदू धर्म में जाति व्यवस्था को बेहद अहम स्थान दिया गया है. ब्राह्मण का विवाह ब्राह्मण से, क्षत्रिय का विवाह क्षत्रिय से, वैश्य का विवाह वैश्य से और शूद्र का विवाह शूद्र से ही हो, इस चीज

का क्रियान्वयन कुंडली मिलान की प्रक्रिया से ही संभव था।

भारत में जाति व्यवस्था ने समाज को हमेशा बांट कर रखा। उस के पीछे सब से बड़ा कारण समाज में कुछ लोगों के पास ही सब से अधिक संसाधन और सब से अधिक अधिकारों को अपने हाथों में बनाए रखना था। और यह सब समाज में बिना धर्म के लागू करना संभव ही नहीं

आज के समय में भी शादी से पहले कुंडली मिलान की यह प्रथा आम घरों में बेहद आम है। चाहे लड़के के लिए लड़की तलाशनी हो या फिर लड़की के लिए लड़का, कुंडली में जब तक 18 गुण नहीं मिल जाते तब तक शादी के लिए मंजूरी नहीं मिलती। और कुंडली मिलान की यह प्रथा, पढ़ाईलिखाई से वंचित लोगों के साथसाथ खूब पढ़े लिखे



कुंडली मिलान के नाम पर विचौलिए तरहतरह के डर आम धर्मभीरु लोगों के मन में बैठा देते हैं।

था। मुट्ठीभर लोग, जिन के हाथों में संसाधन और अधिकारों का केंद्रीयकरण हो गया, समाज को अपने आने वाली पीढ़ियों में हस्तांतरित करना चाहते थे।

इसी कारण उन्होंने समाज में लोगों के पेशे के अनुसार उन्हें विभाजित कर दिया। किसी दूसरी जाति का व्यक्ति किसी अन्य जाति के साथ संबंध न बना ले, इसीलिए तरहतरह की पाबंदियां लगा दी गईं। यह केवल संबंध बनाने की बात नहीं थी, बल्कि एक जाति का खून दूसरी जाति में मिश्रित न हो जाए, इस के ऊपर कंट्रोल करने के लिए कुंडली मिलान की प्रथा सब से अहम थी।

लोग भी अपनी शादी के लिए योग्य वर या वधू की तलाश के लिए प्रयोग करते हैं।

सफल होने की नहीं है गारंटी

चूंकि ज्योतिष विद्या या एस्ट्रोलॉजी किसी तरह का कोई विज्ञान नहीं है, इसलिए इस का एक हिस्सा यानी कि कुंडली मिलान का भी किसी तरह का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है। कुंडली प्रथा में जिस तरह ग्रहों और नक्षत्रों के मेल या अमेल से किसी व्यक्ति के लिए कौन योग्य है और कौन नहीं, इस का आकलन करने की नाटकनौटंकी की

जाती है, उस से यह कहीं से भी न तो वैज्ञानिक लगती है और न ही यह कोई विज्ञान है.

मामला केवल जाति व्यवस्था को बनाए रखना है, बाकी सब तो मदारी के खेल जैसा है. जिस से लोगों को लगता है कि ज्योतिषी जो भी राहु, केतु, शनि, मंगल कर रहा है वह सब ठीक ही होगा. जबकि, कुंडली मिलान से बनाए जाने वाले संबंध अपने वैवाहिक जीवन में सफल हों, इस की कोई गारंटी नहीं है.

मसलन, राजीव का ही उदाहरण ले लीजिए. 36 में से 32 गुणों के मिलान के बावजूद शादी का एक साल भी नहीं हुआ और दोनों का तलाक हो गया.

उसी प्रकार रवि की शादी का किस्सा है. कालेज के दिनों में रवि का कालेज में एक लड़की से प्रेम हो गया. लड़की का नाम बुशरा हसन था. बुशरा और रवि ने अपने घर पर एकदूसरे के बारे में बताया. लेकिन कोई बात नहीं बनी. अंत में रवि और बुशरा ने कानूनी तरीके से कोर्ट में जा कर शादी कर ली. हाल में उन से मुलाकात हुई तो वे एकदूसरे के साथ बेहद खुश नजर आए.

आजकल इन शादियों को रोकने के लिए लव जिहाद का नारा दिया जा रहा है ताकि धार्मिक भेदभाव की लकीरों को ऊंची दीवारों में बदला जा सके.

यदि हम पौराणिक कथाओं की बात करें तो भगवान राम और सीता की जोड़ी के समय जब उन की कुंडली का मिलान महर्षि गुरु वशिष्ठ द्वारा किया गया, तो कहा जाता है कि उन की जोड़ी में 36 में से 36 गुणों का ही मिलान हो गया था. परंतु जब 36 गुणों का मेल हो

ही गया था तो अंत में सीता को क्यों धरती में समाना पड़ा ?

कुंडली प्रथा कितनी व्यावहारिक

कुंडली मिलान की प्रथा केवल समाज में पहले से मौजूद जाति व्यवस्था को मजबूती देती है. इस से यह सवाल बनता है कि आज के आधुनिक समाज में कुंडली मिलान अपनी कितनी व्यावहारिकता रखता है ?

उदाहरण के लिए रवि और बुशरा की जोड़ी को ही ले लीजिए. यदि हम नाम से दोनों के धर्म का अंदाजा लगाएं तो रवि हिंदू धर्म से और बुशरा मुसलिम धर्म से ताल्लुक रखती है. इस हिसाब से तो रवि का मेल किसी भी तरीके से बुशरा के साथ होना ही नहीं चाहिए. लेकिन सचाई कुछ और ही बयां करती नजर आ रही है कि दोनों एकदूसरे के साथ बेहद खुश हैं.

भारतीय जनता पार्टी के नेताओं में कई ऐसे हैं जिन्होंने विधर्मी से विवाह किया और उन के विवाह भी सफल रहे, कैरियर भी.

उसी प्रकार एक सवाल यह भी बनता है कि जिन धर्मों में कुंडली मिलान जैसी प्रथाओं को प्रैक्टिस नहीं किया जाता, क्या उन के यहां रिश्ते होते ही नहीं ? या फिर क्या उन में शादियां होती ही नहीं ? और अगर होती हैं तो क्या उन के रिश्ते टूट जाते हैं ?

आज के आधुनिक समाज में एस्ट्रोलौजी, हौरोस्कोप इत्यादि पर भरोसा करना खुद को वक्त में पीछे धकेलने जैसा है. एक तरह दुनिया में विज्ञान तेजी से प्रगति के रास्ते पर है तो कुछ लोग दूसरी तरफ धर्म का चश्मा लगा कर दुनिया को पीछे धकेलने का काम कर रहे हैं.



कुंडली मिलान अगर वैवाहिक जीवन की सफलता की गारंटी होता तो दिनोंदिन तलाक के केस बढ़ न रहे होते.

बाकी धर्म वाले भी पीछे नहीं

यदि यह लगता है कि केवल हिंदू धर्म में ही कुंडली मिलान की प्रथा विद्यमान है तो आप गफलत में हैं. कुंडली मिलान की प्रक्रिया एक ही समाज में एक वर्ग को दूसरे वर्ग से रिश्ते जोड़ने से रोकती है, एक तरह से यह बैरिकेड की तरह काम करती है.

भारत के मुसलिम समुदाय के लोग अपना आंगन बड़ा साफसुथरा दिखाने की कोशिश करते हैं. कहते हैं कि मुसलमानों में किसी तरह की कोई जाति नहीं होती, सब बराबर होते हैं इत्यादि. मुसलिम समुदाय में जाति होती है कि नहीं, यह जानने के लिए सब से सीधा और आसान तरीका इंटरनेट पर सर्च करना है. इंटरनेट खोलिए. गूगल पर मुसलिम मैट्रिमोनी टाइप कीजिए. किसी भी एक वैबसाइट पर विजिट कीजिए और थोड़ा सा सर्फिंग कीजिए.

शेख, सिद्दीकी, अनवर, आरिफ, मलिक, अली इत्यादि कर के आप को मुसलमानों में जातियों की एक लंबी लिस्ट देखने को मिल जाएगी.

बेशक, मुसलिम में कुंडली मिलान जैसी प्रक्रिया नहीं फौलो की जाती लेकिन जाति का ध्यान तो रखा जाता है. मुसलिम समुदाय में अगड़े माने जाने वाले (मुगल, पठान, सैयद, शेख आदि) नहीं चाहते कि उन की शादी पिछड़े माने जाने वाले (अंसारी, नाई, सिद्दीकी, जोलाहा आदि) के घर में हो

चाहे आर्थिक व शैक्षिक स्थिति एकजैसी हो. किसी ऊंची जाति के मुसलिम से यदि आप पूछ लेंगे कि क्या वे अपने बच्चों की शादी भंगी (अछूत मुसलिम) के घर में करेंगे, तो उन का जवाब न में ही होगा. वैसे, बता दें कि मुसलिम समुदाय में यह दावा किया जाता है कि वे छुआछूत प्रैक्टिस नहीं करते. दरअसल, कह देने भर से किस का क्या जाता है.

भारत में वैसे तो मुसलिम समुदाय अल्पसंख्यक है लेकिन इसी समुदाय की बहुसंख्य आबादी गरीब है, पिछड़ी है. जाहिर सी बात है कि भारत के मुसलिम समुदाय का बहुसंख्य हिस्सा पिछड़ा है या दलित है, जो कि अलगअलग पेशों में लगा हुआ है. जब शादीब्याह की बात होती है तो मुसलिम समुदाय में जाति व्यवस्था क्लीयर कट नजर नहीं आती.

कुछ ऐसा ही सिख समुदाय का भी हाल है. कुंडली मिलान यहां भी

प्रेक्टिस नहीं की जाती, लेकिन जाति व्यवस्था तो कायम है. इंटरनेट पर ही सिख मैट्रिमोनी टाइप करने और किसी 'वैबसाइट' पर विजिट करने भर से मालूम हो जाएगा कि यहां भी जाति के अनुसार ही लोग अपने घर के लड़केलड़कियों की शादी तय करते हैं. जाट, राजपूत, सैनी, अरोड़ा, भाटिया, बत्रा इत्यादि अपने या अपने से ऊपर की जातियों में अपने बच्चों की शादी करवाना चाहते हैं, अपने से निचली जाति में नहीं.

क्या करना चाहिए

बात सिर्फ कुंडली मिलान तक ही सीमित नहीं है. कुंडली मिलान समाज में एक धर्म में ही मुख्यरूप से प्रैक्टिस की जाती है, लेकिन वैसी ही प्रक्रिया अन्य धर्मों में भी तो विद्यमान है.

एक तरफ तो पहले ही ज्योतिष ज्ञान (एस्ट्रोलौजी) को वैज्ञानिक नहीं माना गया है, वहीं दूसरी ओर इन को मानने वाले लोगों की संख्या समाज में बहुत बड़ी है. अर्थात्, वे सभी अवैज्ञानिक चीजों पर भरोसा करते हैं. इस की वजह से

आधुनिक समाज की यह ट्रेन आज भी कहीं न कहीं उन्हीं पुरानी अवैज्ञानिक, रूढ़िवादी, अंधविश्वास की पटरी पर सवार है जो कि अकसर जातिवाद जैसे स्टेशन पर ही प्रस्थान करती है.

भारत को आजाद हुए 73 साल हो चुके हैं परंतु आज भी हमारे समाज से जातिवाद खत्म नहीं हुआ. इस की वजह केवल एक है कि हमारे दादादादी, नानानानी, मांबाप ने इस जाति व्यवस्था को कायम किया हुआ है.

अपनी जाति में बच्चों की शादियां करवा के अगर हम भी अपने पूर्वजों के किए हुए काम को करेंगे तो हमें कोई हक नहीं यह सवाल करने का कि, 'भारत से जाति कभी क्यों नहीं जाती?' इस जाति व्यवस्था के खात्मे के लिए यह जरूरी है कि हम इस कुंडली मिलान की सब से पहली सीढ़ी को ही न चढ़ें.

समय विज्ञान का है, न कि धार्मिक अंधविश्वास और पोंगेपन का. खुद को



विज्ञान इंसान को आगे की ओर ले जा रहा है जबकि कुंडली मिलान जैसी बातों पर विश्वास कर व्यक्ति फिर पीछे की ओर चला जाता है.

तैयार कर लें और अपने बच्चों को एक बेहतर भविष्य प्रदान करें. ज्योतिष ने कोविड जैसी महामारी की कोई भविष्यवाणी नहीं की थी. किसी पूजापाठ ने कोविड को खत्म नहीं किया. ●

मनोहर कहानियां

मनोहर कहानियां पर आधारित

क्राइम, थ्रिलर, हॉरर

की अनोखी पेशकश अब



पर

आपराधिक घटनाओं की सत्य और ताजा रिपोर्टिंग

पुलिस अधिकारियों से बातचीत पर आधारित

पैसा, प्रेम, सैक्स, धोखा, छलफरेब, प्रपंच का परदाफाश

अपराधों के बारे में जानिए और सतर्क रहिए

खरीदें
बुक स्टाल से
हर महीने 10 तारीख
तक नया अंक
उपलब्ध



हर माह कथा रूप
में नई कहानियां
नए तेवर और कलेवर
के साथ

केवल Rs 500 में वार्षिक ग्राहक
बने और प्रतिमाह रजिस्टर्ड डाक से पाएं
अपनी मनपसंद पत्रिका मनोहर कहानियां
Subscription@delhipress.in



To subscribe call toll free at: 1800 103 8880, Landline 011-41398888, Ext. 119/221/264 (Monday to Saturday 10.00 to am to 6.00 pm)

For subscribing online, kindly visit www.delhipress.in/subscribe

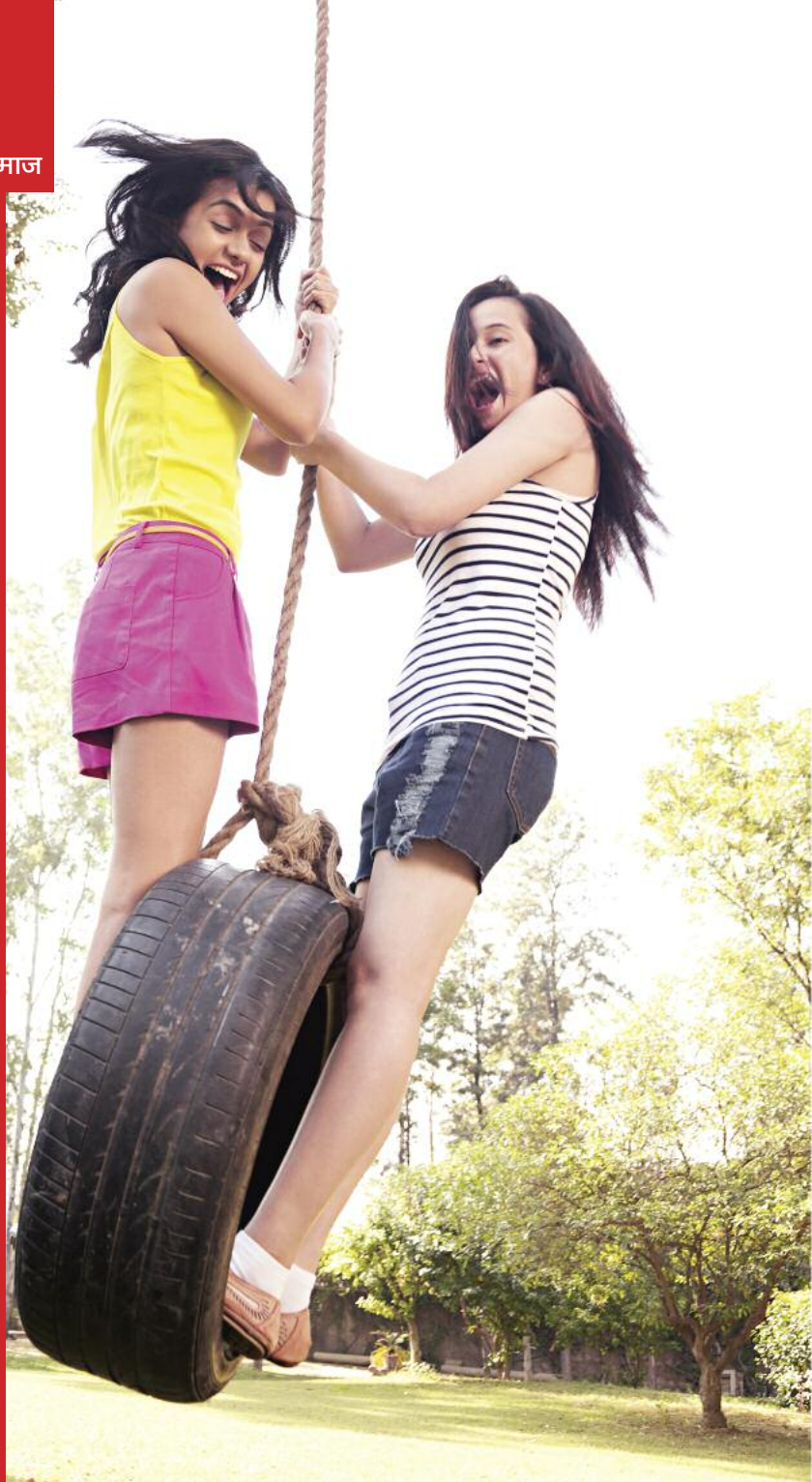
साथ ही पढ़िए सत्यकथा हर महीने

DELHI
PRESS
MAGAZINES

33 Magazines | 10 languages | 2.2 Crore Readers

For subscription SMS / WhatsApp to 8588843408

समाज



वर्जिनिटी टूट रही हैं बेड़ियां

● आशा शर्मा

वर्जिनिटी के नाम पर बहुत हो चुका. अब तो महिलाएं अपने पंखों को अपने मुताबिक आसमान में उड़ने दे रही हैं, आजाद पंछी की तरह.

आदिकाल से ही औरतों के लिए शुचिता यानी वर्जिनिटी एक आवश्यक अलंकार के रूप में निर्धारित कर दी गई है. यकीन न हो, तो कोई भी पौराणिक ग्रंथ उठा कर देख लीजिए.

अहल्या की कहानी कौन नहीं जानता. शुचिता के मापदंड पर खरा नहीं उतरने के कारण जीतीजागती, सांस लेती औरत को पत्थर की शिला में परिवर्तित हो जाने का श्राप मिला था. पुराणों के अनुसार, उस का दोष सिर्फ इतना ही था कि वह अपने पति का रूप धारण कर छद्मवेश में आए छलिये इंद्र को उस के स्पर्श से पहचान न सकी.

शुचिता के सत्यापन का कितना दबाव औरतों पर हुआ करता था, इस का उदाहरण भला कुंती से बेहतर कौन हो सकता है. कुंती, जिसे अपनी शुचिता का प्रमाण विवाह के बाद अपने पति को देना था, ने विवाहपूर्व सूर्यपुत्र कर्ण को जन्म देने के बाद उसे नदी में प्रवाहित कर दिया ताकि उस की शुचिता पर आंच न आए.

क्या है शुचिता

शुचिता यानी यौनिक शुद्धता का पैमाना. स्त्री योनि के भीतर एक पतली गुलाबी झिल्ली होती है जिसे हाइमन कहा जाता है. माना जाता है कि प्रथम समागम के दौरान इस के फटने से रक्तस्राव होता है. जिन स्त्रियों को यह स्राव नहीं होता उन का कौमार्य शक के घेरे में आ जाता है. यह जानते हुए भी कि इस झिल्ली के फटने के कई अन्य कारण भी होते हैं.

सामाजिक तानाबाना कुछ इस कदर बुना गया है कि स्त्री का शरीर सिर्फ उस के पति के भोग के लिए है और उस का कौमार्य उस के पति की अमानत. अकसर यही पाठ हर स्त्री को पढ़ाया जाता है. यह पाठ स्त्रियों को रटारटा कर इतना कंठस्थ करा दिया जाता है कि इस लकीर से बाहर निकले कदम अपराध की श्रेणी में रख दिए जाते हैं और इस अपराध की सजा स्त्री को ताउम्र भुगतनी पड़ती है.

राजस्थान के सांसी समुदाय में स्त्रियों की वर्जिनिटी जांचने के लिए एक अत्यंत

घिनौनी प्रथा प्रचलित है, जिसे कूकड़ी प्रथा कहा जाता है। इस प्रथा के अनुसार, शादी की पहली रात को स्त्री के बिस्तर पर सफेद धागों का गुच्छा रख दिया जाता है जिसे स्थानीय भाषा में कूकड़ी कहते हैं। शारीरिक संबंध बनाने के बाद बिस्तर की सफेद चादर और उस कूकड़ी की जांच होती है। यदि वह रंगदार नहीं है यानी उस में खून के धब्बे नहीं हैं तो यह माना जाता है कि स्त्री के शारीरिक संबंध शादी से पहले कहीं और स्थापित हो चुके हैं। सो, स्त्री को चरित्रहीन करार दे दिया जाता है। इसी आधार पर परिवार और

चूड़ियों को कपड़े से बांध दिया जाता है। इसी तरह का शुचिता परीक्षण महाराष्ट्र के कंजरभाट समाज और गुजरात के छारा समाज में भी प्रचलित है।

स्त्री साथी या संपत्ति

सदियों से यह कहावत प्रचलन में है कि संसार में लड़ाईझगड़े और युद्ध के सिर्फ 3 ही कारण होते हैं— जर, जोरू और जमीन यानी धन, स्त्री और जमीन। पति का शाब्दिक अर्थ मालिक ही होता है। इस रिश्ते से पत्नी को पति की संपत्ति माना जाता है। शायद इसी तर्क के आधार



समाज में आज भी कई जगहों पर स्त्री की शुचिता को परखा जाता है यानी उसे लांछित और प्रताड़ित करने का यह तरीका अपनाया जाता है।

समाज को उसे लांछित और प्रताड़ित करने का अधिकार भी मिल जाता है।

अमानवीयता की पराकाष्ठा यह होती है कि सुहागरात से पहले यह निश्चित किया जाता है कि कमरे में किसी तरह की कोई नुकीली या धारदार वस्तु न हो ताकि किसी तरह की चोट लगने के कारण रक्तस्राव की संभावना भी न हो। यहां तक कि लड़की के बालों से पिन तक हटा ली जाती है और उस की

पर और महाभारत की कथानुसार युधिष्ठिर ने द्रौपदी को अपनी संपत्ति मानते हुए जुए में दांव पर लगा दिया था।

समय बेशक बदलता हुआ प्रतीत हो रहा है लेकिन परिस्थितियां आज भी कमोबेश वही हैं। आज भी स्त्री पुरुष की संपत्ति ही समझी जाती है जिस की अपनी कोई स्वतंत्र विचारधारा नहीं हो सकती। जिस के हर व्यक्तिगत फैसले पर पुरुष की सहमति की मुहर आवश्यक समझी

जाती है. ऐसा न करने वाली स्त्रियां चरित्रहीन की श्रेणी में गिनी जाती हैं. आज भी स्त्रियों की यौनिक शुचिता को उन पर शासन करने या उन्हें नियंत्रित करने का हथियार समझा जाता है.

अकसर 2 दलों के आपसी झगड़े का शिकार महिलाएं बन जाती हैं. लोग अपना बदला चुकता करने के लिए एकदूसरे की बहनबेटियों से बलात्कार तक कर डालते हैं.

दंगों के दंश भी महिलाएं ही झेलती हैं. पुरुष अपनी खीझ उतारने के लिए भी बलात्कार करते हैं मानो इस तरह वे उस स्त्री के शरीर पर नहीं बल्कि उस के पूरे वजूद पर अपना अधिकार जमा लेंगे. मुखर या हावी होती दिखती महिलाओं के साथ भी यही कुकर्म किया जाता है. मांबहन की गालियां भी तो इसी का उदाहरण हैं.

पर कतरने की साजिश

कई कार्यालयों में जहां महिलाएं अधिक प्रतिभाशाली होती हैं, अकसर वे चारित्रिक उत्पीड़न का शिकार पाई जाती हैं. उन के सहकर्मी जब उन के द्वारा कुशलता से संपादित होने वाले कार्यों की अनदेखी कर उन का चारित्रिक मूल्यांकन करने लगते हैं तो कहीं न कहीं वे मानसिक रूप से टूटती ही हैं.

यही तो पुरुष को चाहिए. स्त्री को तोड़ कर उसे अपने अंकुश में रखना ही तो उस का ध्येय है.

इस बात में दोराय नहीं कि हर क्षेत्र में स्त्रियों ने अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है. प्रतिभा यदि पुरुष से कमतर



कार्यस्थल पर अपने अधीनस्थ स्त्री का यौन शोषण कर पुरुष एक तरह से अपने अहं को तुष्ट करता है.

है तब तक पुरुष को उस की तारीफ से गुरेज नहीं लेकिन जहां कहीं वह पुरुष से 21 हुई, सारा बवाल शुरू हो जाता है. ऐसे अनेक उदाहरण हमारे आसपास बिखरे पड़े हैं.

सीमा मेरी कालोनी में ही रहती है. पतिपत्नी दोनों सरकारी स्कूल में अध्यापक हैं. सीमा अपने पति से जूनियर है, इस नाते स्कूल से संबंधित मामलों में उस की सलाह लेती रहती थी. पति का अहं संतुष्ट होता रहता था. अपनी मित्रमंडली में वह सीमा की तारीफ करते नहीं अघाता था.

पिछले साल सीमा प्रतियोगी परीक्षा पास कर के प्रधानाध्यापक क्या बन गई, एक ही झटके में उस की सारी प्रतिभा धूल में मिल गई. सीमा को दूसरे शहर में पोस्टिंग मिली, जो उन के घर से लगभग 100 किलोमीटर की दूरी पर था.

पहले तो उस पर रोजाना आनेजाने के लिए दबाव बनाया गया। फिर, उस के दृढ़ता से मना करने पर, उस पर जौइन न करने का दबाव बनाया गया। विरोध करने पर पति ने सीधा उस के चरित्र पर निशाना साध लिया।

“होगा कोई, जिस के लिए घर छोड़ने को तैयार है ताकि जम कर मस्ती की जा सके,” कह कर पति ने तुरूप का पत्ता फेंक कर उस का मनोबल तोड़ने की कोशिश की।

यह तो सीमा हिम्मत वाली निकली जिस ने पति की परवा न कर अपना नया पदभार ग्रहण कर लिया वरना अधिकतर महिलाओं को तो अपने कैरियर से अधिक अपनी शुचिता ही प्यारी लगती है।

हावी है पुरातन सोच

अतिआधुनिक कहे जाने वाले आज के कितने ही युवा हैं जो अपनी पत्नियों के विवाहपूर्व प्रेम प्रसंग को सहजता से स्वीकार कर सकें? शायद, एक भी नहीं। भले ही वे स्वयं अपने प्रेम के किस्से कितना ही रस ले कर पहली रात अपनी नवविवाहिता को सुनासुना कर उस पर अपनी मर्दानगी का रोब झाड़ें लेकिन पत्नी का किसी के प्रति एकतरफा लगाव उन्हें कतई गवारा नहीं।

बेशक स्त्रियों को पढ़नेलिखने, घूमनेफिरने या फिर अपना मनचाहा कैरियर चुनने की आजादी मिली है लेकिन आज भी उन की कमाई पर उन्हें भी पूरा अधिकार नहीं है। अपने पर किए गए खर्च को भी उन के चरित्र से जोड़ दिया जाता है। यही कारण है कि विधवा या तलाकशुदा स्त्री का हलका सा श्रृंगार भी समाज की आंखों में खटकने लगता है।

एक जाल है यह

बचपन में मैं ने दादी को गाय दुहते हुए देखा है। वे गाय को दुहने से पहले एक पतली सी रस्सी से उस के दोनों पांव बांध देती थीं।

मैं कहती, ‘दादी, इतनी बड़ी गाय को इतनी पतली सी रस्सी से कैसे बांध लिया आप ने?’

तब दादी कहतीं, ‘बेटा, इसे रस्सी की आदत हो गई है। पतलीमोटी से कोई फर्क नहीं पड़ता।’

ठीक ऐसी ही आदत महिलाओं को भी हो चुकी है। अपनी शुचिता को अपनी उपलब्धि समझने की, अपनेआप को पुरुष के संरक्षण में रखने की, पहले पिता, फिर भाई, उस के बाद पति और अंत में बेटे की। स्त्रियों के संरक्षक समाज ने तय कर दिए, वही लकीर वे आज भी पीटे जा रही हैं या यों कहें कि उन्हें इस की आदत हो गई है।

बहुत सी महिलाओं को इस में कोई बुराई भी नहीं दिखती, बल्कि उन्हें अच्छा लगता है कि कोई उन का खयाल रख रहा है। इस के पीछे छिपी गुलामी की मानसिकता उन्हें दिखाई नहीं दे रही।

आज भी कुछ खेल, कुछ प्रोफेशन महिलाओं के लिए उचित नहीं समझे जाते, जैसे सेना, पर्वतारोहण, साइकिल चलाना आदि। वहीं, कुछ खेल और व्यवसाय महिलाओं के लिए उत्तम समझे जाते हैं, जैसे टीचिंग, बैंक आदि।

मौजूदा दौर में हालांकि वर्जनाएं दूट रही हैं लेकिन उन का प्रतिशत उंगलियों पर गिननेभर जितना ही है।

बदलाव की बयार

फिल्में समाज का आईना समझी जाती हैं। कुछ फिल्में वही दिखाती हैं जो समाज

में घटित हो रहा है, तो कुछ फिल्मों को देख कर समाज उन का अनुसरण करता है। पुरानी फिल्मों देखें तो नायिका को शुचिता की मूर्ति दिखाया जाता था। यौनिक शुद्धता इतना हावी रहता था कि नायिका के मुंह से कहलाया जाता था कि मैं ने फलां पुरुष को अपना सर्वस्व सौंप दिया है। किसी अन्य पुरुष के साथ शादी के बारे में सोचना भी अब मेरे लिए पाप है।

इसी तरह यदि किसी फिल्म में नायिका से यह कथित पाप यानी विवाहपूर्व गर्भ



इसे बदलाव ही कहेंगे कि सिर्फ शादी के बाद पति के सामने शुचिता के सत्यापन के लिए आज की लड़कियां अपने आज के रोमांच को खत्म नहीं करना चाहतीं।

ठहर गया हो तो स्त्री को ही उम्रभर इस पाप को ढोते हुए दिखाया जाता था।

दूसरी तरफ, आज की फिल्मों या वैंब सीरीज की बात करें तो इन में विवाहपूर्व के शारीरिक संबंध बहुत ही सहज दर्शाए जा रहे हैं। इस तरह के समागम के पश्चात नायिका को किसी गिल्ट, अपराधबोध या शर्मिंदगी का एहसास नहीं होता, बल्कि वह

अगली सुबह न तो शरमाती हुई उठती है और न ही लाज से उस के गाल गुलाबी होते हैं। वह आम दिनों की ही भांति सहजता से अपना दिनभर का काम निबटाती है।

यह बदलाव की ठंडी बयार सुकून देने वाली है। यदि पुरुष को इस तरह के संबंध के बाद गिल्ट नहीं है तो स्त्री ही क्यों इस गठरी को ढोए ?

स्त्री अपनी ऊर्जा शुचिता को सलामत रखने में जाया नहीं करती, बल्कि 'जो हो गया वह मेरी मरजी' कह कर हवा में उड़ा देती है। वह अब ब्रेकअप के बाद आंसू भी नहीं बहाती। लिवइन रिलेशन के रिश्ते इसी श्रेणी में गिने जा सकते हैं।

आजकल शादियां देर से होती हैं और शरीर की अपनी मांग होती है। ऐसे में सिर्फ शादी के बाद पति के सामने शुचिता के सत्यापन के लिए आज की लड़कियां अपने आज के रोमांच को खत्म नहीं करना चाहतीं।

लड़कियों का बढ़ता आत्मविश्वास उन्हें हर अपराधबोध से बाहर ला रहा है। उन्हें खुल कर जीने का न्यौता दे रहा है और वे इसे स्वीकार भी कर रही हैं।

सरकार भी उन के पक्ष में कानून बना कर उन के पंखों को मजबूती दे रही है। आज महिलाएं अकेली यात्राएं कर रही हैं, अपनी संपत्ति बना रही हैं, पहाड़ों पर चढ़ रही हैं, आसमान में उड़ रही हैं, सागर की गहराई नाप रही हैं आदिआदि।

सब से बड़ी और सकारात्मक बात यह है कि बलात्कार और एसिड अटैक जैसे हादसों के बाद भी महिलाएं आज मुसकरा कर जी रही हैं, यानी, शुचिता के सत्यापन को नकार रही हैं और शुचिता की आड़ में अपने ऊपर जबरन शासन किए जाने को अस्वीकार कर रही हैं।

यही बदलाव तो चाहिए था। ●

जंगलों, झरनों, गुफाओं की मौजूदगी से झारखंड पर्यटन का खास केंद्र

बन रहा है और जब भी मौका मिले अपने प्रोग्राम में जरूर शामिल करें। यहां खनिज भी प्रचुर मात्रा में निकलता है।

झारखंड की विरासत शानदार है। यहां ऐसे खूबसूरत पर्यटन स्थल हैं जो न सिर्फ शहरों की चिल्लपों से

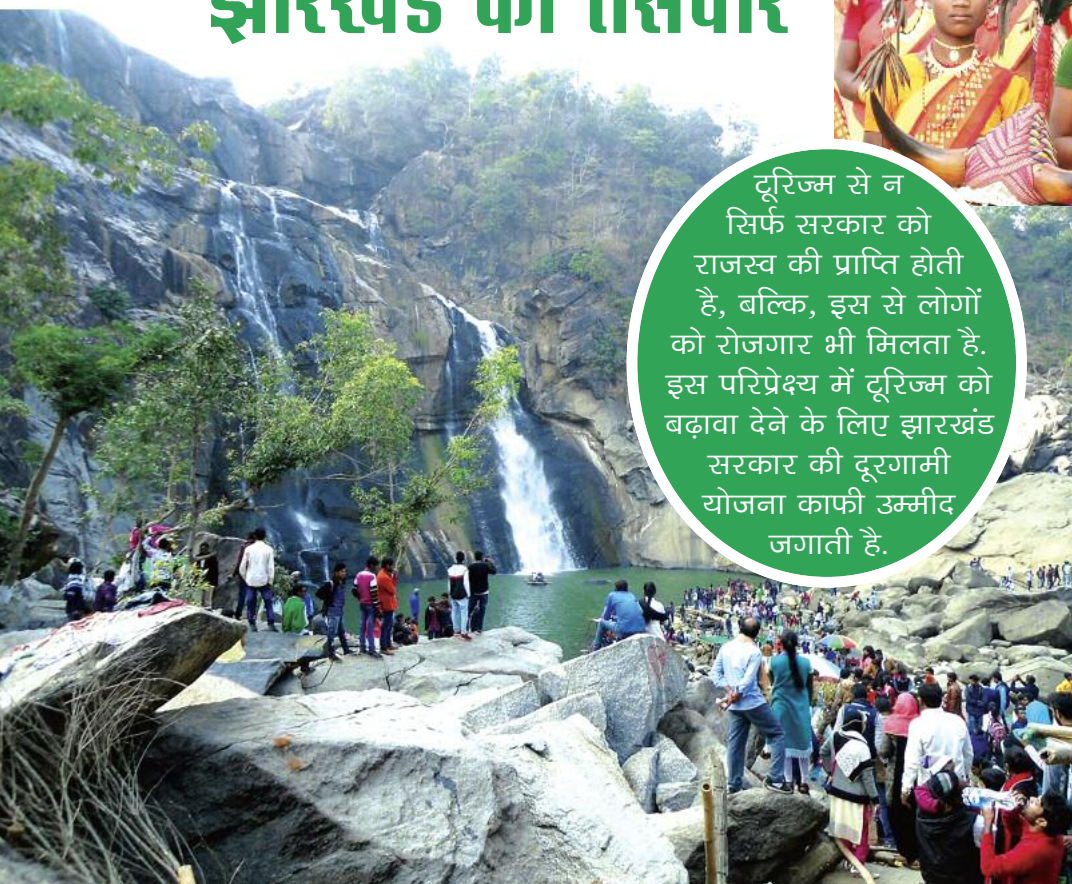
मानसिक राहत देते हैं, बल्कि यहां की आदिवासी लोकसंस्कृति को जानने का अवसर प्रदान भी करते हैं।

जमशेदपुर की जुबली लेक भीड़भाड़ की हौचपौच से दूर है। रांची की लंगभग 2,140 फुट ऊंची खूबसूरत पहाड़ियां पूरे शहर का दीदार कराती हैं। नेतरहाट, जिसे 'छोटानागपुर की रानी' कहा जाता है, से सूर्योदय और सूर्यास्त पौइंट देखना

पर्यटन से बदलेगी झारखंड की तसवीर



टूरिज्म से न सिर्फ सरकार को राजस्व की प्राप्ति होती है, बल्कि, इस से लोगों को रोजगार भी मिलता है। इस परिप्रेक्ष्य में टूरिज्म को बढ़ावा देने के लिए झारखंड सरकार की दूरगामी योजना काफी उम्मीद जगाती है।



अद्भुत है. यह प्रकृति से प्यार करना सिखा देता है.

हजारीबाग की ऐतिहासिक पाषाणकालीन गुफाएं हैं, हुंडरू, जोन्हा, दशम और पंचघाघ जलप्रपातों से मन सराबोर हो उठता है. बेतला अभयारण्य, दलमा अभयारण्य, बिरसा जैविक उद्यान तो घूमते ही बनते हैं. यहां कई संग्रहालय, स्तूप, उद्यान, धार्मिक व दर्शनीय स्थल हैं जो सुखद अनुभव देते हैं.

वे आगे कहते हैं, “झारखंड अब होटल अशोका का एक बड़ा शेयर होल्डर हो गया है और इस के साथ ही टूरिज्म की दिशा के रास्ते भी खुल गए हैं.”

इस बीच, पर्यटन विभाग की सचिव पूजा सिंघल ने भी होटल अशोका में आईटीडीसी की करीब 51 फीसदी हिस्सेदारी की बात कही, जिस के स्वामित्व को ले कर जेटीडीसी और



झारखंड में हेमंत सरकार पर्यटन क्षेत्र में काफी ध्यान दे रही है. हाल ही में झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने इस दिशा में काम करने को ले कर अपनी इच्छाएं और योजना बताई.

उन्होंने कहा, “बीते 20 सालों में हम कुछ कदम विकास की ओर चले तो हैं लेकिन कई ऐसे अनछुए क्षेत्र हैं जिन की विकास की रूपरेखा अभी तैयार करनी है. उन में से टूरिज्म एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है और राज्य में इस से रोजगार की असीम संभावनाएं हैं.”



आईटीडीसी के बीच एमओयू साइन किया गया है. करीब 25 हजार शेयर अब झारखंड के स्वामित्व में आ चुके हैं, जो पर्यटन क्षेत्र को लाभ पहुंचाएंगे.

ऐसे में अगर सरकार की इस पहल से पर्यटन क्षेत्र में तेजी आती है तो झारखंड के गिरीडीह, देवघर, साहिबगंज, कैनरी हिल, सूर्यकुंड, कोनार डैम, दलमा हिल्स, ट्राइबल कल्चरल सेंटर, हुंडरू फाल्स, दशम फाल्स इत्यादि अनेक स्थलों में यथासंभव रौनक तो बढ़ेगी ही, साथ ही, राज्य को आय प्राप्त होगी और लोगों को रोजगार के अवसर मिलेंगे.

—प्रतिनिधि •

करें खुद को मोटिवेट

• वंदना बाजपेयी

जीवन में कुछ हासिल करना है या आगे बढ़ना है तो खुद पर भरोसा होना जरूरी है. आज प्रतियोगिता इतनी बढ़ गई है कि कई बार व्यक्ति को हताशा का सामना करना पड़ जाता है. कई बार खुद की हार से आत्महत्या करने जैसा खयाल भी आ जाता है. ऐसे में जब तक खुद को मोटिवेट न किया जाए तो चीजें सामान्य नहीं हो पातीं.



मेरे नाना अक्सर एक कहानी सुनाया करते थे. कहानी इस प्रकार थी, 'एक गांव में एक गरीब लड़का रहता था. उस का नाम मोहन था. मोहन बहुत मेहनती था. काम की तलाश में वह एक लकड़ी के व्यापारी के पास पहुंचा. उस व्यापारी ने उसे जंगल से पेड़ काटने का काम दिया. नई नौकरी से मोहन बहुत उत्साहित था. वह जंगल गया और पहले ही दिन 18 पेड़ काट डाले. व्यापारी ने मोहन को शाबाशी दी. शाबाशी सुन कर मोहन गद्गद हो गया. अगले दिन वह और ज्यादा मेहनत से काम करने लगा. इस तरह 3 सप्ताह बीत गए. वह बहुत मेहनत से काम करता, लेकिन यह क्या, अब वह केवल 15 पेड़ ही काट पाता था.

व्यापारी ने कहा, 'कोई बात नहीं, मेहनत करते रहो.'

2-3 सप्ताह और बीत गए. ज्यादा अच्छे परिणाम पाने के लिए उस ने और ज्यादा जोर लगाया. लेकिन केवल 10 पेड़ ही ला सका. अब मोहन बड़ा दुखी हुआ. वह खुद नहीं समझ पा रहा था क्योंकि वह रोज पहले से ज्यादा काम करता लेकिन पेड़ कम काट पाता.

हार कर उस ने व्यापारी से ही पूछा, 'मैं सारे दिन मेहनत से काम करता हूं, लेकिन फिर भी क्यों पेड़ों की संख्या कम होती जा रही है?'

व्यापारी ने कहा, 'तुम ने अपनी कुल्हाड़ी को धार कब लगाई थी.'

मोहन बोला, 'धार... मेरे पास तो धार लगाने का समय ही नहीं बचता. मैं तो सारे दिन पेड़ काटने में ही व्यस्त रहता हूं.'

व्यापारी ने कहा, 'बस, इसीलिए तुम्हारी पेड़ों की संख्या दिनप्रतिदिन घटती जा रही है.'

यही बात हमारे जीवन पर भी लागू होती है, हम रोज सुबह नौकरी, व्यापार व कोई अन्य काम करने जाते हैं या कई बार हम कोई काम बहुत जोश से शुरू करते हैं. धीरेधीरे वह काम हमें रूटीन लगने लगता है और हम उस काम को केवल 'करने के लिए' करने लगते हैं. पर उस



को करने का पहले जैसा जोश और जून खोने लगता है। जब ज्यादा मेहनत करने के बाद भी हम उतने अच्छे परिणाम नहीं दे पाते हैं तब हमें जरूरत होती है मन की कुल्हाड़ी को धार देने की, यानी खुद को मोटिवेट करने की, ताकि हम उतने ही समय में उत्साह के साथ ज्यादा से ज्यादा काम कर सकें।

प्रेरणा के अभाव में धीरेधीरे बड़े उत्साह के साथ पढ़ने के लिए स्टडी टेबल के पास चिपकाए गए टाइम टेबल मात्र शोपीस बन कर रह जाते हैं। ऑफिस से नोटिस मिल जाता है व व्यवसाय घाटे के साथ डूबने लगता है। ऐसे समय में जरूरी है कि हम खुद को मोटिवेट करें और उत्साहहीनता व निराशा से बाहर निकलें।

जब काम बोझिल लगने लगे तो अपनेआप से 2 प्रश्न करने चाहिए- पहला, क्या आप जिस लक्ष्य को प्राप्त करना चाहते हैं उस को पाने के लिए कोई प्रेरणा उत्प्रेरक की तरह काम कर रहे हैं? और दूसरा, आप खुद को उस लक्ष्य को पाने के लिए काम में अपनी ऊर्जा झोंक पाते हैं?

यहां ध्यान देने योग्य बात यह है कि किसी काम को करने की इच्छा रखना या उस काम को करने के लिए खुद को इतना मोटिवेट करना कि काम हो जाए, ये 2 अलग बातें हैं। यही वह अंतर भी है जिस से एक लक्ष्य ले कर काम करते 2 व्यक्तियों में से एक को सफल व दूसरे को असफल घोषित किया जाता है। दरअसल, सैल्फ मोटिवेशन वह जादू है जो हमें जिंदगी में सफल करता है। सैल्फ मोटिवेशन वह आंतरिक बल है जो हमें लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आगे बढ़ाता है। जब हम ऐसी मनोदशा में होते हैं कि 'काम छोड़ दें', 'अब नहीं हो पा रहा' या 'काम कैसे शुरू करें' तब सैल्फ

मोटिवेशन ही हम को आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। सैल्फ मोटिवेशन वह हथियार है जो आप को अपने सपनों को पाने, अपने लक्ष्य को हासिल करने व सफलता के मंच को तैयार करने में मदद करता है।

अगर आप को रह रह कर यह लगता है कि आप जो काम कर रहे हैं उस को करने में आप को मजा नहीं आ रहा है या किस दिशा में आगे बढ़ें, यह सूझ नहीं रहा, तो आप निश्चितरूप से उत्साहहीनता के शिकार हैं। अगर ऐसा है भी, तो सब से पहले तो आप यह समझ लें कि उत्साहहीनता या निराशा का शिकार होने वाले आप अकेले नहीं। हर कोई अपने जीवन में कभी न कभी इस का अनुभव करता है चाहे वह मोटिवेशनल गुरु ही क्यों न हो। निराशा में सदा घिरे रहने के स्थान पर इस में सुलग बना कर बाहर निकलना आना चाहिए।

समझिए स्वप्रेरणा के आंतरिक व बाह्य कारणों को सैल्फ मोटिवेशन के लिए आप को यह समझना बहुत जरूरी है कि आप को प्रेरणा कहां से मिलती है या वे कौन से कारण हैं जिन से प्रेरित हो कर आप ने वह काम करना शुरू किया है। ये कारण 2 प्रकार के हो सकते हैं- आंतरिक व बाह्य। आंतरिक कारणों में यह आता है कि आप वास्तव में उस काम से प्यार करते हैं, उसे करे बिना आप को अपना जीवन अधूरा लगता है। जब आप निराश हों तो अपने उसी प्यार को जगाइए, जिस के ऊपर हलका सा कुहरा छा गया है। फिर देखिएगा, झूम कर बरसेंगे सफलता के बादल।

बाह्य कारणों में पैसा या पावर आते हैं। ज्यादातर वे लोग जिन्होंने बचपन में बहुत गरीबी देखी होती है या शोषण झेला होता

हैं वे ऐसे ही कामों के प्रति आकर्षित होते हैं जहां ज्यादा पैसा या पावर मिले। कुछ लोग नाम कमाना चाहते हैं, यह भी बाह्य कारण है। आंतरिक कारण जहां खुद ही आसानी से प्रेरित करते हैं वहीं बाह्य कारणों के लिए हमें उन परिस्थितियों को बारबार याद करना पड़ता है जिस कारण हम ने वह काम करना शुरू किया था।

हिम्मत न हारिए

जीवन सत्य है कि दिन और रात की तरह परिस्थितियां भी सदा एकसमान नहीं रहतीं। कभी कम कभी ज्यादा, प्रकृति का नियम है। उत्साह भी कोई ऐसी चीज नहीं है जो हमेशा आप के साथ रहे। यह आताजाता रहता है। जब जाता है तो दुखी न हों। इस बात को समझिए कि भले ही इस समय आप निरुत्साहित महसूस कर रहे हैं, पर यह स्थिति हमेशा नहीं रहने वाली।

घबराने व निराश होने की जगह कुछ समय के लिए दिमाग को उस काम में लगाइए जिस में आप का मन रमता हो, जैसे संगीत, चित्रकारी, बागबानी आदि।

घबराने और निराश होने की स्थिति में अपने को रिलैक्स करने का सब से अच्छा तरीका है स्वयं को उस काम में लगा लें जिस में आप की रुचि हो।



ताकि, आप पूरी तरह रिलैक्स हो सकें। अब बस, अपने लक्ष्य से जुड़े रहिए और पहले जैसे उत्साहजनित प्रेरणा के वापस आने का इंतजार कीजिए। इस दौरान अपने लक्ष्य के बारे में पढ़िए, चिंतन करिए, कुछ सार्थक योजनाएं बनाने का प्रयास करिए।

आशावादी रहिए

नकारात्मक विचार आप की पूरी ऊर्जा चुरा लेते हैं। पस्त हौसलों से किले नहीं ध्वस्त किए जाते हैं। मुझे अकसर याद आती है, 'चिकन सूप फौर सोल' की एक सत्यकथा जिस में एक क्षतिग्रस्त स्पाइन वाली लड़की से हर डाक्टर ने कह दिया था कि अब तुम कभी चल नहीं पाओगी। निराशहताश लड़की के मित्र ने उसे समझाया कि 'इन डाक्टर्स ने तुम्हारी बीमारी का इलाज तो किया नहीं अलबत्ता एक चीज तुम से चुरा ली।

“क्या?” लड़की ने पूछा।

“होप,” लड़के ने उत्तर दिया।

तब, उस लड़की ने अपनी आशा को फिर से जाग्रत किया और अपने पैरों पर चल कर मैडिकल साइंस को फेल कर दिया। अगर आप सदैव अपने लक्ष्य के प्रति आशावादी रहते हैं तो यह आशा ही आप की प्रेरणा बन जाएगी। अगर कभी नकारात्मक विचार आए भी, तो उस पर ज्यादा मत सोचिए।

एक ही साथ सब सधे

जब आप एकसाथ कई कामों को हाथ में ले लेते हैं तो आप का किसी खास काम के प्रति ध्यान का विकेंद्रीकरण हो जाता है। इस से आप कोई भी लक्ष्य हासिल नहीं कर पाते और आसानी से उत्साहहीनता के शिकार हो जाते हैं। 'जैक

औफ औल ट्रेड्स मास्टर औफ नन' बनने से अच्छा है, हम अपने कामों की प्राथमिकताएं तय करें. अगर आप को लग रहा है कि आप का काम के प्रति उत्साह कम हो गया है तो अपने दिमाग को चारों तरफ दौड़ाने की जगह एक समय में केवल एक लक्ष्य पर लगा लीजिए. इस से आप का ध्यान व उर्जा एक ही स्थान पर खर्च होगी जिस से आप आसानी से उस लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं. सफलता की खुशी में आप दूसरे लक्ष्यों पर भी खुशमन से अपनी ऊर्जा खर्च कर सकते हैं.

हौसले बढ़ते हैं आप की परवाज देख कर

निराशा के दौर में ज्यादा से ज्यादा उन लोगों के बारे में पढ़ें, सोचें और बात करें जो सफल हैं. जिन्होंने अपना लक्ष्य पा लिया है. अच्छी-अच्छी प्रेरणादायी किताबें पढ़िए, उन की जीवनी व संघर्ष पर ध्यान दीजिए. आप देखेंगे कि हर सफल व्यक्ति असफल हुआ है. पर उस ने असफलता पर रोते हुए आगे चलना बंद नहीं किया और धीरे-धीरे मंजिल को प्राप्त किया. उन की जीवनी आप के लिए उत्प्रेरक का काम करेगी. मन में हौसला उत्पन्न होगा कि 'जब वे पा सकते हैं तो मैं क्यों नहीं.' रोज-रोज इस प्रक्रिया को दोहराने से आप के मन में भी अपने लक्ष्य को पाने का उत्साह जागेगा.

नन्हे-नन्हे कदम नापते हैं जहां

ज्यादातर उत्साहहीनता तब उत्पन्न होती है जब आप बहुत बड़े-बड़े लक्ष्य बनाते हैं और उन्हें नहीं पा पाते. आप निराश हो कर सोचने लगते हैं, 'अरे लक्ष्य तो हासिल हो नहीं पाएगा, तो

प्रयास ही क्यों किया जाए.' कभी अपने बचपन को याद करिए जब आप चलना सीख रहे थे. मां आप से थोड़ी दूर खड़ी हो जाती थी और आज्ञा, आज्ञा कहती थी. आप हिम्मत करते हुए छोटे-छोटे डग भरते हुए मां के पास पहुंच जाते थे और अपनी इस उपलब्धि पर खुश होते थे. अभी भी यही करना है. अपने लक्ष्य को



काम में सफलता चाहते हैं तो अपना ध्यान अपने लक्ष्य पर लगा दें, सफलता खुद आप के पास आती नजर आएगी.

छोटे-छोटे हिस्सों में बांट लें. जैसे कैसे आप इन्हें पूरा करते जाएं, तो खुद को शाबाशी दें. धीरे-धीरे आप का उत्साह वापस आता जाएगा.

अपनों की खुशी में ढूंढिए प्रेरणा

आप के अंदर प्रेरणा की चिनगारी नहीं जल पा रही है, तो अपनी योजना को किसी अपने को बताइए जिस के साथ आप अपनी सफलता बांटना चाहते हों. वह व्यक्ति आप का मित्र, पत्नी, बच्चे या हितैषी कोई भी हो सकता है.

आप की सफलता की योजना से जरूर उस व्यक्ति की आंखों में चमक आ जाएगी। वह भी आप की सफलता को आप के साथ मनाना चाहेगा। जिस तरह से एक जुगनू क्षणभर में अंधकार को चुनौती दे देता है वैसे ही अपनों के स्नेह व उन को खुश देखने की इच्छा आप को अपने काम को अच्छे तरीके से करने की प्रेरणा देगी।

कल्पनाशील बनिए

खुद को प्रेरित करने का यह सब से आसान व कारगर तरीका है। आप जो लक्ष्य हासिल करना चाहते हैं उस को प्राप्त करने की कल्पना करिए। कल्पना में देखिए (विजुअलाइज करिए) कि आप ने सफलता हासिल कर ली है। सोचिए, अब आप को कैसा महसूस हो रहा है। अब आप प्रकृति को धन्यवाद दे रहे हैं या परिवार और बच्चों के साथ पार्टी कर रहे हैं। जो लोग आप के करीब हैं वे कितने खुश हैं। निश्चित मानिए कि यह क्रिया आप के लिए प्रेरणा का काम करेगी और आप उत्साह से भर जाएंगे।

अपने लक्ष्य की घोषणा सार्वजनिक रूप से करिए

जब आप अपना लक्ष्य समाज के सामने बता देते हैं तो आप के ऊपर यह दबाव रहता है कि इस काम को पूरा करना ही है अन्यथा आप सार्वजनिक निंदा के पात्र बनेंगे। कौन चाहता है कि लोग उस की खिल्ली उड़ाएं, पीठ पीछे कहें कि 'बड़े चले थे यह काम करने, अब देखो।' आप भी ऐसी बातें सुनना नहीं चाहते होंगे, न यह चाहते होंगे कि आप की वजह से आप को या आप के परिवार को नीचा देखना पड़े। पर यह

सामाजिक दबाव एक उत्प्रेरक का काम करता है। अपने को समाज की नजरों में ऊंचा उठाने के लिए आप खुद को पूरी तरह से झोंक देते हैं। सफलता का इस से बड़ा कोई मूल मंत्र नहीं है। यहां यह बात ध्यान देने की है कि एक बार बता कर छोड़ मत दीजिए बल्कि हफ्तेपंद्रह दिनों में अपडेट भी करते रहिए।

समान जीवन वाले लोगों का रूप बनाइए

‘संगति ही गुण उपजे संगति ही गुण जाए,’ मान लीजिए, आप ने कोई लक्ष्य बना लिया और मेहनत भी शुरू कर दी है, पर आप का जिन लोगों के बीच उठनाबैठना है वे कामचोर हैं या दिनरात गपबाजी में दिन व्यतीत करते हैं तब आप अपना उत्साह ज्यादा दिन तक बरकरार नहीं रख पाएंगे। वहीं, अगर आप ऐसे लोगों के साथ हैं जो धुन के पक्के हैं और अपने लक्ष्य को पाने के लिए दिनरात नहीं देखते, कठोर परिश्रम करते हैं तो आप का मन भी उत्साह से भर जाएगा और एक कर्मठ शूरवीर की तरह आप कार्यक्षेत्र में जुट जाएंगे।

अपने समान लक्ष्य वाले लोगों से मिलतेजुलते रहिए

जो लोग आप के समान ही लक्ष्य रखते हैं उन से महीनेपंद्रह दिनों में मिलते रहिए। इस से आप उन की सफलता से अपडेट होते रहेंगे या उन्होंने कैसे प्रयास किया, इस बात की जानकारी आप को होती रहेगी। असफल लोग क्या गलती कर रहे हैं, यह देख कर आप का स्वयं द्वारा की जाने वाली गलतियों पर ध्यान जाएगा। इस के अतिरिक्त, इस विचारविमर्श से नए तथ्य उभर कर सामने

आएंगे. उदाहरण के तौर पर, अगर आप गाना सीख रहे हैं तो साधारण श्रोता आप के गायन की वाहवाही करेंगे. पर गायकों की महफिल में आप को एकएक सुर पर चर्चा करने से सही आरोहअवरोह पकड़ने में मदद मिलेगी. साथ ही, समकालीन अच्छे गायकों से स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना जाग्रत होगी, जिस से आप को और बेहतर गाने की प्रेरणा मिलेगी.

खुद को इनाम दीजिए

‘इनाम, वह भी खुद को?’ अजीब लगता है पर सैल्फ मोटिवेशन का बहुत कारगर तरीका है. अपने लक्ष्य को कई छोटे हिस्सों में बाँटिए. और हर हिस्से के पूरा होने पर एक इनाम रखिए. वह इनाम महज इतना भी हो सकता है कि काम का इतना हिस्सा पूरा होने के बाद एक कप कौफी पिएंगे. देखिएगा वह कौफी रोज की कौफी से अलग ही

स्वाद देगी. उस में जीत का नशा जो मिला होगा. आप यह भी इनाम दे सकते हैं कि इतना काम पूरा होने के बाद नई खरीदी किताब पढ़ेंगे, या कोई पसंदीदा काम करेंगे. कुछ भी हो, अपनी छोटीछोटी जीत को सैलिब्रेट करिए. इस से आप को आगे काम पूरा करने की जबरदस्त प्रेरणा मिलेगी.

अपनी योजनाओं की तिथिवार डायरी बनाइए

आप कौन सा काम कब करना चाहते हैं, इस की तिथिवार डायरी बनाइए, जैसे

आप लेखक हैं तो आप की डायरी कुछ यों बनेगी—

नया काव्य संग्रह— (....) मार्च तक.

कथा संग्रह— (....) पुस्तक मेले तक.

प्रकाशित लेख आदि का संग्रह—(....)दिसंबर तक.

इस डायरी को बारबार पलटिए और अपने निश्चय को पक्का करते रहिए. यह आप को अदृश्य प्रेरणा से नवाजता रहेगा.



अपने समान लक्ष्य वाले लोगों से मिलते रहिए, इस से आप उन की सफलता से अपडेट होते रहेंगे.

अगर आप वास्तव में किसी काम को करना चाहते हैं तो एक खूबसूरत वाक्य याद रखिए जो वाल्ट डिज्नी कहा करते थे, ‘मुझे नहीं लगता कि कोई भी पढ़ाई उस व्यक्ति के लिए असंभव होती है जिसे अपने सपनों को सच बनाने का हुनर आता है.’ सपनों को सच बनाने का हुनर निर्भर करता है सैल्फ मोटिवेशन पर. इसलिए जब लगे कुछ मनमुताबिक नहीं हो रहा है, तो कुछ पल ठहरिए. अपने आप को मोटिवेट करिए. फिर देखिए चमत्कार. एकएक कर के सफलता के दरवाजे आप के लिए खुलते चले जाएंगे. ●

दिल्ली प्रैस

तथ्य, तर्क, तकनीक, विज्ञान

ये आपके सुखद, स्वस्थ जीवन
के लिए आवश्यक हैं

धर्म, पाखंड, अंधविश्वास,
जाति और रंग को
फिर से हावी न होने दें

सरिता गृहशोभा

सरस
सलिल

चंपक

सदा से जागरूकों की पत्रिका

पतिपत्नी के रिश्ते में कायम रखें रोमांस

• किरण आहूजा

पतिपत्नी के बीच अच्छे रिश्ते का होना एक सुखद एहसास होता है, जिसे दुनिया का हर व्यक्ति पाना चाहता है।

सुमित और पूजा के विवाह को हुए 10 साल बीत चुके हैं। लेकिन दोनों के बीच का प्यार देख कर लगता है जैसे कुछ ही अरसा हुआ है। दोनों का कहना है कि आज भी दोनों अपने रिश्ते में वही ताजगी और नयापन महसूस करते हैं जैसे शुरुआती दिनों में। दरअसल, उन्होंने अपने रिश्ते को बोझिल नहीं बनने दिया। एकदूसरे की खुशी का खयाल रखा। सिर्फ शारीरिक नहीं, भावनात्मक रिश्ता इतना मजबूत बनाया हुआ है कि उस में 'मैं' की भावना नहीं है। लेकिन हर पतिपत्नी सुमित और पूजा की तरह खुशमिजाज नहीं होते।

अकसर पतिपत्नी में विवाह के कुछ वर्षों बाद ही आपसी झगड़े, तेरामेरा, रूठनामनाना शुरू हो जाता है। ऐसा नहीं है कि पतिपत्नी के रिश्ते के बीच में छिटपुट झगड़े, रूठनामनाना हो ही न, लेकिन, किस तरह के हों और उन्हें कैसे खत्म किया जाए, यह माने रखता है।

खराब रिश्ते की सब से बड़ी निशानी है एकदूसरे के साथ रहने के बाद भी खुश न रह पाना। साथी को खुश करने का सिर्फ यही मतलब नहीं है कि अपने पार्टनर की

सारी बात मान लें बल्कि अपने साथी के साथ हंसीमजाक करने से भी खुशी मिलती है। देखा जाता है जिन कपल्स के बीच कुछ समय तक साथ रहने के बाद हंसीमजाक नहीं हो पाता है, उन को एकदूसरे के साथ बोरियत होने लगती है।

प्यार व रोमांस की वजह से ही हर रिश्ता कामयाब होता है। आइए जानें कैसे बनते हैं पतिपत्नी के बीच मजबूत रिश्ते। बातें आसान हैं लेकिन मन को छू जाने वाली हैं।

एकदूसरे को पूरा समय देना : पतिपत्नी के रिश्ते को गहरा करने के लिए एकदूसरे के साथ समय बिताएं। उन की बातें सुनें, उन्हें जानने की कोशिश करें। साथी के साथ समय बिताते समय ध्यान रखें कि आप जितना उन को सहज महसूस करवाएंगे उतना ही आप दोनों का रिश्ता करीब होगा और रिश्ते में मजबूती आएगी।

साथी की अहमियत समझें : जिस तरह का बरताव आप अपने साथी से करेंगे वैसा ही वह भी करेगा। इसलिए एकदूसरे की रिसपैक्ट करें। खुद को सही साबित करने के चक्कर में अपने पार्टनर



की इंसल्ट न करें और न ही नीचा दिखाने की कोशिश करें. रिश्ते की शुरुआत में आप दोनों ने एकदूसरे को खुश रखने का वादा किया था, इसलिए दोनों को एकदूसरे की जरूरतों को पूरा करना होगा और अपने होने का एहसास कराना होगा.

एकदूसरे को धोखा न देना : दांपत्य की नींव है विश्वास जिस पर पतिपत्नी

का रिश्ता टिका होता है. इस में एक बार शक घर कर जाए तो नींव में ऐसा घुन लगता है कि वह चरमरा जाती है. एकदूसरे की बातों पर विश्वास करना और धोखा न देना ही रिश्ते को सफल बनाता है.

रिश्ते में खुलापन रखें : पतिपत्नी के रिश्ते में खुलापन बहुत जरूरी है ताकि

दोनों अपनी कोई भी बात कहने में झिझकें नहीं. अगर आप की कोई फरमाइश है तो अपने पार्टनर को बताएं. यह न सोचें कि वह आप के कहे बगैर ही समझ जाए, हर कोई अंतर्धामी नहीं होता.

तारीफ जरूरी है : अपने साथी की खूबियों की तारीफ करें और इस तारीफ को हो सके तो घरवालों के सामने भी

सरप्राइज दें : अपने साथी की रुचियों को समझें और उस में अपनी रुचि दिखाएं, इसलिए बीचबीच में पार्टनर को सरप्राइज जरूर दें. अगर आप के पार्टनर को लॉगड्राइव का शौक है तो कभीकभी उसे बिना बताए लॉगड्राइव का प्रोग्राम बना सकते हैं. छोटेछोटे गिफ्ट सरप्राइज भी दे सकते हैं जिस से आप का बजट भी



पार्टनर को कभीकभी सरप्राइज गिफ्ट दें, यह खुशी उस में नया जोश भर देगी.

कहें. इस से आत्मविश्वास बढ़ता है. यही नहीं, उस की कमजोरियों को दूर करने में उन की मदद करें.

अपशब्द न बोलें : कई बार किसी मामूली बात को ले कर भी झगड़ा हो जाता है. ऐसे में अपने साथी को अपशब्द बोलने से बचें और बातचीत बंद न करें. इस से रिश्ता खराब होता है. इसलिए तर्कवितर्क करते समय आपा न खोएं.

माफी मांगना सीखें : 'सौरी' छोटा सा शब्द है. लेकिन यह बिगड़ी बात बना देता है. इसलिए, गलती होने पर माफी जरूर मांग लें. इस से झगड़ा आगे नहीं बढ़ता.

न बिगड़े और पार्टनर भी सरप्राइज देख कर खुश हो जाए.

प्यार को कभी खत्म न होने दें : 'आई लव यू'. 3 शब्दों का यह वाक्य सारे गुस्से को खत्म कर देता है. इसलिए, इसे कहने से न चूकें. शादी को तरोताजा, जोश से भरने के लिए डेटिंग जैसी चीज को खत्म न करें. डेटिंग आप को पुराने वाले दिन लौटा देती है. पुरानी यादें ताजा होती रहती हैं. सब परेशानी घर पर छोड़ कर रात को दोनों कभी डिनर पर जाएं. यह संभव न हो, तो दिन में दोनों कहीं साथ में वक्त गुजारें. जिंदगी में कुछ लमहे अपने लिए जीने बहुत जरूरी हैं. ●

ऐसे नीलाम है इंसाफ

ऐसे नीलाम है इंसाफ,
कचेहरियों के अंदर,
कुचला जाता है स्वाभिमान,
आरोपप्रत्यारोप की दलीलों में,
लड़खड़ाता है सम्मान,
मानवता हो जाती है बंजर,
ऐसे नीलाम है इंसाफ.

बिक जाती है बुद्धि
नोटों की ताकत से,
सचाई डरीडरी रहती है,
ऐसे नीलाम है इंसाफ.

आरोपी 56 इंच का सीना फुलाए,
सचाई को जमीन पर थूकते हैं,
उस दिन एक मां की मिलकीयत,
होती है बदनाम सरेआम,
ऐसे नीलाम है इंसाफ.

आवाज उठाने की सजा,
सुधिजन और
गुंडा मिल कर सुनाते हैं,
आबरू को शराब में निगल जाते हैं,
और प्रश्नों की कतार,
कठघरों में छोड़ जाते हैं,
ऐसे नीलाम है इंसाफ.

मानवता को नीलामी से कोई,
न बचा पाता है,
खामोशी से दूरदर्शन किया जाता है,
अफसोस करते हैं
कुछ गुणीजन बैठ कर,
जब खुद के साथ,
इतिहास दोहराया जाता है,
ऐसे नीलाम है इंसाफ.

सूटबूट में सुसंस्कृत हैं नजर आते,
जब मुंह खोलते हैं,
तो भाव हैं नजर आते,
जैसे विचार होते हैं,
वैसे प्रकट नहीं किए जाते,
ऐसे नीलाम है इंसाफ.

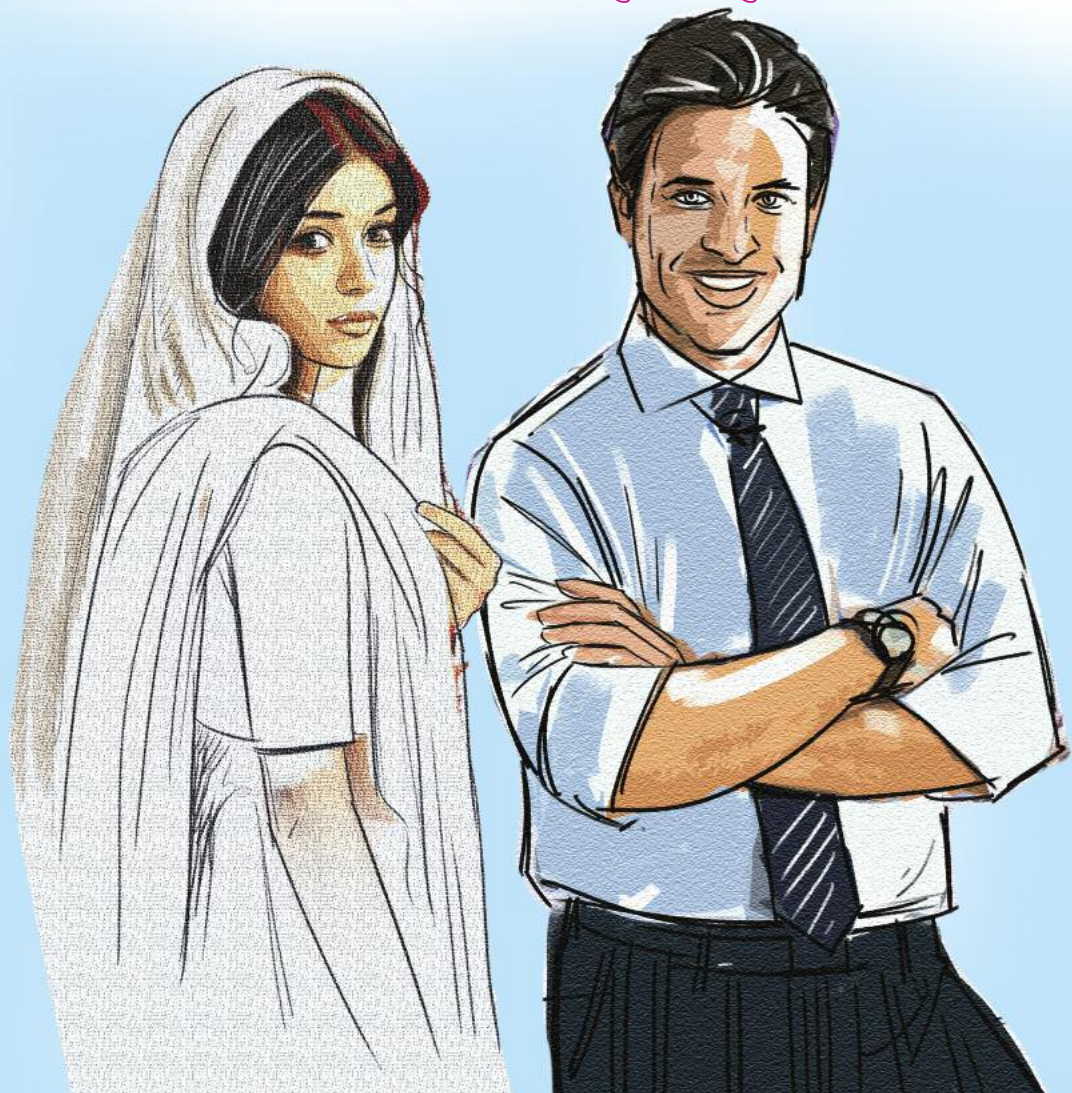
● आंचल यादव



दूसरा विवाह

• मिनी सिंह

विशाल के साथ ऑफिस आनेजाने व उस के अकसर घर आते रहने से सोनाक्षी को प्रेमरोग लग गया था. भाभी लीना ने भी महसूस किया था कि भोली ननद और उस के ऑफिस के साथी के बीच दोस्ती ही नहीं, इश्क भी है. लेकिन विशाल के मन में क्या चल रहा था, इस का खुलासा जब हुआ, तब...



सोनाक्षी 'बाय' बोल कर ऑफिस जाने लगी, तभी उस की भाभी लीना ने उसे रोका और खाने का डब्बा थमा दिया, जिसे वह आज भी भूल कर जा रही थी। मगर वह कहने लगी कि रहने दो, आज वह ऑफिस की कैटीन में खा लेगी।

“कोई जरूरत नहीं, ले कर जाओ। रोजरोज बाहर का खाना सेहत के लिए ठीक नहीं होता, झूठमूठ का गुस्सा दिखाती हुई लीना बोली, “मां को बताऊं क्या?”

“अच्छाअच्छा, ठीक है, लाओ, पर मां

को कुछ मत बताना, वरना उन का भाषण शुरू हो जाएगा。” उस की बात पर लीना मुसकरा पड़ी और खाने का डब्बा उसे थमा दिया।

सोनाक्षी और लीना थीं तो ननदभाभी लेकिन दोनों सखियों जैसी थीं जिन्हें हर बात बेझिझक बताई जा सकती है। “प्लीज भाभी, मां को मत बताना कि कभीकभार मैं कैटीन में खा लेती हूं, वरना वह गुस्सा करेंगी,” सोनाक्षी बोल ही रही थी कि विशाल उस के पीछे आ कर खड़ा हो गया।

लीना जानती थी वह कुछ न कुछ बोलेगी ही विशाल के बारे में और फिर दोनों के बीच बहसबाजी शुरू हो जाएगी। और वही हुआ भी। सोनाक्षी कहने लगी, “अब मैं निकलती हूं, वरना विशाल, गला फाड़ कर सोनाक्षीसोनाक्षी चिल्लाने लगेगा। अजीब इंसान है, कितनी बार कहा है नीचे से आवाज मत लगाया करो, सब सुनते हैं, पर नहीं, अक्ल से दिवालिया जो ठहरा, समझता ही नहीं है。”

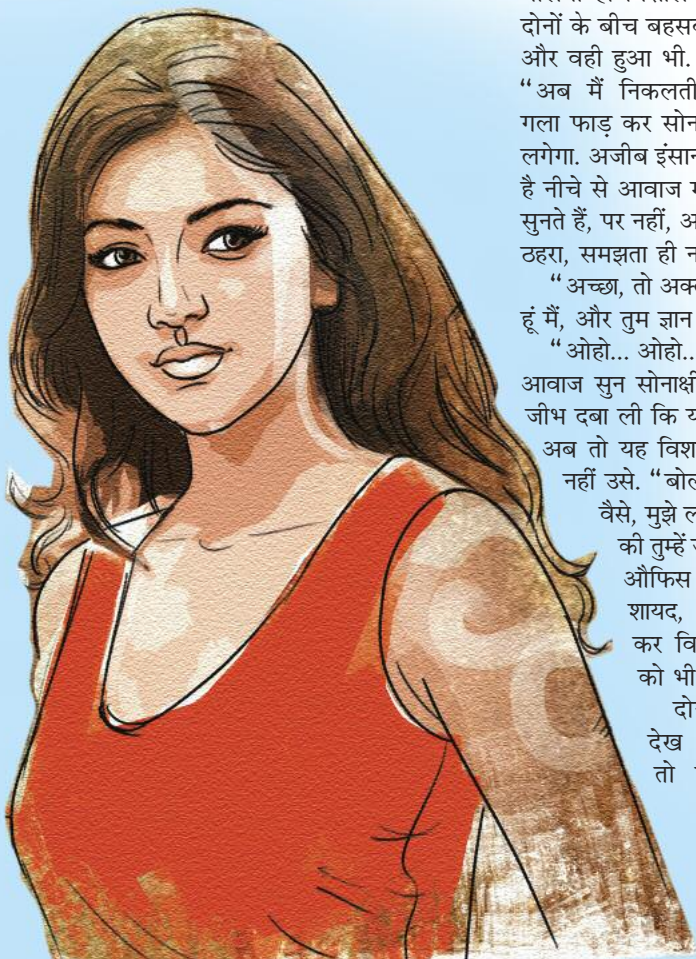
“अच्छा, तो अक्ल से दिवालिया इंसान हूं मैं, और तुम ज्ञान की पोटली,

“ओहो... ओहो...” पीछे से विशाल की आवाज सुन सोनाक्षी ने दांतों तले अपनी जीभ दबा ली कि यह क्या बोल गई वह।

अब तो यह विशाल का बच्चा छोड़ेगा नहीं उसे। “बोलो, चुप क्यों हो गई?

वैसे, मुझे लगता है दिमागी इलाज की तुम्हें जरूरत है क्योंकि आज ऑफिस बंद है। पता नहीं, शायद, आज ईद है?” बोल कर विशाल हंसा, तो लीना को भी हंसी आ गई।

दोनों को खुद पर हंस्ते देख सोनाक्षी को पहले तो बहुत गुस्सा आया,



लेकिन फिर दांत निपोरती हुई बोली, “हां भई, पता है मुझे, वह तो मैं तुम्हारा टैस्ट ले रही थी.”

“टैस्ट... ले रही थी या अपने दिमाग का टैस्ट दे रही थी?” जोर का ठहाका लगाते विशाल बोला, तो लीना हंसी रोक न पाई.

“वैसे, एक बात बताओ, क्या सच में तुम्हें पता नहीं था कि आज ऑफिस बंद है या मुझ से मिलने की बेताबी थी?” उस की आंखों में झांकते हुए विशाल बोला, तो शरमा कर सोनाक्षी ने अपनी नजरें नीची कर लीं.

सच बात तो यही है कि उसे सच में पता नहीं था कि आज ऑफिस की छुट्टी है. वह तो विशाल से मिलने को इतना आतुर रहती है कि ऑफिस जाने के लिए रोज वक्त से पहले ही तैयार हो कर उस की राह देखने लगती है और आज भी उस ने वही किया. जरा भी भान नहीं रहा उसे कि आज ऑफिस की छुट्टी है. वह तैयार हो कर विशाल की राह देखने लगी. विशाल के साथ बातें करना, उस के साथ वक्त गुजारना सोनाक्षी को बहुत अच्छा लगता है.

दरअसल, मन ही मन वह उस से प्यार करने लगी है और यह बात लीना भी जानती है कि सोनाक्षी विशाल को पसंद करती है. लेकिन घर में सब को यही लगता है कि दोनों सिर्फ अच्छे दोस्त हैं और कुछ नहीं. विशाल और सोनाक्षी एक ही ऑफिस में काम करते हैं और दोनों एकदूसरे को 2 सालों से जानते हैं. चूंकि दोनों एक ही ऑफिस में काम करते हैं इसलिए सोनाक्षी विशाल के साथ उस की ही गाड़ी में ऑफिस जातीआती है.

दोनों बातों में लगे थे. तब तक लीना

सब के लिए चाय बना लाई. वह अपनी चाय ले कर सोफे पर बैठ गई और उन की बातों में शामिल हो गई. लीना के हाथों की बनी चाय पी कर विशाल कहने से खुद को रोक नहीं पाया कि लीना के हाथों में तो जादू है. उस के हाथों की बनी चाय पी कर मूड फ्रेश हो जाता है.

सच में, लीना चाय बहुत अच्छी बनाती है, यह सब कहते हैं और सिर्फ चाय ही नहीं, बल्कि उस का हर काम फरफैक्ट होता है और यही बात विशाल को बहुत पसंद है. उसे गैरजिम्मेदार और कामों के प्रति लापरवाह इंसान जरा भी पसंद नहीं है. वह खुद भी अपनी जिम्मेदारी बखूबी निभाता है. लड़का है तो क्या हुआ? अपने घर के सारे काम वह खुद करता है और यह बात लीना को बहुत अच्छी लगती है.

लीना की बढ़ाई सुन कर मुंह बनाती हुई सोनाक्षी कहने लगी कि चाय वह भी अच्छी बना लेती है. तो चुटकी लेते हुए विशाल बोला, “हां, पी है तुम्हारे हाथों की बनी चाय भी, बिलकुल गटर के पानी जैसी,” उस की बात पर सब हंस पड़े और सोनाक्षी मुंह बनाते हुए विशाल पर मुक्का बरसाने लगी कि वह उस का मजाक क्यों बनाता है हमेशा?

कुछ देर और बैठ कर विशाल वहां से जाने को उठा ही था कि लीना ने उसे रोक लिया, यह बोल कर कि वह खाना खा कर ही जाए. लीना के इतने प्यार से आग्रह पर विशाल ‘न’ नहीं कह पाया. वैसे, विशाल यहां यह बताने आया था कि आज बुकफेयर का अंतिम दिन है, इसलिए वहां चलना चाहिए, लेकिन सोनाक्षी मूवी देखने के मूड में थी.

“मूवी? नहींनहीं, बेकार में 3 घंटे पकने से अच्छा है बुकफेयर चलना

चाहिए,” सोनाक्षी की बात को काटते हुए विशाल बोला. कब से विशाल बुकफेयर जाने की सोच रहा था पर ऑफिस के कारण जा नहीं पा रहा था. आज छुट्टी है, तो सोचा वहां चला जाए.

सोनाक्षी का तो बिलकुल वहां जाने का मन नहीं था पर लीना बुकफेयर का नाम सुन कर ही चहक उठी. उसे किताबें पढ़ना बहुत अच्छा लगता है. कोई कहे कि पूरे दिन बैठ कर किताबें पढ़ती रहो, तो उकताएगी नहीं वह, इतना उसे किताब पढ़ना अच्छा लगता है. तभी तो वह जब भी मार्केट जाती है, बुकस्टॉल से अपने लिए दोचार अच्छी-अच्छी किताबें खरीद लाती है.

अकसर औरतों को कपड़ेगहनों का शौक होता है. अलमारी अटी पड़ी होती है कपड़ों से उन की, लेकिन लीना की अलमारी किताबों से अटी पड़ी है. एक भूख है उसे पढ़ने की. एक दिन भी न पढ़े, तो खालीखाली सा लगता है उसे, और विशाल के साथ भी ऐसा ही है. कितना भी बिजी क्यों न हो अपनी लाइफ में, रोज थोड़ाबहुत पढ़ना नहीं भूलता वह. रहा ही नहीं जाता बिना पढ़े उसे. ज़िंदगी सार्थक लगती है उसे पढ़ने से, वरना तो इंसान के जीवन में भागमभाग लगी ही रहती है.

लेकिन लीना दोनों के बीच कबाब में हड्डी नहीं बनना चाहती थी. इसलिए ‘घर में बहुत काम है,’ का बहाना कर

लीना की बड़ाई सुन कर मुंह बनाती हुई सोनाक्षी कहने लगी कि चाय वह भी अच्छा बना लेती है. तो चुटकी लेते हुए विशाल बोला, “हां, पी है तुम्हारे हाथों की बनी चाय भी, बिलकुल गटर के पानी जैसी.”

जाने से मना कर दिया. लेकिन विशाल तो ज़िद पर अड़ गया कि उसे भी उन के साथ बुकफेयर चलना ही पड़ेगा. हार कर लीना को उन के साथ जाना पड़ा.

बुकफेयर में जहां लीना और विशाल किताबें देखने में व्यस्त थे, वहीं सोनाक्षी बस आतेजाते लोगों को निहारने और मोबाइल में व्यस्त दिख रही थी. उस के चेहरे से लग रहा था उसे यहां आ कर जरा भी अच्छा नहीं लगा. वह तो कहीं घूमने या फिल्म देखने की सोच रही थी, मगर विशाल उसे यहां खींच लाया.

इशारों से कहा भी उस ने कि चलो अब यहां से, बोर हो रही हूं, तो विशाल ने भी इशारों से कहा कि ‘अभी रुकेगा वह यहां, चाहे तो वह जा सकती है घर.

क्या करती वह, एक तरफ बैठ गई और अपना मोबाइल चलाने लगी. गुस्सा भी आ रहा था उसे कि यहां आई ही क्यों? घर में ही रहती इस से अच्छा. भले ही सोनाक्षी और विशाल

एकदूसरे को 2 सालों से जानते थे, पर उन की एक भी आदत ऐसी नहीं थी जो आपस में मेल खाती हो. इसलिए अकसर दोनों में अपनेअपने मत को ले कर टकराव होता. और फिर हारने को दोनों में से कोई तैयार नहीं होता.

वहीं, विशाल को लीना का साथ इसलिए भी अच्छा लगता था क्योंकि दोनों की बहुत सी आदतें मिलतीजुलती थीं. बातविचारों में भी वह बहुत शालीन थी. उस से बातें कर विशाल को मानसिक स्फूर्ति मिलती थी. जिस तरह से वह बोलती थी न, लगता जैसे उस की बातों से शहद टपक रहा हो. उस के रूप, रस और गंध में विशाल ऐसे खो जाता कि

उसे कुछ होश ही नहीं रहता था। जब सोनाक्षी टोकती, उसे तब होश आता कि कहां है वह और किसी सोच में डूबा था।

लीना को भी विशाल से बातें करना अच्छा लगता था। पता नहीं क्यों, पर उसे देखते ही लीना के चेहरे पर मुसकान तैर जाती। उन की दोस्ती तो किताबों से शुरू हुई थी। अकसर दोनों एकदूसरे को अपनीअपनी किताबें लेतेदेते रहते थे। पढ़ना दोनों को बहुत अच्छा लगता था। लेकिन वहीं सोनाक्षी किताबों से कोसों दूर भागती। जब विशाल कहता कि किताबें पढ़ कर देखो कभी, ज्ञान का खजाना छिपा है उन में। तब मुंह बनाती सोनाक्षी कहती कि नहीं, उसे इन किताबोंउताबों में कोई दिलचस्पी नहीं है। उसे तो, बस, विशाल में दिलचस्पी है। और उस की बात पर विशाल मुसकरा पड़ता था।

सोनाक्षी का किताबों से दूरदूर तक कोई नातारिश्ता नहीं था। आश्चर्य होता उसे कि कैसे कोई इतनी मोटीमोटी किताबें हफ्तेदस दिन में खत्म कर सकता है? वह तो सालों तक भी एक किताब खत्म नहीं कर पाएगी।

उसे तो फिल्में देखना, घूमना, होटलों में भोजन करना पसंद है। जिंदगी में मौजमस्ती होती रहे, बस, और कुछ नहीं चाहिए उसे। इसलिए तो कभीकभी विशाल के साथ भी वह बोर होने लगती थी क्योंकि उस के साथ होते हुए भी वह किताबों में खोया रहता था। गुस्से में कह भी देती, 'किताबों से ही क्यों नहीं बातें करते? उसे ही अपना दोस्त बना लो न।' तो हंसते हुए विशाल कहता कि वह तो अभी कुछ साल पहले उस की दोस्त बनी है। लेकिन ये किताबें तो बचपन से

उस की साथी हैं, जो आजीवन उस की दोस्त रहेंगी.'

लेकिन, अब एक और दोस्त मिल गई है उसे लीना के रूप में। बिलकुल उस की तरह ही सोच रखने वाली। जब भी दोनों बातें करने लगते, सोनाक्षी तुनक कर वहां से उठ कर चल देती और कहती कि उन की बातों का मुद्दा सिर्फ किताबें और पढ़ाई ही क्यों होता है, कुछ और क्यों नहीं होता? और उस की बात पर दोनों हंस पड़ते।

“हंसो मत यार, सही कह रही हूं, और कोई बात नहीं सूझती क्या तुम दोनों को? जब देखो किताबें, देशदुनिया और राजनीति पर बातें करते रहते हो। अरे भई, कुछ इंटरैस्टिंग बातें भी कर लिया करो कभी। मैं तो स्कूलकालेज की ही किताबें पढ़पढ़ कर इतनी ऊब चुकी थी कि सोचती कब पीछा छूटे इन से और मैं चैन की सांस लूं,” हंसती हुई सोनाक्षी अपने बचपन की बातें याद कर कहती, “तुम्हें पता है विशाल, बचपन में मेरा स्कूल से भागने का रिकॉर्ड था।

“घर से मेरा स्कूल कुछ दूरी पर ही था। पापा मुझे स्कूल छोड़ कर जैसे ही जाते, मैं पीछेपीछे घर पहुंच जाती। यह रोज का किस्सा बन गया था। परेशान थे मांपापा मुझे ले कर। डर लगता उन्हें कि कहीं रास्ते में कोई गाड़ी ठोकर न मार दे मुझे या कोई उठा कर ही ले भागा, तो फिर क्या करेंगे वे। और स्कूल से भागना क्या अच्छी बात है? इसलिए एक बार पापा ने टीचर को ही डांट पिला दी कि बच्चा उन के स्कूल से भाग जाता है, क्या उन्हें पता नहीं चलता? अगर बच्चे को कुछ हो गया तो कौन जिम्मेदार होगा फिर?

“फिर क्या था, टीचर ने उस रोज मुझे रस्सी से बांध दिया ताकि मैं स्कूल से

भाग न सकूँ. लेकिन मैं ने रोनाचिल्लाना इतना मचाया कि उन्हें मुझे खोलना ही पड़ा. लेकिन प्रिंसिपल ने भी कह दिया कि स्कूल में अब मेरे लिए कोई जगह नहीं है. ऐसे बच्चे को वह अपने स्कूल में नहीं पढ़ा सकते. बहुत खुश थी मैं कि स्कूल और किताबों से मेरा पाला छूटा. लेकिन पापा ने जो मार मारी न उस रोज, आह, आज भी कांप उठती हूँ याद कर के.

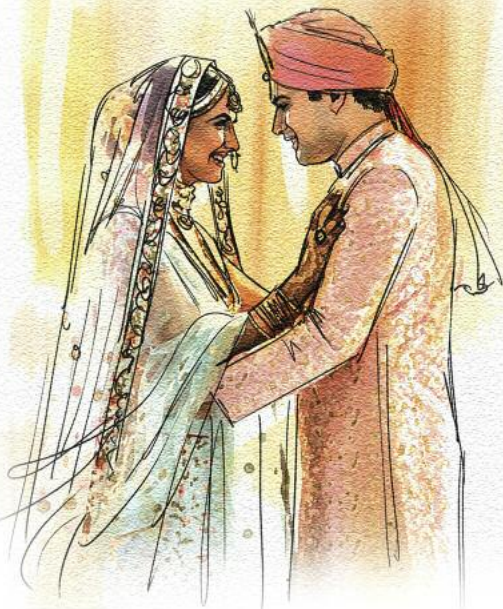
“उस दिन के बाद से मैं स्कूल से कभी नहीं भागी, लेकिन किताबों के प्रति मेरी नफरत बरकरार रही. वह तो पापा के डर के कारण इंजीनियरिंग की पढ़ाई करनी पड़ी, वरना तो पढ़ाई मुझे सजा से कोई कम नहीं लगती है आज भी,” सोनाक्षी बोली.

“कैसी बातें कहती हो तुम सोनाक्षी ?” पढ़ना क्या सजा होता है ? अरे, किताबों में तो ज्ञान का भंडार छिपा है. मैं तो किताब पढ़ने के अलावा और कुछ सोच ही नहीं सकता. सोने से पहले रोज जब तक थोड़ा पढ़ न लूँ, नींद नहीं आती” विशाल की बात पर लीना ने भी सहमति जताई और कहा कि उसे भी बिना पढ़े नींद नहीं आती. काम से फुरसत मिलते ही वह किताब ले कर बैठ जाती है. मजा आता है उसे पढ़ने में.

एक सुर में दोनों को बोलते देख सोनाक्षी हंस पड़ी और एक लंबी सांस छोड़ती हुई बोली, “हूँ, मुझे लगता है तुम दोनों की जोड़ी खूब जमेगी, क्योंकि एकजैसे जो हो तुम दोनों.”

उस की बातों पर दोनों एकदूसरे को देखने लगे और आंखों ही आंखों में जो बातें हुईं, ये तो उन्हें ही पता था. कहते हैं, आंखें दिल के झरोखे सी होती हैं. झरोखे बंद भी हो सकते हैं, पर होंठों की कोर एक ऐसा सूचक है जो कभी चुकता नहीं.

विशाल अपलक अब भी लीना को वैसे ही निहार रहा था. कुछ क्षणों की वह तंद्रा लीना को मानो उस कमरे से दूर अलग कहीं ले गई थी जहां होंठों के कोरों का कसाव, बिना तनिक कांपे भी, जैसे अनजाने कुछ नरम पड़ गया था. मुंह के आसपास की असंख्य शिराओं का अदृश्य



4 वर्ष पहले लीना और सूरज विवाह बंधन में बंधे थे, हंसतेमुसकराते शादी के 2 साल कैसे बीत गए, पता ही नहीं चला.

तनाव कुछ ढीला हो गया था और जीवन का अदम्य लचीलापन जैसे फिर उभर कर एक स्निग्ध लहर बन गया था. ऐसा पहले भी कई बार हुआ जब किताबें लेतेदेते दोनों का हाथ आपस में स्पर्श कर जाता तो उन की आंखें बातें करने लगती थीं.

सोनाक्षी ने उसे झकझोरा तो पाया कि वह कहीं खो गया था. लेकिन लक्ष्य किया

उस ने कि उस के चेहरे के हावभाव को कोई पढ़ नहीं पाया। नास्तिकों की भीड़ में जैसे कोई भक्त अनदेखे क्षणभर आंख बंद कर अपने आराध्य का ध्यान कर लेता है, वैसे ही विशाल कहीं पर भी हो या किसी के साथ हो, अपनी लीना को मन की आंखों से देख ही लेता था।

लेकिन फिर भी लीना विशाल को सिर्फ एक अच्छा दोस्त समझती थी। उस के दिल में कुछ भी नहीं था उसे ले कर। वह तो आज भी अपने दिल में सूरज को बसाए हुए थी, जो अब इस दुनिया में नहीं है। 4 वर्षों पहले लीना और सूरज विवाह बंधन में बंधे थे। हंसतेमुसकराते शादी के 2 साल कैसे गुजर गए, उन्हें पता ही नहीं चला। लेकिन एक दिन सूरज की मौत की खबर ने लीना को तोड़ कर रख दिया। एक तसल्ली थी कि उस का सूरज देश के लिए शहीद हुआ है। गर्व था उसे अपने पति पर।

सूरज फौज में था। अपनी बेटी को विधवा के रूप में देख कर लीना की मां ने तो खटिया ही पकड़ ली और उस के पापा गुमसुम से हो गए। लेकिन वे चाहते थे कि उन के जीतेजी बेटी का घर फिर से बस जाए क्योंकि जिंदगी इतनी छोटी भी नहीं होती कि बगैर किसी सहारे के जिया जा सके और वे कब तक बेटी के साथ रह पाएंगे। आज न कल, वे भी अपनी आंखें मूंद ही लेंगे, फिर क्या होगा लीना का?

सूरज के मांपापा भी बहू को बंधन में बांध कर नहीं रखना चाहते थे और अब जब बेटा ही नहीं रहा उन का, फिर बहू को वे किस अधिकार से अपने पास रख सकते थे? लेकिन लीना दूसरे विवाह को हरगिज तैयार न थी क्योंकि सूरज अब भी उस का प्यार था, उस का पति था। लीना

वह स्थान किसी और को नहीं देना चाहती थी। उस के लिए तो अब यही घर उस का अपना घर था और सूरज के मांपापा उस की जिम्मेदारी।

याद है उसे, जब भी सूरज का खत या फोन आता, एक बात तो वह जरूरत कहता था, 'लीना, मेरे मांपापा अब तुम्हारी जिम्मेदारी हैं, उन का ध्यान रखना' और लीना कहती, 'हां, वह इस जिम्मेदारी को अच्छे से निभाएगी, चिंता न करें।' ऐसे में कैसे वह अपने वचन से पलट सकती थी? इसलिए उस ने कभी फिर दूसरा विवाह न करने का फैसला कर लिया।

सूरज के जाने के बाद वह बखूबी अपनी जिम्मेदारी निभा रही है। लेकिन सूरज की कमी उसे खलती रहती है। इसलिए तो उस ने अपनेआप को किताबों में झोंक दिया था। वैसे, सूरज के मांपापा भी यही चाहते थे कि लीना दूसरा विवाह कर ले अब। कई बार कहा भी उन्होंने। कई रिश्ते भी आए। पर लीना का एक ही जवाब था कि वह दूसरा विवाह नहीं करेगी।

उस दिन सोनाक्षी को अच्छे से तैयार होते देख लीना कहने लगी, "कब तक यों ही सजसंवर कर विशाल को रिझाती रहोगी ननद रानी? क्यों नहीं कह देतीं उस से अपने मन की बात? एकदूसरे को अच्छी तरह समझने लगे हो तुम दोनों, तो अब क्या सोचविचार करना? कहीं ऐसा न हो, मांपापा तुम्हारी शादी कहीं और तय कर दें और फिर तुम कुछ न कर पाओ।"

भाभी की बात सोनाक्षी को भी सही लगी कि अगर विशाल आगे नहीं बढ़ रहा है, तो क्यों नहीं वही आगे बढ़ कर अपने प्यार का इजहार कर देती है। लेकिन कैसे

वह अपने प्यार का इजहार करे, समझ नहीं आ रहा था।

“अब इस में सोचनासमझना क्या है सोनू? देखो, अगले हफ्ते ही विशाल का जन्मदिन है, तो इस से अच्छा मौका और क्या होगा।” लीना की यह बात सोनाक्षी को जंच गई और मन ही मन उस ने इजहारे प्यार का फैसला कर लिया। सोच लिया उस ने कि कैसे वह विशाल के सामने अपने प्यार कर इजहार करेगी।

सोनाक्षी ने तो पहली ही नजर में

विशाल को अपना दिल दे दिया था। लेकिन विशाल ने आज तक नहीं जताया उसे कि वह उस से प्यार करता है। लेकिन उस की बातों, हावभाव और सोनाक्षी को ले कर उस की बेचैनी को देख, उसे यही लगता है कि वह भी उस से प्यार करता है। वैसे भी, जरूरी तो नहीं कि हर बात कह कर ही जताई जाए, मेरे लिए तो इतना ही काफी है कि मुझे से मिले बिना वह एक दिन भी नहीं रह पाता है। तभी तो कोई न कोई बहाना बना कर सीधे मेरे घर

एक पल सुकून

हजारों लोग हैं चाहने वाले,
कोई मेरी बातों की वजह से,
कोई चंद मुलाकातों की वजह से.
ये बात तुम भी जानती हो,
तभी कहती थीं मुझे बारबार,
न तनहा खुद को मैं कभी पाऊंगा.



मुझे याद है वे आखिरी 4 पल,
जब तुम ने कहा था, नहीं मिलेंगे कल,
आखिरी मुलाकात की घड़ियों में.
तुम ने मुझे यही समझाया था,
कि खुश रहना इन्हीं लमहों को,
याद कर के जीवनभर.

पर न मिल पाएंगे दोबारा कभी,
ये सोच, मेरी पलकों में,
आंसू उतर आए थे.
अब सुन लो तुम भी,
माने नहीं रखता मेरे लिए,
हजार लोगों का मेरे साथ होना,
माने रखता है मेरे लिए,
सिर्फ तेरा मेरे साथ होना.

तुम्हें लगता था,
उन लमहों को याद कर के,
न तनहा कभी मैं खुद को पाऊंगा,
पर तुम जान लो गर जान सको,
एक पल भी जो सुकून दे मुझे को,
न अब लमहा वो कभी पाऊंगा.

● महेश कुमार माटा

आ पहुंचता है। अपने मन में यह सोच सोनाक्षी मुसकरा पड़ी थी।

सोनाक्षी को यह नहीं पता कि विशाल उस से नहीं, बल्कि उस की विधवा भाभी लीना से प्यार करता है और उस की खातिर ही वह उस के घर बहाने बना कर आता रहता है। यह कब, कैसे और कहाँ हुआ। नहीं पता उसे। लेकिन जैसेजैसे उस ने लीना को जाना, उस के प्रति वह आकर्षित होता चला गया। इसलिए सोनाक्षी से मिलने के बहाने ही वह उस के घर चला आता था। भले ही वह सोनाक्षी से बातें करता था पर उस का दिल और दिमाग तो लीना के पास ही होता था।

लीना को एक दिन भी न देखना उसे बेचैन कर देता था। रातदिन, बस, उसी का

चेहरा उस की आंखों के सामने नाचता रहता। जब वह अपनी आंखें बंद करता तब भी लीना दिखाई देती उसे और जब आंखें खोलता तब भी उस का ही चेहरा नजर आता था उसे। लेकिन वह यह बात किसी से भी बता नहीं पा रहा था। अपने परिवार वालों से भी नहीं क्योंकि जानता था एक विधवा से शादी समाज सहन नहीं कर पाएगा।

पूछना चाहता है वह समाज से और समाज में रह रहे लोगों से कि जब एक विधुर दूसरा विवाह कर सकता है, तो विधवा क्यों नहीं? क्यों एक पति के न रहने पर औरत अपने मन का खापी और पहनओढ़ नहीं सकती? हंसबोल नहीं सकती? आखिर इतना जुल्म क्यों होता है औरत पर? लेकिन दुख तो उसे इस बात का होता है कि औरत अपने ऊपर हो रहे जुल्म को बरदाश्त करती रहती है। ऐसा नहीं है कि औरत में हिम्मत नहीं होती या उस के पास बोलने को शब्द नहीं होते। वह अपनी हिम्मत और शब्द का इस्तेमाल करती नहीं। इधर, विशाल ने संकल्प ले लिया कि वह लीना के चेहरे से उदासी का बादल हटा कर रहेगा। उसे अपना बना कर रहेगा। आदमी की संकल्पशक्ति दृढ़ होनी चाहिए।

उस दिन अचानक विशाल को अपने घर आए देख लीना चौंक पड़ी क्योंकि कभी वह सोनाक्षी के न होने पर घर

चंपक पढ़ें →→→ आगे बढ़ें

चंपक की कहानियों के छोपे सुंदर चित्र, जानकारी, रोचक कहानियों से याद रखने की आदत बनेगी।

स्क्रीनों की तसवीरें मन में टिकती नहीं हैं।

छोपे चित्रों को काट कर सजा लें, खुद ही इन में सुंदर रंग भर लें। अपडेट रहें।

हवाई जहाज में हों, बस में हों या रेल में, हर समय चंपक सच्ची दोस्त।



चंपक पढ़ें,
आगे बढ़ें।

ग्राहक बनने के लिए
Subscription@delhipress.in

नहीं आया और सब से बड़ी बात यह कि वह जानता था सोनाक्षी अपने मांपापा के साथ बीमार बूआजी को देखने गई है।

“विशालजी आप, इस वक्त ? सोनू, मतलब सोनाक्षी तो घर पर नहीं है। मांपापा के साथ बूआजी को देखने गई...”

“हां, पता है मुझे,” बीच में ही विशाल बोल पड़ा, “वैसे, मैं यहां सोनाक्षी से नहीं, बल्कि आप से मिलने आया हूं लीनाजी。” विशाल बोलने में भले घबरा रहा था मगर आज वह अपने दिल की बात लीना तक पहुंचा कर रहेगा, सोच कर आया था।

“आ...आप बैठिए, मैं आप के लिए चाय ले कर आती हूं,” कह कर लीना मुड़ी ही थी कि विशाल ने उस का हाथ पकड़ लिया। विशाल को इस रूप में देख कर वह चौंक उठी क्योंकि उस की आंखें आज कुछ और ही भाषा बोल रही थीं जो लीना को साफसाफ दिखाई दे रहा था। “वि...विशालजी, आप आप यह क्या कर रहे हैं ? छोड़िए मेरा हाथ” अपने हाथों को उस की पकड़ से छुड़ाते हुए लीना बोली।

“मैं ने यह हाथ छोड़ने के लिए नहीं पकड़ा है लीनाजी। मैं आप से प्यार करता हूं। शादी करना चाहता हूं आप से,” एक सांस में ही विशाल ने अपना फैसला लीना को सुना दिया।

“पर, आप तो सोनाक्षी से...” अचकचा कर लीना पूछ बैठी।

“नहीं, मैं ने कभी भी सोनाक्षी को उस नजर से नहीं देखा। मैं तो आप से प्यार करता हूं लीनाजी,” उस के करीब जाते हुए विशाल बोला। लेकिन लीना उस से दूर छिटक गई।

“पागल हो गए हैं आप ? ये कैसी बातें कर रहे हैं मुझ से ?” गुस्से से लीना की आंखें लाल हो गईं। उसे तो यही लगता था

कि विशाल सोनाक्षी से प्यार करता है, इसलिए वह बहाने बना कर उस से मिलने को घर आ जाता है। लेकिन यह तो... ‘प्लीज,’ अपने दोनों हाथ जोड़ कर लीना कहने लगी, “ऐसी बातें मत कीजिए मुझ से। जाइए यहां से, वरना किसी ने देख लिया, तो अनर्थ हो जाएगा। जानते नहीं क्या आप, मैं एक विधवा हूं ?” यह कह कर वह जाने लगी कि विशाल ने उसे रोक लिया और उस के आसपास अपनी बलिष्ठ भुजाओं का घेरा बना दिया जिस से वह निकल नहीं पाई।

आज वह सोच कर आया था कि जरूरत पड़ी तो वह लीना के सासससुर से भी बात कर लेगा। कहेगा कि वह लीना से प्यार करता है और उस से शादी करना चाहता है। नहीं मानता वह समाज के इन ढकोसलों को। लेकिन उसे नहीं पता था कि पीछे खड़ी सोनाक्षी सब देख ही नहीं रही है, बल्कि उस ने सब सुन भी लिया है।

विशाल से वह कुछ पूछती, मगर वह वहां से बिना कुछ बोले ही निकल गया और लीना ने अपने कमरे में जा कर दरवाजा लगा लिया। सोनाक्षी ने कई बार विशाल को फोन लगाया, पर उस ने उस का फोन नहीं उठाया और न लीना कुछ बता रही थी।

2 दिनों बाद विशाल फिर आया, लेकिन लीना से मिलने नहीं, बल्कि उस के सासससुर से उस का हाथ मांगने। अब अंधे को क्या चाहिए, दो आंखें ही न ? बहू को बेटी बना कर विदा करना सपना था उन का, लेकिन लीना ही दूसरा विवाह करने को तैयार नहीं हो रही थी। आज जब सामने से आ कर विशाल ने उस का हाथ मांगा तो उन्होंने तुरंत हां कर दी। इस

उम्र में अपने सासससुर को और दुख नहीं देना चाहती थी, इसलिए लीना ने भी मौन सहमति दे दी. पर, वह विशाल से शादी नहीं करना चाहती थी, क्योंकि जानती है विशाल सोनाक्षी का प्यार है.

उधर लीना के मातापिता भी बेटी की गृहस्थी फिर से बसते देख खुशी से झूम उठे थे. मगर विशाल के मातापिता इस रिश्ते के लिए तैयार नहीं थे. वे एक विधवा को अपनी बहू नहीं स्वीकारना चाहते थे. लेकिन विश्वास था विशाल को कि वे इस रिश्ते के लिए मानेंगे जरूर एक दिन, और न भी मानें, तो उस का फैसला अटल है.

सूरज के मांपापा ने जब लीना और विशाल की शादी की बाद सोनाक्षी को बताई और कहा कि अब वे चैन से मर

सकते हैं, तो सोनाक्षी, विशाल और लीना की शादी से खुश होने का दिखावा जरूर कर रही थी, मगर अंदर से वह आग की तरह धधक रही थी. विशाल के मुंह से यह बात सुन कर ही कि, वह लीना से प्यार करता है और उस से शादी करना चाहता है, कैसे उस का गुलाबी चेहरा झुलस कर राख हो आया था. सहन नहीं कर पा रही थी कि विशाल उसे ठुकरा कर उस की भाभी का हो गया. अपने कमरे में जा कर तड़तड़ अपने ही गालों पर थप्पड़ बरसाने लगी थी वह और फिर घुटनों में सिर दे कर बुक्का फाड़ कर रोई थी.

उसे लग रहा था कि जिस भाभी को उस ने अपना दोस्त माना, उस ने ही उस की पीठ पर खंजर भोंक दिया. भले ही वह सब के सामने अखंड शांति का दिखावा कर रही थी, जता रही थी कि उन की शादी से वह प्रसन्न है, पर अपने अभिमान पर हुए आघात से वह धूँ कर जल रही थी.

यह अंक आप को कैसा लगा

इस अंक की कौन सी रचना आप को पसंद आई, कौन सी नहीं आई, आप किन विषयों पर लेख और कहानियां पढ़ना पसंद करेंगे? हमें बताएं, हम आप की आलोचनाओं का भी और सुझावों का भी स्वागत करेंगे.

पत्र संपादक, सरिता, दिल्ली प्रेस, ई-8, रानी झांसी रोड, झंडेवाला, नई दिल्ली-110055 पर डाक से या editor@delhipress.biz पर ईमेल से या 08527666772 पर एसएमएस या व्हाट्सएप से भेजें.

—संपादक

एक बार तो उस के मन में आया था कि आत्महत्या कर ले. जिस अतुल रूपयौवन पर उसे बहुत गुमान था, उसे अपने हाथों से नोच डाले, टुकड़ेटुकड़े कर तोड़ दे उसे. पर तभी ध्यान आया कि इस से क्या होगा? उन का कुछ बिगड़ेगा? नहीं, बल्कि और उन का रास्ता साफ हो जाएगा. इसलिए वह उन्हें सबक सिखाएगी.

उस के मन में लीना को ले कर बहुत गुस्सा भरा हुआ था और जब तक वह उसे सबक नहीं सिखा देती, बदला नहीं ले लेती उन से, तब तक उस के मन को शांति नहीं मिलेगी. लीना सोनाक्षी का दुख समझ रही थी, पर क्या करे वह भी.

लेकिन एक रास्ता सूझा उसे और उस ने विशाल से मिलने का मन बना लिया।

फोन पर लीना को विशाल से बातें करते देख सोनाक्षी का खून खौल उठा।

मन तो किया उस के हाथ से फोन छीन कर फेंक दे और कहे, 'लज्जा नहीं आई तुम्हें मेरे प्यार को छीनते हुए? अरे, दोबारा विवाह ही करना था, तो क्या लड़कों की

कमी थी दुनिया में? मेरा प्यार क्यों छीन लिया तुम ने?' फिर मन हुआ टेबल पर रखी गरम चाय उस के मुंह पर दे मारे, ताकि उस का यह सुंदर चेहरा बिगड़ जाए। आखिर इस के इसी सुंदर चेहरे पर विशाल को प्यार हो गया न? और इस के इसी सुंदर चेहरे की वजह से ही विशाल ने उसे ठुकरा दिया न? लेकिन उस ने अपने उबलते गुस्से को कंट्रोल कर लिया और उस की बातें सुनने लगी।

लीना विशाल से पास के ही कौफीहाउस में मिलने की बात कह रही थी। लीना के जाने के कुछ देर बाद वह भी घर से निकल पड़ी। अपने चेहरे को दुपट्टे से आधा ढक कर उस ने गौगल्स चढ़ा लिए थे ताकि कोई उसे पहचान न पाए। और जा कर ठीक उन के पीछे वाली टेबल पर बैठ गई ताकि उन की बातें ठीक तरह से सुन पाए। फिर वह सोचेगी कि उसे क्या करना है। पता नहीं वह क्या प्लान बना रही थी दोनों को ले कर, यह तो वही जाने।

विशाल ने 2 कप कौफी ऑर्डर किया और गौर से लीना को देखने लगा, जो

उधर लीना के मातापिता भी बेटी की गृहस्थी फिर से बसते देख खुशी से झूम उठे थे। मगर विशाल के मातापिता इस रिश्ते के लिए तैयार नहीं थे। वे एक विधवा को अपनी बहू नहीं स्वीकारना चाहते थे।

अब भी सिर झुकाए उसी तरह बैठी थी। "कुछ परेशान लग रही हो," लीना के चेहरे को पढ़ते हुए विशाल बोला।

"हां, हूं मैं परेशान। और इस की वजह

आप हैं। क्यों कर रहे हैं आप ऐसा? मांपापा के सामने मैं कुछ बोल नहीं पाई और न ही फोन पर आप को समझा सकती थी। लेकिन आज मैं आप को यहां यह समझाने आई हूं कि जिद छोड़ दीजिए। आप का प्यार मैं नहीं, बल्कि सोनाक्षी है।

अच्छा किया क्या आप ने उस

का दिल तोड़ कर? नहीं चाहिए मुझे आप की दया। आप खुद इस शादी से इनकार कर दीजिए, प्लीज," हाथ जोड़ कर लीना कहने लगी, "और अपना लीजिए मेरी सोनू को। प्यार करती है वह आप से बहुत।"

लीना की बातें सुन कर पहले तो कुछ देर विशाल उसे देखता रहा, फिर बोला, "एक बात बताओ, क्या कभी कहा तुम से सोनाक्षी ने कि मैं ने उसे आई लव यू कहा? क्या एक लड़का और एक लड़की की दोस्ती का मतलब प्यार हो जाता है? नहीं न, फिर कैसे लगा तुम्हें या किसी को भी कि मैं उस से प्यार करता हूं। मैं ने अपनी जिंदगी में सिर्फ एक लड़की को चाहा और वह तुम हो लीना तुम और मैं तुम पर कोई दया नहीं कर रहा, बल्कि सच्चे दिल से तुम्हें प्यार करता हूं।"

उस की बातों पर लीना का चेहरा झुक गया, क्योंकि विशाल की आंखों में उस के लिए प्यार साफसाफ दिख रहा था। "और जब मैं उस से प्यार ही नहीं करता,

फिर शादी का क्या मतलब? बेईमानी नहीं होगी, यह हम दोनों के साथ? क्या खुश रह पाएंगे हम एकदूसरे के साथ, बोलो? मैं तुम से प्यार करता हूँ लीना और तुम्हारे साथ ही खुश रह पाऊंगा. जानता हूँ कि, मैं भी तुम्हें अच्छा लगता हूँ. मेरे साथ रहते हुए तुम कितनी खुश रहती हो, देखा है मैं ने. लेकिन तुम जकड़ी हुई हो समाज की सोच के साथ कि लोग क्या कहेंगे? एक विधवा का जो ठप्पा लगा है न तुम पर, उस से तुम भी नहीं निकलना चाहती हो. बताओ न, क्यों नहीं निकलना चाहती? तुम ने ही एक रोज बताया था मुझे कि जब तुम्हारी चाची की जॉइंट्स से मौत हो गई थी, तब उन के मरने के कुछ महीने बाद ही तुम्हारे चाचा ने दूसरा विवाह कर लिया था. तो उन्हें समाज कुछ क्यों नहीं बोलता? सिर्फ औरतें ही क्यों समाज की बनाई चक्की में पिसती रहें, बोलो न?”

“वह सब मुझे नहीं पता, लेकिन यह जानती हूँ कि एक विधवा के लिए दूसरा विवाह करना पाप है. हो सके तो आप सोनाक्षी से शादी कर लीजिए, वह आप से बहुत प्यार करती है,” कह कर नम आंखों से लीना वहां से उठ कर चली गई और विशाल वहीं बैठा जाने क्या सोचने लगा. कुछ देर बाद वह भी वहां से चला आया. काफी अपसैट लग रहा था वह. उसे समझ नहीं आ रहा था क्या करे?

विशाल के जाने के बाद सोनाक्षी भी वहां से निकल गई. आज लीना की बातें सुन कर उस का मन रो पड़ा. सोचने लगी, वह कितनी

स्वार्थी हो गई है? जब उस के भाई सूरज की मौत हुई थी तब लीना को देख कर उस का भी कलेजा फटा था. वह भी चाहती थी लीना की गृहस्थी फिर से बस जाए. कोई उस का हाथ थाम कर फिर से उस की जिंदगी में बहार ले आए.

लेकिन आज जब कोई उसे दिल से प्यार करने वाला मिला है, उस से शादी करना चाहता है, तो उसे बुरा लग रहा है? सही तो कहा विशाल ने, कब उस ने मुझ से प्यार का इजहार किया? बल्कि मुझे ही यह गलतफहमी हो गई थी कि वह मुझे चाहता है.

मैं तो यह सोच कर वहां गई थी कि सब के सामने उन्हें जलील करूंगी. बताऊंगी लोगों को कि कैसे उस की अपनी भाभी, जिसे वह अपना सबकुछ समझती थी, ने उस का प्यार छीन लिया. लेकिन वह तो यहां आ कर स्तब्ध रह गई. उस की भाभी तो अब भी पहले उस के बारे में ही सोचती है, चाहती है विशाल उस से शादी करने से मना कर सोनाक्षी को अपना ले. यह सब सोचतेसोचते सोनाक्षी घर पहुंच गई.

आज उस के मन में विशाल और लीना को ले कर कोई गुस्सा या द्वेष नहीं था. बल्कि, वह खुश थी कि उस की भाभी का दूसरा विवाह होने जा रहा है और वह अपने हाथों से उसे सजाएगी, उसे लाल जोड़ा पहनाएगी. खूब नाचेगीगाएगी. और वह गुनगुनाने लगी, ‘मेहंदी लगा के रखना, डोली सजा के रखना, लेने तुझे ओ गोरी, आएंगे तेरे सजना...’ ●

**विधवाएं क्यों
रीतिरिवाजों के
बंधन में जकड़ी हैं?**

इस तरह के सवालों के सही उत्तर
पाने के लिए सरिता नियमित
पढ़िए. सरिता के वार्षिक ग्राहक
बनिए. रजिस्टर्ड डाक से
सुरक्षित डिलीवरी.

**Subscription.mag@
delhipress.in** पर ईमेल
भेजिए या **08588843408**
पर 10 बजे से 6 बजे तक फोन कर
पूरी जानकारी लें.



मेरे पति डाक पत्थर में इंजीनियर थे। एमएचपी एक बहुत बड़ा प्रोजेक्ट था। वहां सिंचाई विभाग व हाईडिल के काफी संख्या में इंजीनियर्स रहते थे। हम सभी लेडीज पतियों के ऑफिस जाते ही ग्रुप में किसी एक के घर बैठ गपों के साथ स्वेटर आदि बुना करती थीं।

लंचटाइम में पतियों के आने से पहले अपनेअपने घर लौट कर आ जाती थीं। यह हम लोगों का करीबकरीब रोज का ही रूटीन था। एक दिन घर में काम के कारण मैं अपनी सहेलियों के पास नहीं गई थी। अगलबगल तथा सामने के सभी लोग जा चुके थे। उस दिन उस लाइन में मैं अकेली थी।

करीब साढ़े 12 बजे मेरे घर की घंटी बजी। चूंक दरवाजे में न तो आई होल था और न ही जाली का दरवाजा, इस कारण मैं ने थोड़ा सा ही दरवाजा हाथ से पकड़ कर खोला। 3 लंबेलंबे काले लड्डूके थे। उन्होंने पूछा, “क्या कालूराम यहीं रहते हैं?”

मैं बोली, ‘नहीं.’ तो वे दरवाजे पर धक्का देते हुए ड्राइंगरूम में घुस आए और बोले, “वे यहीं रहते हैं.”

मेरा गेट, जिसे ये लोग खोल कर आए थे, खुला था और हमारे ड्राइंगरूम के दरवाजे से 10-12 कदम की दूरी पर था। उन के अंदर घुसते ही मैं बाहर को

भागी। चूंक मेरी लाइन में कोई नहीं था, थोड़ी दूर पर सब्जी वाला सुमेरा ठेला ले कर आ गया। उस को देख मैं चिल्लाई।

सुमेरा कालोनी में रोज सब्जी बेचने आता था। मैं उस से बोली, “मेरे घर में आदमी घुसे हैं.” मेरा चिल्लाना व किसी आदमी के होने का आभास होते ही वे तीनों घर से निकल कर भाग गए और मैं बालबाल बच गई। वह घटना सोच कर आज भी दिल कांप जाता है।

मंजु रस्तोगी (सर्वश्रेष्ठ)

एक बार हम जयपुर से कालका जा रहे थे। शाम की टू टायर की ट्रेन थी। मेरे साथ मेरा 3 साल का बेटा था। हम लोग ट्रेन में चढ़े। भीड़ बहुत थी। इन्होंने अटैची व एयरबैग ऊपर सीट पर रख दिए व अभी खड़े ही थे। मैं व मेरा बेटा बस बैठ ही पाए थे, इतने में बेटे को प्यास लगी, मैं ने अपने पति से बैग में से पानी की बोटल निकालने को कहा। ज्यों ही उन्होंने बोटल निकालने के लिए ऊपर देखा, अटैची गायब थी।

हम लोगों ने डब्बे में चारों तरफ देख लिया, मगर अटैची कहीं नहीं मिली। हम लोग ट्रेन से नीचे उतर गए। लेकिन अटैची ले जाते हुए कोई भी नहीं दिखा। इस तरह हम दिन दहाड़े लुट गए। **आशा गुप्ता •**

आप भी भेजें

इस स्तंभ के लिए पाठकों के अनुभव आमंत्रित हैं। प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ अनुभव को 100 रुपए का नकद पुरस्कार दिया जाएगा। पता : सरिता, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-55.

अपना अनुभव नाम व पते सहित आप नीचे लिखे नंबर पर एसएमएस या व्हाट्सएप के जरिए मैसेज/ऑडियो भी कर सकते हैं।

08527666772



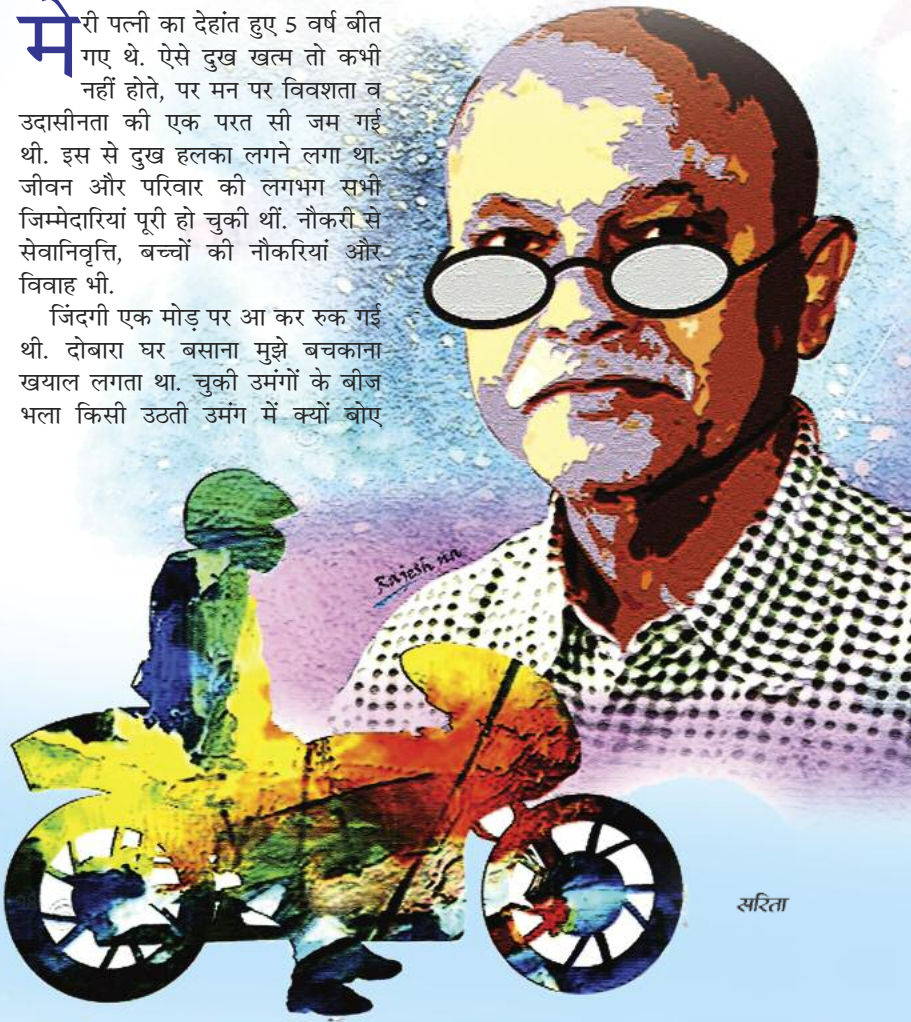
दुनिया पूरी

प्रबोध कुमार गोविल

दुनिया से जा चुकी पत्नी को दिए वचन के चलते किसी महिला को छू नहीं सकता था, लेकिन शरीर को तो महिला का साथ चाहिए ही. समय ऐसा आया कि शरीर और मन की इच्छा भी पूरी हुई और पत्नी को दिया वचन भी बाकी रहा...

मेरी पत्नी का देहांत हुए 5 वर्ष बीत गए थे. ऐसे दुख खत्म तो कभी नहीं होते, पर मन पर विवशता व उदासीनता की एक परत सी जम गई थी. इस से दुख हलका लगने लगा था. जीवन और परिवार की लगभग सभी जिम्मेदारियां पूरी हो चुकी थीं. नौकरी से सेवानिवृत्ति, बच्चों की नौकरियां और विवाह भी.

जिंदगी एक मोड़ पर आ कर रुक गई थी. दोबारा घर बसाना मुझे बचकाना खयाल लगता था. चुकी उमंगों के बीज भला किसी उठती उमंग में क्यों बोए



जाएं. अगर सामने भी चुकी उमंग ही हो, तो दो टूट पास आ कर भी क्या करें. मुझे याद आता था कि एक बार पत्नी और अपनी खुद की नौकरी में अलग-अलग पोस्टिंग होने पर जाने के लिए अनिच्छुक पत्नी को समझाते हुए मैं ने यह वचन दे डाला था कि मैं जीवन में कभी किसी दूसरी औरत से शरीर के किसी रिश्ते के बारे में होश रहने तक सोचूंगा भी नहीं.

पत्नी का निधन इस तरह अकस्मात दिल का दौरा पड़ने से हुआ कि दोबारा कभी अपने वचन से मुक्ति की बात ही न आ सकी. उस के जाने के बाद यह वचन

मेरे लिए पत्थर की लकीर बन गया. मैं तनमन से दुनियाभर की स्त्रियों से हमेशा के लिए दूर हो गया.

कुछ साल बीते, शरीर में एक अजीब सा ठहराव आ गया. एक जड़ता ने घर कर लिया. किताबों में पढ़ा कि इंसान के लिए किसी दूसरे इंसान का जिस्म केवल जरूरत ही नहीं, बल्कि एक औषधि है. हर बदन में एक प्यास बसती है जिस का सावन कहीं और रहता है. एकदूसरे को छूना, किसी से लिपटना जीवन की एक अनिवार्य शर्त है, मौत को पास आने से रोकने के लिए एक इम्युनिटी है. यह घर्षण एक जीव वैज्ञानिकता है. और तब, मुझे लगा कि मैं हर कहीं, हर किसी को छूने की कोशिश करता हूं.

मुझे महसूस होता कि किसी समय पति के जीवित न रहने पर किसी स्त्री को उस के साथ ही सती होने के लिए विवश करना या उस का पति के साथ ही जल मरना कैसा व क्या रहा होगा. वह पितृसत्तात्मक समाज था, इसलिए मरने की शर्त केवल स्त्री के लिए थी, पुरुष तुरंत दोबारा विवाह कर लेते थे. मैं अपने वचन के चलते इस से उबरना चाहता था.

जल्दी ही मुझे लगने लगा कि महिलाओं से दूर रहते हुए भी मुझे किसी इंसान से बात करते हुए उसे छू लेना, जरा सी पहचान पर उसे गले लगा लेना, घूमते हुए हाथ पकड़ लेना, बैठते हुए आत्मीयता से उस से सट जाना बहुत जीवनभरा है. मेरे शरीर में इस से स्पंदन आ जाता. जीने की इच्छा बलवती होती. बदन में एक लय आ जाती. अच्छी तरह रहने का मन होता. मैं न जाने क्याक्या सोचने लगा. क्या मैं किसी मंदिर में खड़ा हो कर संकेत रूप में ही पत्थर के ईश्वर को



साक्षी मान कर अपना वचन तोड़ दूँ? नहीं। यदि मेरी पत्नी जीवित होती तो मैं शायद ऐसा करने का साहस भी जुटा लेता पर अब उस के जाने के बाद नहीं। यह अपराध है।

मैं पुरुष शरीर का ही सान्निध्य और साहचर्य पाने में भलाभला सा महसूस

करने लगा। अब मैं इस दिशा में सोचता। इस में किसी तरह की अंतरंगता मुझे भाती। लेकिन मेरे मन के स्वाभाविक तर्क मुझे रोकते। अपने हमउम्र लोगों का साथ मुझे खीझभरा लगता। वे हमेशा ऐसी बातें करते कि मेरी आमदनी कितनी है, मेरी जायदाद की कीमत कितनी है, मेरे पास भविष्यनिधि के स्रोत क्या हैं, मेरे मकान या जमीन का बाजार मूल्य कितना है। इन सवालों से उकता कर मैं उन से दूरी बना लेता।

मेरा ध्यान बच्चों की ओर जाता। लेकिन उन से किसी किस्म की आत्मीयता पनपने से पहले मैं सोचता कि ये इन के जिंदगी बनाने, कैरियर बनाने के दिन हैं, इन का ध्यान भविष्य बनाने पर ही रहे और यह सोचता हुआ मैं उन से पर्याप्त दूरी रखता।

मैं शाम के समय खाना खाने के बाद सड़क पर अकेला ही टहल कर घर लौट रहा था कि गेट के पास मैं ने एक लड़के को खड़े देखा। लड़का एक पेड़ के नीचे अपनी बाइक खड़ी कर के उसी के सहारे खड़ा था। लड़के की उम्र लगभग 21-22 वर्ष रही होगी और वह बारबार घड़ी देखता, शायद किसी के इंतजार में था। मैं

मेरा ध्यान बच्चों की ओर जाता। लेकिन उन से किसी किस्म की आत्मीयता पनपने से पहले मैं सोचता कि ये इन के जिंदगी बनाने, कैरियर बनाने के दिन हैं, इन का ध्यान भविष्य बनाने पर ही रहे और यह सोचता हुआ मैं उन से पर्याप्त दूरी रखता।

दरवाजे से भीतर दाखिल होने ही लगा था कि हलकी बूँदाबूँदी शुरू हो गई। पेड़ के नीचे खड़े होने पर भी बारिश से पूरी सुरक्षा नहीं थी, लड़का कुछ भीगने लगा।

मैं ने इंसानियत के नाते उस से कहा, “भीग क्यों रहे हो, भीतर आ जाओ।”

लड़का झट से मेरे पीछेपीछे चला आया। कमरे का ताला खोल कर मैं ने भीतर की लाइट जलाई, तो लड़के ने कुछ संकोच से पूछा, “अकेले रहते हैं अंकल?” “हां,” कह कर मैं ने लड़के को सोफे पर बैठने का इशारा किया।

वह कुछ सहज हो कर उत्साहित हुआ, फिर बोला, “मैं सामने वाली बिल्डिंग में एक आंटी को डांस सिखाने आता हूँ।”

“अच्छा,” मुझे उस की बात दिलचस्प लगी।

“उन्होंने मुझे 7 बजे का समय दिया हुआ है, पर कभी समय पर घर नहीं आ पातीं,” वह कुछ मायूसी से बोला।

“क्या तुम किसी डांस स्कूल में नौकरी करते हो? मैं ने पूछा।

“नहीं अंकल, मैं तो कालेज में पढ़ता हूँ, पर जहां से मैं ने खुद डांस सीखा था, उन्हीं कोच सर ने मुझे यह ट्यूशन दिलवाई है। मेरा थोड़ा खर्च निकल जाता है। डांस स्कूल का समय दिन का है, तब ये आंटी आ नहीं पातीं,” वह बोला।

“वो आंटी क्या जौब करती हैं, जो रोज देर से घर आती हैं? फिर उन्होंने तुम्हें यह समय दिया ही क्यों?” मैं ने सहज ही कहा।

“जौब नहीं करतीं, हाउसवाइफ हैं. देर तो उन्हें वैसे ही हो जाती है. कभी शौपिंग में, तो कभी सोशल विजिट्स में,” लड़का बोला.

मैं ने देखा कि लड़का पर्याप्त संजीदा और शिक्षित था, स्मार्ट भी.

लड़का उस दिन तो थोड़ी देर बाद चला गया, किंतु अब वह कभीकभी मेरे

तक के लड़केलड़कियां कुंआरे घूम रहे हैं. क्या आप को नहीं लगता कि इस उम्र तक शरीर को दूसरे किसी शरीर की चाहत तो रहती ही होगी? क्या शरीर यह बात समझता है कि अभी हमारे मालिक की नौकरी नहीं लगी है तो मुझे दबसिकुड़ कर रहना है, सूखे टूट की तरह.”

मैं उस की बात अच्छी तरह समझ



में और वह अपरिचित महिला एक तेज धुन पर एकसाथ डांस कर रहे थे, पलट कर देखा तो अभिनव हमारा डांस देख कर ताली बजा रहा था.

पास आने लगा. जब भी वह फुरसत में होता, चला आता. एकदूसरे के बारे में काफीकुछ जान लेने के बाद हमारे बीच काफी बातें होतीं.

वह मुझ से कहता, “अंकल, पहले 15-16 साल की उम्र में लोगों की शादी हो जाती थी, और अब देखिए, 30 साल

गया क्योंकि यह वही बात थी जो मेरे मन में भी आती ही थी.

“क्या यह हमारा अपराध है? वह कहता.”

मैं उस की बात से सहमत होते हुए भी उसे समझाने लगता, “लेकिन शादी के विकल्प भी तो हैं?”

लड़का अब एकाएक थोड़ा खुल गया, बोला, “अंकल, कौन सा विकल्प ऐसा है जिसे समाज गलत या अपराध नहीं मानता, बताइए कोई एक? शरीर में मल, मूत्र, लार, कफ बनते हैं तो निकाल कर फेंकने ही पड़ते हैं।”

बात करतेकरते हम दोनों और नजदीक आ जाते।

मैं अपने अकेलेपन से त्रस्त तो था ही, एक दिन बैठेबैठे मेरे मन में आया कि क्यों न मैं भी डांस सीख लूं? ठीक है कि अब इस उम्र में मुझे कोई कैरियर नहीं बनाना, कहीं प्रस्तुति नहीं देनी, पर अपने मन की खुशी और तन की व्यस्तता का एक उपाय तो यह है ही।

दोचार दिन बीते होंगे कि लड़के को डांस का एक ट्यूशन और मिल गया। यह ट्यूशन मेरा ही था। अब वह सप्ताह में 2 दिन मुझे भी डांस सिखाने लगा। फिर रोज दरवाजा बंद कर के तेज संगीत की आवाज में मैं लगभग एक घंटे तक अकेले ही उस के सिखाए स्टैप्स दोहराता। एक ही कालोनी में पासपास 2 स्टूडेंट्स होने का यह लाभ उसे भी हुआ कि उस का समय अब इंतजार में खराब नहीं होता था। उस की आमदनी भी दोगुनी हो गई। दोनों में से जिस के घर की लाइट्स उसे जली दिखाई देती थीं, वहां वह पहले चला जाता था। इस उम्र के मेरे जैसे नए

विद्यार्थी के साथ उसे बहुत मजा आता। दोनों झूम कर नाचते। नाचतेनाचते दोनों इतना थक कर चूर हो जाते कि... और सारी थकान उतर जाती।

डांस के बाद थक कर हम दोनों गुरुशिष्य निढाल हो जाते और 10-15 मिनट तक दोनों एकदूसरे से लेते पड़े रहते।

एक दिन इसी अवस्था में पड़े हुए देख कर उस ने मेरी ओर अचरज से देखा और बोला, “क्या ढूढ़ रहे हैं अंकल? लगता है जैसे आप का कुछ खो गया है?” कहता हुआ वह चेहरे पर कोई रहस्यमय मुसकान ले कर उठ गया। कुछ देर में वह वापस चला गया।

कभीकभी वह कहा करता था कि डांस की क्लास खत्म होते ही हमारा गुरुचले का रिश्ता खत्म हुआ। आप बड़े हैं, थक गए होंगे, लाइए आप के पांव दबा दूँ? मैं कहता कि तुम भी तो दिनभर की मेहनत के बाद थक जाते होगे, लाओ तुम्हारी कमर को कुछ आराम दूँ।

पहले तो लड़के को इस बात पर घोर आश्चर्य हुआ था कि मैं अब इस उम्र में डांस सीखूंगा लेकिन जल्दी ही उस ने समझ लिया कि बुढ़ापे में आदमी मजबूर सा हो जाता है। उसे कोई नचाने वाला हो, तो कितना भी नाच ले।

खेतिहर हों या कारोबारी, राह सुझाए बारीबारी

फार्म फूड

जमीन में सकीन, सकीन में धन

दिल्ली प्रेस पर प्रकाशन प्रा. लि., ई-8, रानी झॉसी रोड, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055. फोन नं.: 011-41398888, ट्रेमेल - Subscription@delhipress.in



एक दिन एक चमत्कार हुआ. मैं बैठा ही था कि दरवाजे की घंटी बजी. दरवाजा खोला तो सामने एक महिला खड़ी थी. एकाएक मैं उसे पहचाना तो नहीं किंतु

ऐसा लगा जैसे शायद ये वही हैं जो मेरे डांसटीचर से डांस सीखती हैं. मैं ने अकसर सड़क पर आतेजाते उन्हें देखा जरूर था.



बाढ़ जब आती है

बौराई नदी के मुहाने पर खड़ा था वह,
लहरों की चमक देख कर,
लहरें बेचैन थीं,
छू लेने के लिए सबकुछ,
समेटने के लिए सबकुछ.

अच्छा या बुरा,
भूत, वर्तमान और भविष्य,
वह स्थिर था, पर सम्मोहित सा,
लहरों की मोहभरी चमकीली लहरों से.

बाढ़ जब आती है,
समय का इंतजार नहीं करती,
समेट लेती है हर कुछ,
चाहे नैतिक हो या अनैतिक.

जीविका हो या जीवन,
लील जाती है संपूर्ण,
प्रश्न मिटने या मिटाने का नहीं,
प्रश्न उस के वहां होने का भी नहीं.

नदी का समय नहीं,
वह भी खड़ा ही रहा नदी के मुहाने पर,
समय है काल नहीं.
मिटने के बाद कब देखा किस ने,
समय क्या होता है.

नदी के बौराने पर,
मन भी बौरा जाता है,
समयबद्ध आती है प्रलय,
सबकुछ मिटा जाती है,
फिर भी बौराई रहती है नदी.

● जयप्रकाश श्रीवास्तव

अभिवादन के बाद मैं ने उन्हें बैठाया। वे इधरउधर देखते हुए कुछ संकोच से बोलीं, “अभी अभिनव का फोन आया था, वही कोरियोग्राफर सर।”

“ओह, अच्छा, मुझे पता नहीं था कि उस का नाम अभिनव है,” मैं ने कहा।

“जी उस ने कहा है कि आज उसे कुछ देर हो जाएगी, तो...”

“क्या वह नहीं आएगा?” मुझे लगा कि महिला कुछ झिझक रही है।

“नहीं, नहीं, वह देर से आएगा पर उस ने कहा कि मैं तब तक कुछ ऐसे वे स्टैप्स आप को सिखा दूँ जो मुझे सिखा चुका है, क्योंकि वास्तव में वे 2 लोगों के युगल डांस के स्टैप्स हैं, इसलिए अकेलेअकेले समझ में भी नहीं आते,” उन्होंने कुछ संकोच से कहा।

यह मेरे लिए सुखद आश्चर्य था। कुछ मिनट बाद मैं और वह अपरिचित महिला एक तेज धुन पर एकसाथ डांस कर रहे थे। मैं जल्दी ही उन के बताए स्टैप्स सीख गया था और अब हम दोनों ही सुविधाजनक ढंग से साथ में नाच रहे थे।

मुझे महिला की अगवानी की हड़बड़ी में शायद यह भी ध्यान नहीं रहा था कि मैं ने दरवाजा बंद नहीं किया है। हम नाचतेनाचते मनोयोग से घूम कर पलटे तो देखा कि अभिनव, हमारा डांस टीचर, सामने खड़ा ताली बजा रहा था।

“वाह, वाह, ऐक्सीलेंट,” उस ने कहा तो हम दोनों अचकचा कर रुक गए।

हम तीनों ने एकसाथ चाय

पी, जिसे वह महिला ही मेरी रसोई में जा कर बना कर लाई थी।

अभिनव बोला, “डांस मन की खुशी का प्रदर्शन भी है, आप दोनों इतने नजदीक रहते हुए भी एकदूसरे से मिले नहीं, जबकि दोनों को ही डांस का शौक है। अब से मैं आप को सिखाऊंगा अलगअलग, पर दिन में एक बार किसी भी समय आप लोग एकसाथ प्रैक्टिस किया करेंगे।”

मानो, अब से हमारी जिंदगी ही बदल गई। अब हम समाज से शिकायतें नहीं करते थे, कि अकेले समय ही नहीं कटता। हम अब ऐसे मित्र बन गए थे कि दिन में एक बार आधे घंटे के लिए मिलते थे, पर उस आधे घंटे की प्रतीक्षा कई घंटों तक रहती। ऐसा लगता था कि तनमन में बने बांध में अब ठहरा पानी हमें तंग नहीं करता था। वह बह कर न जाने कहां ओझल हो जाता था।

मुझे बरसों पहले मुंबई के एक मुशायरे में सुनी पंक्तियां अकसर याद आ जाती थीं, “दूर सागर के तल में, बूंदभर प्यास छिपी है, सभी की नजर बचा कर, वहीं जाता है पानी...”

अब कभीकभी रात को सोने से पहले मैं सोचता था कि अगर रात को सपने में मेरी पत्नी आई और उस ने यह पूछा कि आप के साथ दोपहर को कौन होता है? तो मैं उसे बता दूंगा कि उस से मेरा कोई लेनादेना नहीं है, वह तो मेरी क्लासफैलो है। हम साथ में एक ही टीचर से पढ़ते हैं और होमवर्क में एकदूसरे की मदद करते हैं। ●

बढ़ती उम्र में भी जरूरी है सान्निध्य

इस तरह के विषयों के सही उत्तर पाने के लिए सरिता नियमित पढ़िए, सरिता के वार्षिक ग्राहक बनिए, रजिस्टर्ड डाक से सुरक्षित डिलीवरी।

Subscription.mag@delhipress.in पर ईमेल भेजिए या **08588843408** पर 10 बजे से 6 बजे तक फोन कर पूरी जानकारी लें।



बच्चों के
मुख से

हम अपने बेटे के परिवार के साथ अमेरिका के डेट्रोइट शहर में रहते हैं। अमेरिका के लगभग सभी प्रवासी भारतीयों की यह कोशिश रहती है कि उन के बच्चे भारत के अपने-अपने प्रांत की भाषा कम से कम बोलना और समझना सीख लें। हम हिंदीभाषी प्रांत के हैं, सो अपने पोतेपोतियों को हिंदी सिखाते रहते हैं।

हमारा पोता निशांत बहुत चंचल, शरारती और बातूनी है। नहाते समय कपड़े उतरवा कर वह बारबार हमारे कमरे में आता और हम उसे नंगू कह कर चिढ़ाते और बाथरूम में जाने को कहते। वह इसे खेल समझ कर बारबार इस क्रिया को दोहराता। उसे नंगू शब्द का अर्थ समझ में आ गया।

एक बार हम सब वीकेंड में घूमतेफिरते शिकागो गए, घूमफिर कर शाम का खाना खाने के लिए वहां के एक मशहूर रैस्तरां में गए जहां बहुत भीड़ थी, सो हम को रैस्तरां के बार में प्रतीक्षा करने के लिए कहा गया। हम से थोड़ी ही दूर एक महिला अपने साथियों के साथ खड़ी थी। महिला ने बहुत कम

कपड़े पहन रखे थे। निशांत ने उस महिला को देख कर जोर से कहा, 'लुक नंगू देअर।' उस की यह बात सुन कर हम एक बार तो सकपका गए। फिर यह सोच कर कि यहां नंगू का मतलब कोई नहीं समझता, हम अपनी हंसी रोक न सके। निशांत हमारी हंसी का कारण न समझ सका। इस बात को लगभग 2 साल हो गए पर आज भी इस घटना को याद कर के हम हंसे बिना नहीं रह पाते।

रमेश शिशु (सर्वश्रेष्ठ)

एक दिन मैं अपनी ड्यूटी पूरी करने के बाद जब घर लौटा तब रात के 9 बज चुके थे। मेरी पत्नी व पुत्र (साढ़े 3 वर्षीय) शिवम खाना खा चुके थे। और खाना खत्म हो चुका था।

मेरी पत्नी ने मेरे लिए जब कुकर में दाल चढ़ाई और कुकर ने सीटी मारी। तब उस में पानी ज्यादा होने के कारण सीटी बजते ही भाप के साथ कुछ पानी व दाल भी बाहर निकल पड़ी, जिसे देख कर मेरा पुत्र शिवम, जिस को जुकाम था, बोल पड़ा, "मम्मी, कुकर को नाकू हो गया।" उस का मतलब था कि कुकर की नाक बह रही है। यह सुनते ही मैं और मेरी पत्नी हंस पड़े।

तोरनलाल साहू •

आप भी भेजें

इस स्तंभ में बच्चों के मुख से कही गई बातें भेज सकते हैं। प्रकाशित अनुभव को 100 रुपए का नकद पुरस्कार दिया जाएगा। पता : सरिता, ई-8,

इंडेवाला एस्टेट,

रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-55.

अपना अनुभव नाम व पते सहित आप

नीचे लिखे नंबर पर एसएमएस या

व्हाट्सएप के जरिए भेजें/

ऑडियो भी कर सकते हैं।

08527666772





jaya

बचपन से ही मातापिता
के स्नेह से वंचित
माधुरी जब ससुराल
गई तो वहां भी पल्लव
के प्यार के सिवा
सासससुर दोनों को ही
बाहर की जिंदगी जीते
देख उसे बड़ी ठेस
पहुंची. लेकिन उस की
तकलीफ के बीच जब
सासुमां ने जिस तरह
उस का खयाल रखा
उस की वह कल्पना भी
नहीं कर सकती थी.

ममता

• सुधा आदेश

माधुरी को आज बिस्तर पकड़े 8 दिन हो गए थे. पल्लव के मित्र अखिल के विवाह से लौट कर कार में बैठते समय अचानक पैर मुड़ जाने के कारण वह गिर गई थी. पैर में तो मामूली मोच आई थी किंतु अचानक पेट में दर्द शुरू होने के कारण उस की कोख में पल रहे बच्चे की सुरक्षा के लिए उस के पारिवारिक डाक्टर ने उसे 15 दिन बैड रैस्ट की सलाह दी थी. अपनी सास को इन 8 दिनों में हर पल अपनी सेवा करते देख उस के मन में उन के प्रति जो गलत धारणा बनी थी एकएक कर टूटती जा रही थी. उसे समझ में नहीं आ रहा था कि मनोविज्ञान की छात्रा होने के बाद भी वह अपनी सास को समझने में चूक कैसे गई?

उसे 2 वर्ष पहले का वह दिन याद आया जब मम्मीजी अपने पति पंकज और पुत्र पल्लव के साथ उसे देखने आई थीं. सुगठित शरीर के साथ सलीके से बांधी गई कीमती साड़ी, बौबकट घुंघराले बाल, हीरों का नैकलेस, लिपस्टिक तथा तराशे नाखूनों में लगी मैचिंग नेलपौलिश में वे बेहद सुंदर लग रही थीं. सच कहें तो वे पल्लव की मां कम बड़ी बहन ज्यादा नजर आ रही थीं तथा मन में बैठी सास की छवि में वह कहीं फिट नहीं हो पा रही थीं. उस समय उस ने तो क्या उस के मातापिता ने भी सोचा था कि इस दबंग व्यक्तित्व में कहीं उन की मासूम बेटी का

व्यक्तित्व खो न जाए. वह उन के घर में खुद को समाहित भी कर पाएगी या नहीं. मन में संशय छा गया था लेकिन पल्लव की नशीली आंखों में छाए प्यार एवं अपनत्व को देख कर उस का मन सबकुछ सहने को तैयार हो गया था.

यद्यपि उस के मातापिता उच्चाधिकारी थे, किंतु मां को सादगी पसंद थी, उस ने उन्हें कभी भी गहनों से लदाफदा नहीं देखा था. वे साड़ी पहनती तो क्या, सिर्फ लपेट लेती थीं. लिपस्टिक और नेलपौलिश तो उन्होंने कभी लगाई ही नहीं थी. उन के अनुसार उन में पड़े रसायन त्वचा को नुकसान पहुंचाते हैं. वैसे भी उन्हें अपने काम से फुरसत नहीं मिलती थी.

पापा को अच्छी तरह से रहने, खानेपीने और घूमने का शौक था. उन की पैंटशर्ट में तो दूर रूमाल में भी कोई दागधब्बा रहने पर वे आसमान सिर पर उठा लेते थे. खानेपीने तथा घूमने का शौक भी मां के नौकरी करने के कारण पूरा नहीं हो पाया था, क्योंकि जब मां को छुट्टी मिलती थी तब पापा को नहीं मिल पाती थी और जब पापा को छुट्टी मिलती तब मां का कोई अतिआवश्यक काम आ जाता था.

उन के घर रिश्तेदारों का आना भी बंद हो गया था, क्योंकि उन्हें लगता था कि यहां आने पर मेजबान की परेशानियां बढ़ जाती हैं तथा उन्हें व्यर्थ की छुट्टी लेनी पड़ती है. अतः वे भी कह देते थे, जब

आप लोगों का मिलने का मन हो तब आकर मिल जाइए.

मां का अपने प्रति ढीलापन देख कर पापा टोकते तो वे बड़ी सरलता से उत्तर देतीं, 'व्यक्ति कपड़ों से नहीं, अपने गुणों से पहचाना जाता है और यह भी एक सत्य है कि आज मैं जो कुछ हूँ अपने गुणों के कारण हूँ.'

वे एक प्राइवेट संस्थान में पर्सनल मैनेजर थीं. कभीकभी ऑफिस के काम से उन्हें दूर पर भी जाना पड़ता था. घर का काम नौकर के जिम्मे था, वह जो भी बना देता सब वही खा लेते थे. मातापिता का प्यार क्या होता है उसे पता ही नहीं था. जब वे छोटी थीं तब बीमार होने पर उस ने दोनों में इस बात पर झगड़ा होते भी देखा था कि उस की देखभाल के लिए कौन छुट्टी लेगा? तब वह खुद को अत्यंत ही उपेक्षित महसूस करती थी. उसे लगता था कि उस की किसी को जरूरत ही नहीं है.

मां अत्यंत ही महत्वाकांक्षी थीं. यही कारण था कि दादी के बारबार यह कहने पर कि वंश चलाने के लिए बेटा होना ही चाहिए, उन्होंने ध्यान नहीं दिया था. उन का कहना था कि आज के युग में लड़का और लड़की में कोई अंतर नहीं रह गया है. बस, परवरिश अच्छी तरह से होनी चाहिए लेकिन वे अच्छी तरह परवरिश भी कहाँ कर पाई थीं? जब तक दादी थीं तब तक तो सब ठीक चलता रहा, लेकिन उन के बाद वह नितान्त अकेली हो गई थी. स्कूल से लौटने के बाद घर उसे काटने को दौड़ता था, तब उसे एक नहीं अनेक बार खयाल आया था कि काश, उस के साथ खेलने के लिए कोई भाई या बहन होती.

माधुरी को आज भी याद है कि हायर

सेकेंडरी की परीक्षा से पहले मैडम सभी विद्यार्थियों से पूछ रही थीं कि वे जीवन में क्या बनना चाहते हैं? कोई डाक्टर बनना चाहता था तो कोई इंजीनियर, किसी की रुचि वैज्ञानिक बनने में थी तो कोई टीचर बनना चाहता था. जब उस की बारी आई तो उस ने कहा कि वह हाउस वाइफ बनना चाहती है. सभी विद्यार्थी उस के उत्तर पर खूब हंसे थे. तब मैडम ने मुसकराते हुए कहा था, 'हाउस वाइफ के अलावा तुम और क्या बनना चाहोगी?' उस ने चारों ओर देखते हुए आत्मविश्वास से कहा था, 'घर की देखभाल करना एक कला है और मैं वही अपनाना चाहूंगी.'

उस की इस इच्छा के पीछे शायद मातापिता का अतिव्यस्त रहना रहा था और इसी अतिव्यस्तता के कारण वे उस की ओर समुचित ध्यान नहीं दे पाए थे और शायद यही कारण था कि वह अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए पल्लव की तरफ आकर्षित हुई थी, जो उस की तरह कालेज में बैडमिंटन टीम का चैंपियन था. वे दोनों एक ही क्लब में अभ्यास के लिए जाया करते थे.

खेलतेखेलते उन में न जाने कब जानपहचान हो गई, पता ही न चला. उस से बात करना, उस के साथ घूमना उसे अच्छा लगने लगा था. दोनों साथसाथ पढ़ते, घूमते तथा खातेपीते थे, यहां तक कि कभीकभी फिल्म भी देख आते थे, पर विवाह का खयाल कभी उन के मन में नहीं आया था. शायद मातापिता के प्यार से वंचित उस का मन पल्लव के साथ बात करने से हलका हो जाता था.

'यार, कब तक प्यार की पींगें बढ़ाता रहेगा? अब तो विवाह के बंधन में बंध जा,' एक दिन बातोंबातों में पल्लव के दोस्त शांतनु ने कहा था.

‘क्या एक लड़की और लड़के में सिर्फ मित्रता नहीं हो सकती. यह शादीविवाह की बात बीच में कहां से आ गई?’ पल्लव ने तीखे स्वर में कहा था.

‘मैं मान ही नहीं सकता. नर और मादा में बिना आकर्षण के मित्रता संभव ही नहीं है. भला प्रकृति के नियमों को तुम दोनों कैसे झुठला सकते हो? वह भी इस उम्र में,’ शांतनु ने पूरे आत्मविश्वास के साथ कहा.

शांतनु तो कह कर चला गया, किंतु नदी की शांत लहरों में पत्थर फेंक गया था. पिछली बातों पर ध्यान गया तो लगा कि शांतनु की बातों में दम है, जिस बात को वे दोनों नहीं समझ सके या समझ कर भी अनजान बने रहे, उस आकर्षण को उस की पारखी निगाहों ने भांप लिया था.

गंभीरतापूर्वक सोचविचार कर आखिरकार माधुरी ने ही उचित अवसर पर एक दिन पल्लव से कहा, ‘यदि हम अपनी इस मित्रता को रिश्ते में नहीं बदल सकते तो इसे तोड़ देना ही उचित होगा, क्योंकि आज शांतनु ने संदेह किया है, कल दूसरा करेगा तथा परसों तीसरा. हम किसकिस का मुंह बंद कर पाएंगे. आज हम खुद को कितना ही आधुनिक क्यों न कह लें किंतु कहीं न कहीं हम अपनी परंपराओं से बंधे हैं और ये परंपराएं एक सीमा तक ही उन्मुक्त आचरण की इजाजत देती हैं.’

पल्लव को भी लगा कि जिस को वह

अभी तक मात्र मित्रता समझता रहा वह वास्तव में प्यार का ही एक रूप है, अतः उस ने अपने मातापिता को इस विवाह के लिए तैयार कर लिया.

पल्लव के पिताजी बहुत बड़े व्यवसायी थे. वे खुले विचारों के थे इसलिए अपने इकलौते पुत्र का विवाह एक उच्च मध्यवर्गीय परिवार में करने को तैयार हो गए. मम्मीजी ने स्पष्ट रूप से कह दिया कि जातिपांति पर उन्हें कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन यदि उन्हें लड़की पसंद आई तभी वे इस विवाह की इजाजत देंगे.

माधुरी के मातापिता अतिव्यस्त अवश्य थे किंतु अपने संस्कारों तथा रीतिरिवाजों को नहीं छोड़ पाए थे इसलिए विजातीय पल्लव से विवाह की बात सुन कर पहले तो काफी क्रोधित हुए थे और विरोध भी किया था, लेकिन बेटी की दृढ़ता तथा निष्ठा देख

कर आखिरकार तैयार हो गए थे तथा उस परिवार से मिलने की इच्छा जाहिर की थी.

दोनों परिवारों की इच्छा एवं सुविधानुसार होटल में मुलाकात का समय निर्धारित किया गया था. बातों का सूत्र भी मम्मीजी ने ही संभाल रखा था. पंकज और पल्लव तो मूकदर्शक ही थे. उन का जो भी निर्णय होता उसी पर उन्हें स्वीकृति की मुहर लगानी थी. यह बात जान कर माधुरी अत्यंत तनाव में थी तथा पल्लव भी मांजी की स्वीकृति का बेसब्री से इंतजार कर रहा था.

बातोंबातों में मां ने झिझक कर कहा था, ‘बहनजी, माधुरी को हम ने लाड़प्यार से पाला है, इस की प्रत्येक इच्छा को पूरा

करने का प्रयास किया है. इस के पापा ने तो इसे कभी रसोई में घुसने ही नहीं दिया. '

'रसोई में तो मैं भी कभी नहीं गई तो यह क्या जाएगी,' बात को बीच में ही काट कर गर्वभरे स्वर के साथ मम्मीजी ने कहा.

मम्मीजी के इस वाक्य ने अनिश्चितता के बादल हटा दिए थे तथा पल्लव और माधुरी को उस पल एकाएक ऐसा महसूस हुआ कि मानो सारा आकाश उन की मुट्ठियों में समा गया हो. उन के स्वप्न साकार होने को मचलने लगे थे तथा शीघ्र ही शहनाई की धुन ने 2 शरीरों को एक कर दिया था.

पल्लव के परिवार तथा माधुरी के परिवार के रहनसहन में जमीनआसमान का अंतर था. समानता थी तो सिर्फ इस बात में कि मम्मीजी भी मां की तरह घर को नौकरों के हाथ में छोड़ कर समाजसेवा में व्यस्त रहती थीं. अंतर इतना था कि वहां एक नौकर था तथा यहां 4, मां नौकरी करती थीं तो ससुराल में सास समाजसेवा से जुड़ी थीं.

मम्मीजी नारी मुक्ति आंदोलन जैसी अनेक संस्थाओं से जुड़ी हुई थीं, जहां गरीब और सताई गई स्त्रियों को न्याय और संरक्षण दिया जाता था. उन्होंने शुरू में उसे भी अपने साथ चलने के लिए कहा और उन का मन रखने के लिए वह गई भी, किंतु उसे यह सब कभी अच्छा नहीं लगा था.

उस का विश्वास था कि नारी मुक्ति आंदोलन के नाम पर गरीब महिलाओं को गुमराह किया जा रहा है. एक महिला जिस पर अपने घरपरिवार का दायित्व रहता है, वह अपने घरपरिवार को छोड़ कर दूसरे के घरपरिवार के बारे में चिंतित रहे, यह कहाँ तक उचित है? कभीकभी तो ऐसी संस्थाएं अपने नाम और शोहरत के लिए

भोलीभाली युवतियों को भड़का कर स्थिति को और भी भयावह बना देती हैं.

उसे आज भी याद है कि उस की सहेली नीता का विवाह दिनेश के साथ हुआ था. एक दिन दिनेश अपने मित्रों के कहने पर शराब पी कर आया था तथा नीता के टोकने पर नशे में उस ने नीता को चांटा मार दिया. यद्यपि दूसरे दिन दिनेश ने माफी मांग ली थी तथा फिर से ऐसा न करने का वादा तक कर लिया था, किंतु नीता, जो महिला मुक्ति संस्था की सदस्य थी, ने इस बात को ऐसे पेश किया कि उस की ससुराल की इज्जत तो गई ही, साथ ही तलाक की स्थिति भी आ गई और आज उस का फल उन के मासूम बच्चे भोग रहे हैं.

ऐसा नहीं है कि ये संस्थाएं भलाई का कोई काम ही नहीं करतीं, लेकिन यह भी उतना ही सच है कि किसी भी प्रतिष्ठान की अच्छाइयां छिप जाती हैं जबकि बुराइयां न चाहते हुए भी उभर कर सामने आ जाती हैं.

वास्तव में स्त्रीपुरुष का संबंध अटूट विश्वास, प्यार और सहयोग पर आधारित होता है. जीवन एक समझौता है. जब 2 अजनबी सामाजिक दायित्वों के निर्वाह हेतु विवाह के बंधन में बंधते हैं तो उन्हें एकदूसरे की अच्छाइयों के साथसाथ बुराइयों को भी आत्मसात करने का प्रयत्न करना चाहिए. प्रेम और सद्भाव से उस की कमियों को दूर करने का प्रयास करना चाहिए, न कि लड़झगड़ कर अलग हो जाना चाहिए.

मम्मीजी की आएदिन समाचारपत्रों में फोटो छपती. कभी वह किसी समारोह का उद्घाटन कर रही होतीं तो कभी विधवा विवाह पर अपने विचार प्रकट कर रही होतीं, कभी वह अनाथाश्रम जा



“यह बहू होने के साथसाथ मेरी बेटी भी है तथा मेरे होने वाले पोते की मां भी है,” मम्मीजी की आंखों में यह बोलते हुए माधुरी के लिए प्यार था.

कर अनाथों को कपड़े बांट रही होतीं तो कभी किसी गरीब को अपने हाथों से खाना खिलाती दिखतीं. वह अत्यंत व्यस्त रहती थीं. वास्तव में वह एक सामाजिक शक्तिशाली बन चुकी थीं, उन का जीवन घरपरिवार तक सीमित न रह कर दूरदराज तक फैल गया था. वह खुद ऊंची, बहुत ऊंची उठ चुकी थीं, लेकिन घर उपेक्षित रह गया था, जिस का खमियाजा परिवार वालों को भुगतना पड़ा था. घर में कीमती चीजें मौजूद थीं किंतु उन का उपयोग नहीं हो पाता था.

मम्मीजी ने समय गुजारने के लिए उसे किसी क्लब की सदस्यता लेने के लिए कहा था किंतु उस ने अनिच्छा जाहिर कर दी थी. उस के अनुसार घर की 24 घंटे की नौकरी किसी काम से कम तो नहीं है. जहां तक समय गुजारने की बात है उस के लिए घर में ही बहुत से साधन मौजूद थे. उसे पढ़नेलिखने का शौक था, उस के कुछ लेख पत्रिकाओं में प्रकाशित भी हो चुके थे. वह घर में रहते हुए अपनी इन रुचियों को पूरा करना चाहती थी.

यह बात अलग है कि घर के कामों में लगी रहने वाली महिलाओं को शायद वह इज्जत और शोहरत नहीं मिल पाती है जो बाहर काम करने वाली को मिलती है. घरेलू औरतों को हीनता की नजर से देखा जाता है लेकिन माधुरी ने स्वेच्छा से घर के कामों से अपने को जोड़ लिया था. घर के लोग, यहां तक कि पल्लव ने भी यह कह कर विरोध किया था कि नौकरों के रहते क्या उस का काम करना उचित लगेगा.

तब उस ने कहा था कि ‘अपने घर का काम अपने हाथ से करने में क्या बुराई है, वह कोई निम्न स्तर का काम तो कर नहीं रही है. वह तो घर के लोगों को अपने हाथ का बना खाना खिलाना चाहती है. घर की सजावट में अपनी इच्छानुसार बदलाव लाना चाहती है और इस में भी वह नौकरों की सहायता लेगी, उन्हें गाइड करेगी.

उस की बात सुन कर मम्मीजी ने मुंह बिचका दिया था लेकिन जो घर नौकरों के द्वारा चलने से बेजान हो गया था माधुरी के हाथ लगाने मात्र से सजीव हो उठा था. इस बात को पापाजी और पल्लव के साथ मम्मीजी ने भी महसूस किया था.

पल्लव, जो पहले रात में 10 बजे से पहले घर में कदम नहीं रखता था. वही अब ठीक 5 बजे घर आने लगा. यही हाल उस के पापाजी का भी था. एक बार भावुक हो कर पापा ने कहा भी था, ‘बेटा, तुम ने इस धर्मशाला बन चुके घर को पुनः घर बना दिया. सचमुच जब तक घरवाली का हाथ घर में नहीं लगता तब तक घर सुव्यवस्थित नहीं हो पाता है.’

एक बार पापाजी उस के हाथ के बने पनीर के पकवान की तारीफ कर रहे थे कि मम्मीजी चिढ़ कर बोलीं, ‘भई, मुझे

तो बाहर के कामों से ही फुरसत नहीं है। इन बेकार के कामों के लिए समय कहाँ से निकालूँ?’

‘बाहर के लोगों के लिए समय है, किंतु घर वालों के लिए नहीं,’ तीखे स्वर में ससुरजी ने उत्तर दिया था जो सास के जरूरत से अधिक घर से बाहर रहने के कारण अब परेशान हो उठे थे।

‘मैं अपनी पूरी जिंदगी घर में निठल्ले बैठे नहीं गुजार सकती। वैसे ही अपनी जिंदगी का अहम हिस्सा इस परिवार को भेंट कर ही चुकी हूँ, लेकिन अब और नहीं कर सकती,’ आक्रोश में सास ने उत्तर दिया था।

‘मम्मीजी, घर में भी दूसरे सैकड़ों जरूरी काम हैं, यदि किए जाएं तो,’ कहना चाह कर भी माधुरी कह नहीं सकी थी। व्यर्थ ही उन का गुस्सा बढ़ जाता और हासिल कुछ भी न होता। हो सकता है वे अपनी जगह ठीक हों वरना कौन पढ़ीलिखी औरत फालतू के कामों में अपनी पूरी जिंदगी बिताना चाहेगी।

मम्मीजी का निर्णय अपना है। पर वह उस सचाई को कैसे भूल सकती है जिस के पीछे उस का भोगा हुआ अतीत छिपा है, तनहाइयाँ छिपी हैं, रुदन छिपा है, जिस को देखने का, पहचानने का उस के पालकों के पास समय ही नहीं था। उस समय उसे लगता था कि ऐसे दंपती संतान को जन्म ही क्यों देते हैं, जब उन के पास बच्चों के लिए समय ही नहीं है। वह बेचारा उन की प्यारभरी निगाह के लिए जीवनभर तड़पता ही रह जाता है लेकिन वह निगाह उसे नसीब नहीं होती। आज इंसान पैसों के पीछे भाग रहा है, लेकिन पैसों से मन की शांति, प्यार तो नहीं खरीदा जा सकता।

एक बच्चे को जब मां की कोख की गर्मी चाहिए तब उसे बोटल और पालना

मिलता है, जब वह मां का हाथ पकड़ कर चलना चाहता है, अपनी तोतली आवाज में दुनियाभर के प्रश्न पूछ कर अपनी जिज्ञासा शांत करना चाहता है, तब उसे आया के हाथों में सौंप दिया जाता है या महानगरों में खुले क्रेचों में, जहां उस का बचपन, उस की भावनाएं, उमंगें कुचल कर रह जाती हैं। वह एकाकीपन से इतना घबरा उठता है कि अकेले रहने मात्र से सिहर उठता है।

उसे याद है कि वह 15 वर्ष तक अंगूठा पीती रही थी, अंगूठा चूसना उसे न केवल मानसिक तृप्ति देता था वरन आसपास किसी के रहने का एहसास भी कराता था। अचानक किसी को सामने पा कर चौंक उठना तथा ठीक से बातें न कर पाना भी उस की कमजोरी बन गई थी। इस कमजोरी के लिए भी सदा उसे ही दोषी ठहराया जाता रहा था।

जब सब बच्चे स्कूल में छुट्टी होने पर खुश होते थे तब माधुरी चाहती थी कि कभी छुट्टी हो ही न, क्योंकि छुट्टी में वह और अकेली पड़ जाती थी। मातापिता के काम पर जाने के बाद घर खाने को दौड़ता था। घर में सुखसुविधा का ढेरों सामान मौजूद रहने के बावजूद उस का बचपन सिसकता ही रह गया था। वह नहीं चाहती थी कि उस की संतानें भी उसी की तरह घुटघुट कर जीते हुए किसी अनहोनी का शिकार हों या मानसिक रोगी बन जाएं।

बाद में पल्लव से ही पता चला था कि प्रारंभ में तो मम्मी पूरी तरह घरेलू ही थीं किंतु पापा के व्यापार में निरंतर मिलती सफलता के कारण वे अकेली होती गईं तथा समय गुजारने के लिए उन्होंने समाज सेवा प्रारंभ की। बढ़ती व्यस्तता के कारण घर को नौकरों पर छोड़ा जाने लगा और अब उन्होंने उस क्षेत्र में ऐसी जगह बना

ली है कि जहां से लौटना उन के लिए न तो संभव है और शायद न ही उचित.

“बेटी, नाश्ता कर ले,” मम्मी का स्नेहिल स्वर उसे चौंका गया और वह अतीत की यादों से निकल कर वर्तमान में आ गई.

“न जाने तुम ने मम्मी पर क्या जादू कर दिया है कि सबकुछ छोड़ कर तुम्हारी तीमारदारी में लगी हैं,” मम्मीजी को आवश्यकता से अधिक उस की देखभाल करते देख पल्लव ने उसे चिढ़ाते हुए कहा था.

“क्यों नहीं करूंगी उस की देखभाल ? तू तो सिर्फ मेरा बेटा ही है किंतु यह तो बहू होने के साथसाथ मेरी बेटी भी है तथा मेरे होने वाले पाते की मां भी है,” मम्मीजी, जो पास में खड़े बेटे की बात सुन रही थीं, ने अपनी चिरपरिचित मुसकान के साथ कहा था.

मम्मीजी जहां पहले एक दिन घर में रुकने के नाम पर भड़क जाती थीं, वहीं वह सप्ताहभर से अपने सारे कार्यक्रम छोड़ कर उस की देखभाल में लगी हैं. आज माधुरी को खुद पर ग्लानि हो रही थी. उस के मन में उन के लिए कितने कलुषित विचार थे. वास्तव में उन्होंने सिद्ध कर दिया था कि स्त्री पहले मां है बाद में पत्नी या अन्य रूपों को जीती है. मां रूपी प्रेम का स्रोत कभी समाप्त नहीं होता. ममता कभी नहीं मरती.

मम्मीजी उन स्त्रियों में से नहीं थीं जो घरपरिवार के लिए अपना पूर्ण जीवन समर्पित करना अपना ध्येय समझती हैं, वे उन से कहीं परे थीं, अलग थीं. अपनी मेहनत और लगन से उन्होंने समाज में अपनी एक खास पहचान बनाई थी.

अब उस की यह धारणा धूमिल होती



कुछ लोग

कुछ लोग जहां जाते हैं वहां खुशियां लाते हैं, कुछ लोग जब जाते हैं तब खुशियां लाते हैं. — अरैस्क्य वाइल्ड

सरिता

जा रही थी कि समाज सेवा में लिप्त औरतें घर से बाहर रहने के लिए ही इस क्षेत्र में जाती हैं. कुछ अपवाद अवश्य हो सकते हैं.

उसे लग रहा था कि बच्चों की जिम्मेदारी से मुक्त होने के बाद यदि संभव हो सका तो वह भी देश के गरीब और पिछड़े वर्ग के उत्थान के लिए अपना योगदान अवश्य देगी. फिलहाल तो उसे अपनी कोख में पलने वाले बच्चे की ओर ध्यान देना है, जो उस की जरा सी असावधानी से मरतेरते बचा है. सोचतेसोचते उस ने करवट बदली और उसी के साथ ही उसे महसूस हुआ मानो वह कह रहा है, ‘ममा, जरा संभल कर, कहीं मुझे फिर से चोट न लग जाए.’

‘नहीं बेटा, अब तुझे कुछ नहीं होगा. मैं हूं न तेरी देखभाल के लिए,’ माधुरी ने दोनों हाथों से बड़े पेट को ऐसे थाम लिया मानो वह गिरते हुए अपने कलेजे के टुकड़े को पकड़ रही है. उस के चेहरे पर मातृत्व की गरिमा, अजन्मे के लिए अनोखा, अटूट प्रेम दिखाई दे रहा था. ●



विषबेल

• पुष्पा भाटिया

सुंदर, पढ़ीलिखी शर्मिला ने अपने शांत घर के माहौल को खराब कर दिया था. वह अपने हठ के सामने किसी की न सुनती थी. उस ने हर छोटी समस्या को विकराल बना दिया था. आखिर उस ने ऐसा क्यों किया?



समीर न जाने कब से आराम कुरसी पर बैठा हुआ था. कहने को लैपटॉप खुला हुआ था, पर शायद एक भी मेल उस ने पढ़ी नहीं थी. रविवार के दिन वह अकसर नंदिनी मौसी से बालकनी में कुरसी डलवा कर बैठ जाता करता था. पर आज तो सूरज की अंतिम किरण अपना आंचल समेट चुकी थी,

शीत ऋतु की ठंडी हवाएं अजीब सी सिहरन उत्पन्न कर रही थीं, पर वह फिर भी यों ही बैठा रहा. एक बार नंदिनी मौसी फिर चाय के लिए पूछ गई थीं. बड़े ही प्यार से उन्होंने समीर के कंधे पर हाथ रखा तो उस की आंखें भीग आई थीं.

एक सांस छोड़ते हुए उस ने बस, इतना ही कहा, “नहीं मौसी, आज जी नहीं कर रहा कुछ भी खाने को.”

“मैं जानती हूं, क्यों नहीं जी कर रहा. पर कम से कम अंदर तो चलो, ठंडी हवाएं हड्डियों को छेद देती हैं.”

कैसे कहे मौसी से कि जब मन लहलुहान हो गया है तो शरीर की चिंता किससे होगी? नंदिनी मौसी जबरन लैपटॉप, मोबाइल उठा कर चली गई, तो हार कर उसे उठना पड़ा. कभीकभी वह खुद से प्रश्न करता, क्या इस घर को कोई घर कह सकता है?

मां के मुख से उस ने हमेशा एक ही बात सुनी थी, “घर बनता है अपनत्व, प्यार, ममता, समर्पण और सामंजस्य से. अगर ईंट, सीमेंट, गारे और रेत की दीवारों से घर बनता तो लोग सराय में न रह लेते.”

अपनी पत्नी के रूप में उस ने ऐसी सहचरी की कामना की थी जो मन, वचन और कर्म से उस का साथ देती. विवाह तो प्रणयबंधन है, लेकिन शर्मिला व्यवहार, शिष्टाचार, मानअपमान से पूर्णतया विमुख थी. यदि दबे स्वर में कभी कोई कुछ कहता भी, तो इतना चिल्लाती कि वह स्तब्ध रह जाता. न जाने शर्मिला की अपेक्षाएं अधिक थीं या खुद उस की, पर इतना अवश्य था कि घुटने हमेशा उस ने या उस के परिवार के सदस्यों ने ही टेके थे.

पुरानी बातें चलचित्र की तरह आंखों के आगे चल पड़ीं...

मां और बाबूजी कितने चाव से शर्मिला

को अपने घर की बहू बना कर लाए थे। बड़े भाई की असामयिक मौत से कराहते घर में एक लंबे समय के बाद खुशियों की कोंपलें फूटी थीं। मां सब से कहतीं, 'शर्मिला हमारे घर की बहू नहीं, बेटी है.'

लेकिन उस ने अगले ही दिन से अपने रंग दिखाने शुरू कर दिए। समीर ने याद किया, मुंहदिखाई की रस्म पर ड्राइंगरूम में काफी महिलाएं जमा थीं। रस्म संपन्न होने के बाद मां ने शर्मिला से प्यार से कहा, 'समीर अपने कमरे में नाश्ता कर रहा है, बहू तू जा कर उस के पास बैठ.''

'मैं क्या उस के मुंह में घास दूंगी,' शर्मिला बोली थी। ऐसा लगा, जैसे महाभारत प्रारंभ होने से पहले अर्जुन का सलामी तीर हो।

यह सुनते ही उपस्थित सभी महिलाओं ने एकदूसरे को निहारा, फिर मां को उलाहना दिया, 'खूबसूरती के चक्कर में दहेज छोड़ा और रकम को भी लात मारी, अब भुगतो बहू के तेवर.'

'निसंदेह देवयानी, सौंदर्य, शिक्षा और स्वास्थ्य के चयन के आधार पर तो तुम्हारा चयन श्रेष्ठ है, किंतु तुम्हारी बहू में भावुकता और संवेदनशीलता नाम को भी नहीं है।' एक अन्य महिला बोली, 'अरे, देवयानी तो हीरा समझ कर लाई थी। अब बहू कांच का टुकड़ा निकली, तो जख्म भी वह ही बरदाश्त करेगी.'

'तुम लोग बहू का मजाक तो समझती नहीं हो, बात का बतंगड़ बना रही हो,' हंसते हुए यह कहने के साथ चायनाश्तामिष्टान प्रस्तुत कर मां ने हंस कर बात का प्रसंग वहीं समाप्त कर दिया था। लेकिन समीर का मन बेचैन हो गया था। क्या सोचती होंगी ये महिलाएं? बाहर

निकल कर कितनी बातें बनाएंगी शर्मिला और उस के परिवार के बारे में?

रात को जब सभी अपनेअपने कमरे में सोने के लिए चले गए तो समीर ने शर्मिला को उस की गलती का एहसास दिलाया, 'मां से बात करने का तुम्हारा तरीका सही नहीं था शर्मिला.'

'ऐसा क्या कह दिया मैं ने तुम्हारी मां से?'

'रिश्ते का न सही, उम्र का लिहाज तो किया होता.'

'देखो समीर, मेरा तो यही तरीका है बात करने का, चाहे किसी को अच्छा लगे या बुरा.'

शर्मिला ने चादर ओढ़ी और मुंह दूसरी ओर फेर कर सो गई। लेकिन समीर पूरी रात करवट बदलता रहा। सुबह उठा तो आंखें लाल थीं। चेहरा बुझा हुआ। देवयानी बेटे का चेहरा देखते ही पहचान गई कि अंदर से कोई बात उसे बुरी तरह कचोट रही है। चाय का कप थमा कर उन्होंने जैसे ही समीर के कंधे पर हाथ रखा, उस के मुंह से अनायास ही निकल गया, 'नम्रता, सहिष्णुता और बड़ों का आदर तो मानवीय भावनाएं हैं न मां, इन्हीं से तो सुख का संचार होता है.'

'लेकिन स्वभाव और संस्कार तो विरासत में मिलते हैं,' जवाब बड़ी बूआ ने दिया था। फिर वे देवयानी से मुखातिब हो कर बोलीं, 'मैं ने तो भाभी तुम्हें पहले ही सचेत किया था कि इस घर से रिश्ता मत जोड़ो। शर्मिला की बड़ी बहन, शादी के एक साल के बाद ही तलाक ले कर मायके लौट आई थी.'

'लेकिन दुनिया में सारी उंगलियां बराबर तो नहीं होतीं, जीजी,' देवयानी ने मुसकरा कर जवाब दिया।

'तुम्हारी बहू के भी लच्छन सही नहीं दिख रहे,' बूआ बोली थीं।

‘किसी पौधे को अपनी जड़ जमाने में थोड़ा समय तो लगता है,’ देवयानी ने ननद को चुप रहने का संकेत किया। फिर वे समीर से बोलीं, ‘समीर, जाने की तैयारी शुरू कर दो, कल रात की ट्रेन से तुम दोनों को मनाली के लिए निकलना है।’

धीरेधीरे सभी रिश्तेदार विदा हो गए। समीर का छोटा भाई अरविंद भी 2 दिनों बाद इंटरशिप के लिए लखनऊ विदा हो गया। अब घर में 4 सदस्य थे। सास, ससुर, समीर और शर्मिला। तीनों ही हंसमुख और शर्मिला से स्नेह करने वाले। सुधाकर, मेरठ में बैंक मैनेजर थे। समीर को भी प्रोजैक्ट मैनेजर होने के नाते अच्छा वेतन मिलता था। खानेपीने, पहननेओढ़ने का स्तर जरूर मध्यवर्गीय था लेकिन घर में आधुनिक सुखसुविधाओं के सभी साधन उपलब्ध थे। देवयानी पूरी तरह आश्वस्त थीं कि बहू ससुराल में रम जाएगी।

लेकिन, शर्मिला ने अगले दिन से ही शांत सरोवर में पत्थर फेंकना शुरू कर दिया। दरअसल, समीर के ग्रुप लीडर ने उस की छुट्टी कैंसिल कर के उसे तुरंत ऑफिस पहुंचने की ताकीद की थी।

‘नहीं मां, मुझे कल से ही ऑफिस जॉइन करना होगा। प्रोजैक्ट की डैडलाइन नजदीक है, कल रात ही मेल आया था।’

टिकट कैंसिल कराए गए तो शर्मिला ने तूफान मचा दिया। वह किसी भी कीमत पर मनाली जाना चाहती थी। समीर ने

आश्वस्त किया, ‘प्रोजैक्ट समाप्त हो जाने के बाद हम जरूर कहीं घूमने चलेंगे।’

लेकिन शर्मिला ने तो जिद पकड़ ली थी। एक मत से उस ने तय किया कि जब तक समीर दफ्तर के काम में व्यस्त है, शर्मिला पीहर जा कर घूम आए, मन बहल जाएगा।

अगले 15 दिन समीर के व्यस्तता में कटे। देररात तक वह दफ्तर में ही बैठा रहता। घर लौटने के बाद कौल पर व्यस्त रहता। काम की व्यस्तता के चलते उसे शर्मिला से बात करने का भी समय न मिलता था।

प्रोजैक्ट समाप्त होने के बाद समीर ने दोबारा मनाली के टिकट बुक करवाने के लिए शर्मिला को फोन किया, तो उस ने चिढ़ कर जवाब दिया, “3 टिकट बुक करना, नीरा भी हमारे साथ चलेगी।”

‘नी... रा... हनीमून पर... हमारे साथ...?’

‘जी हां, समीर साहब, तुम मुझे तब नहीं ले गए थे न, हर्जाना तो भुगतना ही पड़ेगा।’

फिर थोड़ा विनम्र स्वर में बोली, ‘तलाक के बाद बेचारी नीरा घर में

कैद हो कर रह गई है, हमारे साथ चलेगी तो उस का दिल बहल जाएगा।’

समीर संयत रहा। उस समय उसे कोई जवाब नहीं सूझ रहा था। ‘ठीक है,’ कह कर उस ने फोन काट दिया और 3 टिकट बुक करवा लिए।

हंसती, खिलखिलाती दोनों बहनें हिचकोले खाती बसयात्रा का भरपूर

आनंद लूट रही थीं। पिछली सीट पर बैठा समीर सहयात्रियों से बातें कर के मन बहलाता, कभी ऊंधने लगता। शर्मिला ने नीरा को अपनी जिद के बारे में बताया, तो उस ने शर्मिला की पीठ थपथपा दी, बोल पड़ी, 'वाह, तू ने तो मैदान मार लिया.'

8 दिन मनाली भ्रमण के दौरान दोनों बहनों ने ट्रैकिंग, ग्लाइडिंग, घुड़सवारी से ले कर हर महंगे रैस्टोरैंट में जम कर लंचडिनर के स्वाद चखे। पेमेंट समीर करता रहा। वापसी में शर्मिला ने पश्मीना शौल खरीदने की फरमाइश की, तो समीर ने एक शौल मां के लिए भी खरीद ली। इस पर शर्मिला अड़ गई, 'अपनी मां के लिए, मुझे भी एक शौल खरीदनी है.'

समीर अनुमान से ज्यादा खर्चा कर चुका था। उस का बैंक बैलेंस बुरी तरह बिगाड़ चुका था। फिर भी, शर्मिला की बात का मान रखने के लिए उस ने एक शौल अपनी सास के लिए और एक स्टौल छोटी बहन जया के लिए भी खरीद लिया।

वापस लौट कर शर्मिला ने अपनी मां को फोन मिलाया और मनाली यात्रा के संस्मरण सुनाने लगी। हैरानपरेशान सा समीर दौड़भाग में जुटी अपनी मां को देखता, तो कभी पसीनेपसीने हो रही नंदिनी मौसी को। लेकिन पलंग पर आराम फरमाती शर्मिला को किसी से सरोकार न था।

दोपहर के 2 बज चुके थे। नंदिनी

मौसी चौंके में लंच तैयार कर रही थीं। शर्मिला ने उठ कर खाना खाया। फिर समीर को टैक्सी बुक करने के लिए कहा।

'कहां जाना है?'

'मां के पास.'

'कल चली जाना, फिलहाल सफर की थकान तो उतार लो.'

'2-3 घंटे में आ जाऊंगी समीर, मां की बहुत याद आ रही है.'



बच्चे के आने पर शर्मिला के रंग और बदल गए। देवयानी और सुधाकर को तो वह बच्चा छूने तक नहीं देती थी।

उस ने बच्चों की तरह मचल कर कहा, तो समीर ने टैक्सी बुक कर दी।

2 घंटे को कह कर शर्मिला जब रात तक वापस नहीं लौटी तो समीर ने फोन घुमा दिया, 'कल शाम मां और पापा मेरठ जा रहे हैं। उन के जाने से पहले लौटने की कोशिश करना.'

'यों अचानक...?'

‘पापा के बौस ने फोन किया था, इसीलिए अचानक प्रोग्राम बन गया.’

‘तो पापा अकेले चले जाएं.’

‘काफी दिन हो गए मां को भी घर छोड़े हुए, जाना जरूरी है, पता नहीं वहां भी घर किस हाल में होगा.’

‘कुछ दिन उन के साथ रह लेती, तो अच्छा लगता,’ उस ने अतिरिक्त मीठे स्वर में समीर से कहा.

तभी, पीछे से उस की मां और बहनों का स्वर सुनाई दिया, ‘इतनी खुशामद करेगी तो सिर पर चढ़ कर बैठ जाएंगे तेरे घर वाले. जाती हैं तो जाएं.’

‘खुशामद करूंगी, तभी तो समीर पल्लू से बंधा रहेगा.’

समीर ने बिना कुछ कहे फोन रख दिया. 2 दिनों बाद शर्मिला वापस लौटी तो समीर का मूड उखड़ा हुआ था. शर्मिला ने बेपरवाही से अपना सामान व्यवस्थित किया, मैले कपड़े बाहर आंगन में नल के पास रखे और रिमोट उठा कर टीवी का स्विच ऑन कर के अपना मनपसंद सीरियल देखने लगी. बाहर निकली तो पटरे पर धुलने के बाद निचुड़े हुए कपड़े रखे थे. उस ने पैर से उन्हें नीचे गिरा दिया.

‘यह क्या किया बहू? सुखाने के लिए पटरे पर कपड़े रखे थे.’

‘मैं सुखाने के लिए ही अपने कपड़े छांट रही थी,’ शर्मिला ने कहा और गंदे तरीके से नंदिनी मौसी की नाराजगी की प्रतीक्षा करने लगी.

‘रहने दो बहू, मैं तुम दोनों के कपड़े सुखा दूंगी,’ मौसी ने हंस कर कहा. तो शर्मिला ने शांत सरोवर में पत्थर फेंका, ‘आप को कोई भी काम ढंग से करना आता भी है?’

‘आज तक हमारे परिवार में नंदिनी

मौसी से किसी ने इस तरह से बात नहीं की. और तुम...?’

‘सीधे क्यों नहीं कहते कि मुझे इस नौकरानी की इज्जत करनी होगी.’

‘नंदिनी मौसी नौकरानी नहीं, हमारे परिवार की घनिष्ठ हैं. उन्होंने मुझे और अरविंद को गोद में खिलाया है.’

तब तक शर्मिला थाली खिसका चुकी थी, ‘मैं ने आज तक अपनी मां की दो कौड़ी की इज्जत नहीं की, इन की इज्जत क्या खाक करूंगी. शुक्र मनाओ, इन के हाथ का बना इतना बेस्वाद खाना खा रही हूं. एक बार मेरे हाथ का खाना खा कर तो देखना, उंगलियां चाटते रह जाओगे.’

‘30 वर्ष से अधिक हो गए रसोई बनाने हुए, हर चीज पूरी तरह कहां सीख पाई हूं. बहू, तुम जैसा कहोगी, वैसा बना दूंगी,’ नंदिनी मौसी की आंखों में आंसू आ गए.

‘अरे नहीं मौसी, घर में और भी बहुत काम हैं, शर्मिला को चौका संभालने दीजिए न.’

शर्मिला ने समीर की तरफ गौर से देखा, कहीं कटाक्ष तो नहीं कर रहा, किंतु वह निश्छल था और उस की हामी की प्रतीक्षा कर रहा था. अब शर्मिला घबरा गई. नंदिनी मौसी जैसी अनुभवी महिला के सामने उस का ज्ञान तो पासंगभर भी नहीं था. असल में शर्मिला तो वाकप्रहार के लिए हर समय आतुर रहती थी. शांतिपूर्ण वार्ता के लिए उस के पास तर्क ही कहां थे.

अगले दिन से रसोईघर से निकलने के लिए वह नुकसान पर नुकसान करने लगी. कभी कांच का गिलास तोड़ देती, कभी नई प्लेट पटक देती. गैस चूल्हे पर कभी दूध उफन जाता, कभी दालचावल बिखर जाते. मौसी ही समेटतीं और वह

बिना पूछे गर्व से सफाई देती, 'मैं उठाऊंगी तो धूलमिट्टी से मेरा रंग मैला हो जाएगा.'

कभी वह सब्जी से भरा बरतन सावधानी से लुढ़का देती, चूल्हे पर तवा और परात में पलेथन रह जाता वगैरहवगैरह.

एक दिन समीर को दफ्तर के काम से 2 दिनों के लिए हैदराबाद जाना था. ऊपर लौफ्ट में से बैग निकाल कर उस ने सामान सैट किया. फिर ताला बंद करने के लिए जैसे ही चाबी घुमाई, बैग का ताला हाथ में आ गया. उस ने कलाई में बंधी घड़ी पर नजर डाली. कुल एक घंटे का समय शेष रह गया था फ्लाइट छूटने में.

'सस्ता रोए बारबार, महंगा रोए एक बार,' शर्मिला ने हंस कर ठिठोली की.

'ब्रैंडेड कंपनी के बैग को तुम सस्ता कह रही हो? ऐसा क्या ले आईं तुम दहेज में?'

शर्मिला ने इसे जबरदस्ती का मौका बना लिया और रोने लगी, 'तुम मुझे दहेज न लाने का ताना मार रहे हो.'

उस का रोना निराधार था. किंतु चूजे को सींक काफी, समीर स्तब्ध रह गया. उसे समझ में नहीं आ रहा था बैग का ताला ठीक करे या पत्नी को संभाले? इधर घड़ी की सुई अपनी रफ्तार से आगे बढ़ती जा रही थी. उधर, एअरलाइंस से फोन पर फोन आ रहे थे.

उस ने उस फ्लाइट का टिकट कैंसिल कराया और अगली फ्लाइट का बुक कर लिया. उस का जाना जरूरी था, बोर्ड मीटिंग जो थी.

नया बैग खरीदने के लिए उस ने कार की चाबी निकाली ही थी कि शर्मिला अचानक उदारता दिखलाते हुए बोली, 'मार्केट जाने और आने में काफी समय निकल जाएगा, तुम मेरा बैग ले जाओ.'

सुझाव अच्छा था. समीर मान गया. जैसे ही उस ने सामान बैग में रखा, शर्मिला ने चोट की, 'संभाल कर ले जाना, कहीं खोंचा न लगे. पूरे 5,000 रुपए का है.'

शर्मिला को पूरा विश्वास था, समीर सामान निकाल कर बैग फर्श पर पटक देगा. किंतु वह अपमान का घुंट पी कर भी मुसकराता रहा, 'मैं ने हमेशा महंगा सामान ही इस्तेमाल किया है शर्मिला. चिंता मत करो, तुम्हारा बैग सहीसलामत ही वापस लाऊंगा.'

2 दिनों बाद समीर वापस लौटा, तो उपहारस्वरूप शर्मिला के लिए हैदराबाद से मोतियों का पूरा सैट ले आया. शर्मिला सैट देख कर उछल पड़ी, 'हैदराबाद में रंगीन मोतियों की माला भी मिलती है समीर?' उस ने दूसरा डब्बा खोलने के लिए हाथ बढ़ाया तो समीर बोला, 'यह मां के लिए है.'

उस ने जैसे ही डब्बा खोल कर शर्मिला को दिखाया, उस का चेहरा मुरझा गया. सास के लिए मोतियों की माला उसे बरदाश्त नहीं हुई.

शाम को समीर ने अपने विवाह के उपलक्ष्य में एक छोटी सी पार्टी का आयोजन किया था. सारा इंतजाम होटल में रखा गया. कुछ वरिष्ठ, कुछ कनिष्ठ, कुछ सहकर्ता अफसर आमंत्रित थे. सभी आमंत्रित मेहमानों ने शर्मिला के रूप, लावण्य और शिक्षा की खूब प्रशंसा की, तो समीर ने भी पत्नी के गुणों की प्रशंसा की. साथ ही, यह भी कहा, 'उच्च शिक्षित होने के बावजूद वह एक अच्छी गृहस्थन भी है.' यह सुन शर्मिला अवाक रह गई.

आखिरकार, अपशब्दों पर उतर आई और समीर पर झूठ बोलने का आरोप

लगाया. 'झूठा' संबोधन से ही समीर अवाक रह गया. ठंडी सांस ले कर बोला, 'शर्मिला, मुझे आज तक किसी ने 'झूठा' नहीं कहा और तुम्हें जरा भी झिझक नहीं हुई?'

'नहीं, क्योंकि मैं जानती हूं तुम ने मेरी झूठी प्रशंसा की है.'

'लगता है, मां ने इस आंगन में तुलसी के स्थान पर नागफनी रोप ली है.'

'इस नागफनी को तुम्हें पानी भी देना पड़ेगा और ध्यान भी रखना पड़ेगा.' शर्मिला एकदम निर्लज्ज बनी थी.

उस रात समीर की हलक से एक निवाला नहीं उतरा. सारी रात यही सोचता रहा, 'किस मिट्टी की बनी है शर्मिला. न वाणी में मिठास है, न व्यवहार में नम्रता, हर समय घात लगाए बैठी रहती है कि कैसे किसी का अपमान करे.'

एक दिन समीर के सिर में तेज दर्द था. उस ने शर्मिला को पुकारा. दफ्तर में वह अनुशासन अधिकारी था, उस की आवाज में दम था. सो, उस की सहज बातचीत में भी शर्मिला को आदेश की गंध आती थी. ऐसे वाक्यांशों को वह अनसुना कर देती थी. उस ने सुन कर भी अनसुना कर दिया. समीर का धैर्य टूट गया.

'क्या कम सुनाई पड़ने लगा है?' शर्मिला मौन रही.

'क्या ऊंचा सुनने लगी हो?'

शर्मिला को अपनी मां से पता चल चुका था, इस घर में 7 पीढ़ियों से किसी औरत पर हाथ नहीं उठाया गया है. सो, उस ने शेरनी की तरह व्यवहार किया, "इतवार को मेरा मूड खराब मत करो. मेरे कान बिलकुल ठीक हैं. अगर गुस्सा आ गया तो मिट्टी का तेल डाल कर आग लगा लूंगी.'

'क्या कहा?'" समीर चीख कर

Follow the Rules



नियम

नियम नंबर 1 : कभी पैसा मत गंवाइए.

नियम नंबर 2 : कभी नियम नंबर 1 मत भूलिए.

— वारेन बफेट

सरिता

उछल पड़ा, जैसे सांप ने सामने से फुफकार मारी हो.

'जो तुम ने सुना,' शर्मिला ने स्वर धीमा नहीं किया, 'यही कि अधिक परेशान करोगे तो मैं आत्महत्या कर लूंगी. तुम्हारे साथ दूसरे भी बंधेबंधे फिरेंगे, सारी इंजीनियरिंग धरी की धरी रह जाएगी.'

'कितने घटिया संस्कार हैं तुम्हारे?'

'तो छोड़ दो मुझे, तलाक दे दो.'

समीर बुरी तरह डर गया. डरी तो शर्मिला भी थी मगर नारीहठ पुरुष के अहं को पराजित करने के लिए मन प्राण से जुटा था. असल में कुतर्कपूर्ण असभ्य संवाद शैली के कारण शर्मिला का अकसर समीर से झगड़ा हो जाता था. घर की बात घर से बाहर न निकले, इसलिए समीर हमेशा घुटने टेक देता था. शर्मिला इसे अपनी जीत समझ कर अपनी मां और बहनों की वाहवाही बटोरती. संक्षेप में कहा जाए तो उस ने

नंदन कानन को श्मशानभूमि में बदल सा दिया था।

समस्या ने विकराल रूप तब धारण किया, जब नन्हा गौरव इस परिवार का सदस्य बना। समीर को पूरी उम्मीद थी कि शर्मिला के स्वभाव में अब बदलाव आएगा। अब वह इस परिवार से जुड़ेगी। लेकिन जुड़ना तो दूर, उस ने देवयानी और सुधाकर को उसे छूने तक नहीं दिया और जता दिया कि वह अपने बच्चे की देखभाल भलीभाँति कर सकती है। बढ़ावा देने के लिए बहनों तो थीं ही, अब उस के अभियान में मां भी शामिल हो गईं।

‘मेरा बेटा है, चाहे जिस प्रकार रखूं, मारूं या पालपोस कर बड़ा करूं.’

समीर ने बड़े दुखी स्वर में कहा, ‘इस मासूम ने किसी का क्या बिगाड़ा है शर्मिला? अपने हठ में तुम ने गर्भ के समय भी किसी का कहना नहीं माना। न मां की सलाह सुनी, न डाक्टर की हिदायतें, न पौष्टिक आहार ही अपनी डाइट में शामिल किया, इसलिए गौरव इतना कमजोर है.’

‘तुम यही कहना चाहते हो न कि, ‘गौरव मेरी लापरवाही के कारण कमजोर है? नहीं, वह तुम्हारी बेवकूफी और गैरजिम्मेदाराना हरकतों की वजह से कमजोर है। तुम न अच्छे पति बन सके, न अच्छे पिता.’

समीर के भीतर की कड़वाहट उस के सामने फूट पड़ना चाहती थी, फिर भी वह खुद को बांधे रहा। जानता था कि शर्मिला कभी भी अपनी गलती नहीं मानेगी। उस की मां ने बचपन से ही अपनी बेटियों को समर्पण का जवाब ठोकर से देना सिखाया है।

अगर समीर उसे गोद में उठाना चाहता,

तो शर्मिला उसे भी दो कड़वे बोल सुना कर दूर छिटक देती। अगर देवयानी और सुधाकर उसे खिलाना चाहते, तो ऐसा कुहराम मचाती कि पूरा घर ज्वालामुखी के मुहाने पर जा बैठता।

समीर तर्क देता, ‘एक व्यक्ति को कई लोग एकसाथ प्यार कर सकते हैं क्योंकि वह किसी का बेटा, किसी का भाई, किसी का पति और किसी का मित्र होता है। सभी तो उसे चाहेंगे। गौरव पर निश्चय ही सब से अधिक तुम्हारा अधिकार है, किंतु मेरे परिवार के लोग भी तो उस से स्नेह करते हैं और उस के सच्चे हितैषी हैं.’

किंतु शर्मिला ने किसी की न सुनी और गौरव को ले कर मायके चली गई ताकि उस की मां गौरव का लालनपालन कर सके। बहनों के सामने उस ने बढ़चढ़ कर अपनी विजय पताका लहराने के किस्से सुनाए तो तलाकशुदा बहन नीरा और छोटी बहन शिल्पा ने उस के समर्थन में सिर हिला दिया।

शर्मिला को मायके आए हुए एक महीने से ऊपर हो चुका था। शुरू में मां ने दुलारा, पुचकारा, सहानुभूति जतलाई, सांत्वना भी प्रकट की। बहनों ने भी उस के साहस की खूब प्रशंसा की। फिर, सभी अपनीअपनी राह हो लिए। मां अपनी सभासोसाइटियों और भजन मंडलियों में व्यस्त हो गईं। बहनों का पूरा दिन सैरसपाटे, किटी पार्टियों और शौपिंग में बीत जाता। उस के बाद जो समय बचता, उस दौरान मन बहलाने के लिए फेसबुक और व्हाट्सऐप जैसी विधाएं तो थीं ही।

काम करने की आदत शर्मिला को नहीं थी, ससुराल में तो नंदिनी मौसी गरमगरम पका कर थाली हाथ में पकड़ाती थीं। उस पर भी वह मीनमेख निकालती रहती थी, अब मायके में काम करना पड़ा तो

पैरोंतले से जमीन खिसकने लगी. नीरा और जया खाना होटल से मंगवाने की राय देतीं. 2-4 बार उस ने मंगवाया भी, लेकिन बजट बिगड़ने लगा, तो हाथ रोकना पड़ा. फिर, नवजात गौरव के लिए दलिया और सूप तो बनाना ही पड़ता था.

शर्मिला से जितना बन पड़ता, घर का काम करती. गौरव को भी संभालती. पिता की छोटी सी दुकान थी. मुट्ठीभर कमाई से क्या खाते क्या निचोड़ते? इतना पैसा नहीं था कि एक नौकर रखा जा सके. अपने रोजमर्रा के खर्चें शर्मिला एटीएम से पैसे निकाल कर पूरे कर लेती थी. जो थोड़ीबहुत रकम बचती, उसे उस की बहनें उड़ा देतीं.

शर्मिला के न दिल को आराम था न शरीर को. एक बार उस के मन में आया कि वापस लौट जाए अपने घर, फिर अहम आड़े आ गया. खुद घर छोड़ कर आई थी, बिन बुलाए जाने का मतलब था समीर के तलवे चाटना और उसे यह कतई मंजूर नहीं था.

इधर, समीर का बुरा हाल था. शर्मिला झगड़ालू थी, किसी की इज्जत नहीं करती थी, कोई बात ही नहीं मानती थी, फिर भी उस के रहने से घर में चहलपहल रहती थी. कोई बोलने वाला तो था. गौरव के आने के बाद तो घर की सूनी दीवारें भी बोलने लगी थीं.

पुरानी बातें याद कर समीर का सिर भारी हो गया था.

देवयानीजी अब रोज पूछतीं, “शर्मिला कब आ रही है?”

समीर हर संभव नियंत्रण करता,

लेकिन उस के भीतर का हाहाकार साफ दिखाई दे जाता. पिता समझाते, “पतिपत्नी के बीच अहम का कोई प्रश्न ही नहीं उठता. स्नेहवश झुकना पराजय की स्वीकृति नहीं होती, जा कर बहू को ले आ.”

शर्मिला ऐसे ही विचारों में खोई थी, तभी उस के पिता कन्हैया लाल ने प्रवेश किया, बोले, “बेटी, समीर आया था तुझे लेने दुकान पर. अरविंद को लखनऊ से आए हुए 3 महीने हो गए हैं, अब उस की क्लीनिक का शुभारंभ होने वाला है. मैं और जया भी चलेंगे.”

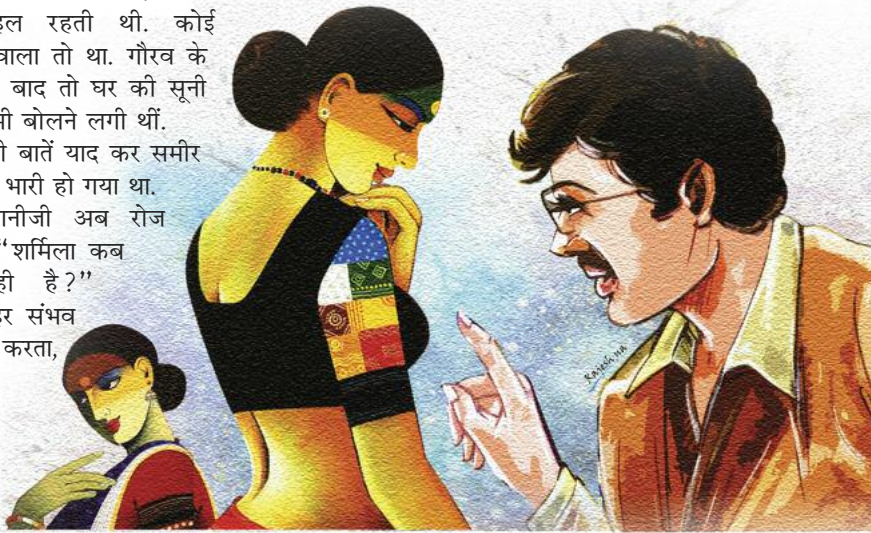
“जया भी...”

“हां, सोचता हूं कि अरविंद के साथ जया का रिश्ता पक्का कर दूं, जानापहचाना परिवार है. तू भी वहीं है, तेरे सासससुर और समीर सभी सज्जन हैं. जया खुश रहेगी.”

“कहां है समीर?”

“दुकान पर. तेरी प्रशंसा कर रहा था. उस ने तेरी कोई शिकायत नहीं की. मैं ने अरविंद के साथ जया के रिश्ते की बात की,

“आज तक हमारे परिवार में नंदिनी मौसी से किसी ने इस तरह से बात नहीं की और तुम...” समीर गुस्से से फूट पड़ा.



तो बोला, “अगर शर्मिला को यह रिश्ता पसंद है तो मैं अरविंद से बात करता हूँ.”

शर्मिला मन ही मन सोच रही थी, “निहायत बदतमीज, धूर्त और समूचे घर की दुश्मन होने पर भी मेरे ऊपर इतना भरोसा?”

“मैं गंगा तर जाऊंगी बेटी,” शर्मिला की मां ने भी पति का पक्ष लिया.

शर्मिला सोच में पड़ गई.

“यह रहा निमंत्रणपत्र,” कन्हैया लाल ने निमंत्रणपत्र आगे बढ़ाया तो शर्मिला निमंत्रणपत्र पढ़ कर अवाक रह गई, “क्लिनिक का उद्घाटन मेरे करकमलों द्वारा, सरकारी अस्पताल के सिविल सर्जन और मैडिकल कालेज के प्रख्यात प्रोफैसर्स को छोड़ कर?”

“समीर से कह दीजिए, हम पहली ट्रेन से ही चलेंगे.”

“लेकिन समीर को भोजन आदि? पहली बार आए हैं.”

“आप चिंता न करें. बस, मेरी बात जा कर कह दें. हम रास्ते में ही कहीं कुछ खा लेंगे,” शर्मिला तैयारी में जुट गई.

सुहागश्रृंगार से सजी पत्नी को देख कर समीर सुखद आश्चर्य में डूब गया, “शर्मिला?”

समीर को गौरव थमा कर शर्मिला बोली, “तुम ने मुझे माफ कर दिया?”

“मैं तुम से रूठा ही कब था, नाराज तो तुम थीं.”

“तभी तुम ने अरविंद के आने की मुझे कोई सूचना नहीं दी?” उस ने तनिक रूठ कर उलाहना दिया.

“अरविंद तुम्हारा बहुत आदर करता है. वह तुम्हें सरप्राइज देना चाहता था. इसीलिए अपने क्लीनिक के रेनोवेशन में लगा हुआ था.”

क्लीनिक के उद्घाटन समारोह के बाद एकांत पाते ही कन्हैया लाल ने शर्मिला को घेरा, “मैं जया को इसलिए साथ लाया हूँ बेटी कि बात अभी पक्की हो जाए.”

“पिताजी, आप ने देखा शहर के प्रतिष्ठित लोगों के बीच अरविंद और उस के नौजवान साथी डाक्टरों ने मेरे पैर छू कर मुझ से आशीर्वाद मांगा. विश्वास कीजिए उन क्षणों में मेरी उम्र बढ़ गई और मैं समझदार हो गई. पिताजी रूप, लावण्य तो कुदरत की देन है, असली सुंदरता तो गुणों और संस्कारों से आती है. अफसोस है कि मां और आप ने मुझे इस अमूल्य धरोहर से वंचित रखा,” शर्मिला ने गंभीर स्वर में पिता को उलाहना दिया, “पिताजी इस घर के लोग बड़े सरलसीधे और सच्चे हैं, आज की दुनियादारी और चालाकी से कोसों दूर.

“मैं इन्हें तिलतिल कर के मार रही थी, किंतु अब इन्हें और मरने नहीं दूंगी. मेरा अरविंद तो एकदम भोला है, हमेशा दूसरों पर निर्भर और विश्वास करने वाला. जया तो उस की जिंदगी में जहर घोल देगी. मैं उस के लिए ऐसी सुंदर, सुशिक्षित और संस्कारी लड़की लाऊंगी, जो अरविंद के जीवन को सुवासित फूलों से भर दे.”

“यह क्या कह रही है तू शर्मिला?”

“हां पिताजी, मैं आप की बेटी हूँ मगर बाद में. पहले मैं इस घर की बहू हूँ और मेरे लिए जो असंदिग्ध आस्था प्रकट की गई है उस का निर्वहण मैं करूंगी. जया के लिए ऐसा मूर्ख घरबार मिलने में देर नहीं लगेगी जो कन्या के सौंदर्य और शिक्षा के सामने संस्कारों की तलाश नहीं करता. अरविंद के साथ जया की शादी हरगिज नहीं होगी.”

और शर्मिला की बड़ीबड़ी आंखों में अडिग संकल्प के साथ पानी तैर आया. कन्हैया लाल प्रकाशहीन विद्युत स्तंभ की भांति निश्छल खड़े थे. ●



ऐसा भी होता है

कुछ समय से मेरे सामने वाले प्लॉट पर काम चल रहा था। वहाँ कुछ मिस्त्री, कुछ महिलाएं मजदूरी कर रहे थे। उन में से एक महिला देखने में निहायत खूबसूरत थी, जिसे मैं अकसर अपनी छत से देखा करती थी। बाकी महिलाओं से अलग गोरा रंग, काले बाल, भूरी आंखें, चटक लाल सिंदूर से भरी मांग। धूल से सने पैरों पर पहनी हवाई चप्पल उस की बिछिया को ढांक रही थी।

अभीअभी बनी दीवार पर पलस्तर चढ़ रहा था। वह मिस्त्री को सीमेंट ला ला कर दे रही थी। बाकी लोग दीवार के उस तरफ थे। कुछ देर के लिए मिस्त्री शायद बीड़ी पीने इधरउधर निकल गया था। वह अकेली खड़ी अपनी साड़ी ठीक कर रही थी कि अचानक कालाकलूटा हब्बी सा एक व्यक्ति आया और उसे पीछे से आकर अपनी आगोश में ले लिया।

वह घबरा कर अपने को उस से छुड़ा कर छिटक कर दूर खड़ी हो गई। उस के मुंह से एक हलकी सी चीख निकल गई, जिसे सुन कर दीवार के उस तरफ से महिलाएं आ गईं और पूछताछ करने

लगीं। उस ने जब बताया तो महिलाएं कहने लगीं, “अरे, वह तो अपना ही ठेकेदार है। यदि वह हमारी मजदूरी के पैसे न देगा तो हम खाएंगे क्या?” मैं ने देखा कि उस के चेहरे पर आक्रोश था।

वे औरतें उसे समझा रही थीं, “तेरे आदमी की तबीयत खराब है। तुझे काम पर तो आना ही होगा।” उस ने इस बात का कोई जवाब नहीं दिया। शाम को काम खत्म कर के सब अपने घर को लौट गई थीं। दूसरे दिन मैं ने ठेकेदार की आवाज सुनी। वह पेड़ के नीचे बैठा कराह रहा था। उस खूबसूरत औरत ने उसे डंडे से पीटा था क्योंकि उस ने उसे फिर से छेड़ने की कोशिश की थी।

कुतूहलवश मैं नीचे गई और ठेकेदार से पूछा, “क्या हुआ? ज्यादा चोट तो नहीं आई?” उस ने धीरे से कहा, “यहाँ पर पत्थर से ठोकर लगी। मैं गिर गया था।”

वह औरत उसे घूर रही थी। मुझे देख कर उस का उस के प्रति आक्रोश फूट पड़ा था, “हम लोग मजबूरी में हियां काम पर आवें हैं, चालू न हैं हम, समझा?” मैं सोच रही थी, हम औरतों की इतनी पढ़ाईलिखाई किस काम की, जो कार्यक्षेत्रों में अपने अधिकारों को नहीं समझतीं।

डा. वासंती रामचंद्रन (श्रेष्ठ) ●

आप भी भेजें

इस स्तंभ के लिए पाठकों के अनुभव आमंत्रित हैं। प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ अनुभव को 100 रुपए का नकद पुरस्कार दिया जाएगा।

पता : सरिता, ई-8, झंडेवाला एस्टेट,

रानी झांसी मार्ग,
नई दिल्ली-55.

अपना अनुभव नाम व पते सहित आप

नीचे लिखे नंबर पर एसएमएस या

व्हाट्सऐप के जरिए भेजें।

ऑडियो भी कर सकते हैं।

08527666772



विश्वतेढ़ाव

• गरिमा पंकज

कौन कहता है कि पराए अपने नहीं हो सकते. नए शहर में आ कर सौम्या अकेली पड़ गई थी. लेकिन उस ने अपनेपन का ऐसा तानाबाना बुना कि रिश्ते अपनेआप बनते गए...

सौम्या बालकनी में खड़ी आसमान की ओर देख रही थी. सुबह से ही नीले आसमान को कालेकाले शोख बादलों ने अपनी आगोश में ले रखा था. बारिश की नन्हीनन्ही बूंदों के बाद अब मोटीमोटी बूंदें गिरने लगी थीं. सावन के महीने की यही खासीयत होती है. पूरी प्रकृति बारिश में नहा कर खिल उठती है. सौम्या का मनमयूर भी नाचने को विकल था. सुहाने मौसम में वह भी पति की बांहों में सिमट जाना चाहती थी. मगर क्या करती, उस का पति अनुराग तो अपने कमरे में कंप्यूटर से चिपका बैठा था.

वह 2 बार उस के पास जा कर उसे उठाने की कोशिश कर चुकी थी. एक बार फिर वह अनुराग के कमरे में दाखिल होती हुई बोली, “प्लीज चलो न बाहर, बारिश बंद हो जाएगी और तुम काम ही करते रह जाओगे.”

“बोला न सौम्या, मुझे जरूरी काम है. तुम चाहती क्या हो? बाहर जा कर क्या

करूंगा मैं? तुम भूल क्यों जाती हो कि अब हम प्रौढ़ हो चुके हैं. तुम्हारी नवयुवतियों वाली हरकतें अच्छी नहीं लगती.”

तुनकते हुए सौम्या ने कहा, “मैं कौन सा तुम से रेनडांस करने को कह रही हूँ? बस, बरामदे में बैठ कर सुहाने मौसम का आनंद लेने ही को कह रही हूँ. गरमगरम चाय और पकौड़े खाते हुए जीवन के खट्टेमीठे पल याद करने को कह रही हूँ.”



“देखो सौम्या, मेरे पास इतना फालतू वक्त नहीं कि बाहर बैठ कर प्रकृति निहारूं और खट्टेमीठे पल याद करूं. मुझे चैन से काम करने दो. तुम अपने लिए कोई सहेली या रिश्तेदार ढूंढ लो, जो हरदम तुम्हारा मन लगाए रखे और हर काम में साथ दे,” कह कर अनुराग फिर से काम में लग गया और मुंह बनाती हुई सौम्या किचन में घुस गई.

वह इस शहर में करीब 4 साल पहले आई थी. अनुराग का ट्रांसफर हुआ तो पुराना शहर छोड़ना पड़ा. पुरानी सहेलियां और पुरानी यादें भी पीछे छूट गईं. इस शहर में अभी किसी से ज्यादा परिचय नहीं है उस का. वैसे भी, यहां लोग अपनेअपने घरों में कैद रहते हैं. बगल के घर में मिस्टर गुप्ता अपनी मिसेज के साथ रहते हैं. 60 साल के करीब के ये दंपती दरवाजा खोलने में बहुत आलसी हैं. दूसरी तरफ मिस्टर भटनागर हैं, जो 2 बेटों के साथ रहते हैं. उन की पत्नी का देहांत हो चुका है.

खुद सौम्या के दोनों बच्चे अब ऊंची कक्षाओं में आ चुके हैं. इसलिए हमेशा किताबें या लैपटॉप खोल कर बैठे रहते हैं. बड़ा बेटा इंजीनियरिंग एंट्रेंस टैस्ट की तैयारी कर रहा है जबकि बिटिया बोर्ड परीक्षा की तैयारी में जुटी है.

पूरे घर में सौम्या ही है जो व्यस्त नहीं है. घर के काम निबटा कर उसे इतना वक्त आराम से मिल जाता है कि वह अपने दिल के काम कर सके. कभी किताबें पढ़ना, कभी पेंटिंग करना और कभी यों ही प्रकृति को निहारना उस का मनपसंद टाइमपास है. इन सब के बाद भी कई बार उस का टाइम पास नहीं होता, तो वह उदास हो जाती है. इस शहर में उस का कोई रिश्तेदार भी नहीं.

वैसे भी वह घर की इकलौती बिटिया थी. पिता की मौत के बाद मां ने ही उसे संभाला था. अभी भी सौम्या दिल से मां के बहुत करीब है. मां खुद बहुत व्यस्त रहती हैं. वैसे भी, वे दूसरे शहर में सरकारी नौकरी



में हैं। सौम्या की एकदो सहेलियां हैं, मगर फोन पर कितनी बात की जाए।

सौम्या का मन आज बहुत उदास था। शाम तक उसे कहीं सुकून नहीं मिला। रात में बिस्तर पर लेटेलेटे उस ने एक प्लान बनाया। अगले दिन सुबहसुबह पति और बच्चों के साथ वह भी तैयार होने लगी।

बेटी ने जब सौम्या को कहीं जाने के लिए तैयार होते देखा तो पूछ बैठी, “ममा, आप कहां जा रहे हो?”

“फिल्म देखने,” इठलाती हुई सौम्या बोली।

बेटी ने फिर से सवाल किया, “मगर किस के साथ?”

“खुद के साथ。”

“यह क्या कह रहे हो आप? भला फिल्म भी खुद के साथ देखी जाती है? अकेली क्यों जा रही हो आप? कितना अजीब लगेगा。”

“तो फिर क्या करूं, बता जरा। तुम चलोगी मेरे साथ? तुम्हारे पापा चलेंगे? नहीं न। कोई रिश्तेदारी या सहेली है इस शहर में मेरी? नहीं न। बताओ, फिर क्या करूं? अजीब लगेगा, यह सोच कर अपने मन को मारती रहूं? मगर कब तक? कभी तो हिम्मत करनी पड़ेगी न मुझे अकेले चलने की। सब के होते हुए भी मैं अकेली जो हूं。”

सौम्या की बात सुन कर घर के सभी सदस्यों की नजरें सौम्या पर जा टिकीं। मगर कोई कुछ बोल न सका। सौम्या बैग उठा कर और सैंडल पहन कर घर से निकल गई।

वैसे, अजीब तो उसे वाकई लग रहा था, कभी भी अकेली फिल्म देखने जो नहीं गई थी। बाहर आ कर उस ने बैटरी रिकशा लिया और सब से नजदीकी सिनेमाहॉल पहुंच गई, जो एक छोटे मौल में था। वैसे यहां अधिक भीड़ नहीं रहा

करती थी मगर फिल्म अच्छी होने की वजह से कई जोड़े युवकयुवतियां काउंटर के बाहर मंडराते नजर आए। जैसे ही काउंटर खुला, लंबी लाइन लग गई। 15 मिनट लाइन में लग कर आखिरकार उस ने टिकट हासिल कर लिया।

सिक्योरिटी चैक के बाद अंदर दाखिल हुई तो देखा बहुत से लड़केलड़कियां बैठ कर शो शुरू होने का इंतजार कर रहे हैं। सब आपस में बातें कर रहे थे। उसे कुछ अजीब सा लग रहा था। मगर वह अपना आत्मविश्वास खोना नहीं चाहती थी। मोबाइल पर सहेली को फोन लगा कर बातें करने लगी। कुछ ही देर में शो शुरू होने का समय हो गया। टिकट चैकिंग के बाद एकएक कर सब को अंदर भेजा जाने लगा। वह भी अंदर जा कर अपनी सीट पर बैठ गई। बगल की सीट पर एक लड़की को देख उसे तसल्ली हुई। वह भी अकेली बैठी हुई थी। सौम्या ने उस से हलकीफुलकी बातचीत आरंभ की। तब तक उस लड़की का बॉयफ्रेंड आ गया और दोनों आपस में मशगूल हो गए।

सौम्या चैन से फिल्म देखने लगी। इंटरवल के समय जब लड़का पौपकौर्न वगैरह लेने जाने लगा तो सौम्या ने उस के द्वारा अपने लिए भी स्नैक्स मंगा लिए। इंटरवल में सौम्या ने उस लड़की से काफी बातें कीं। वह लड़की काफी चुलबुली और प्यारी सी थी। लड़का भी अच्छा लग रहा था। फिल्म खत्म होने पर तीनों साथसाथ बाहर निकले। सौम्या को यह जान कर आश्चर्य हुआ कि दोनों उसी के महल्ले के थे। सौम्या ने उन दोनों को घर चलने का निमंत्रण दिया। दोनों तैयार हो गए।

सौम्या दोनों के साथ घर पहुंची। उस वक्त अनुराग ऑफिस में और बच्चे

स्कूल में थे. सौम्या ने फटाफट चाय और पकौड़े बनाए और दोनों को मन से खिलाया. लड़की का नाम नेहा और लड़के का नितिन था. एक घंटा बातचीत करने के बाद दोनों चले गए.

सौम्या का मन आज बहुत खुश था. उस का पूरा दिन बहुत खूबसूरत जो गुजरा था. अब तो वह अकसर नितिन और नेहा को घर पर बुलाने लगी. कभी नितिन व्यस्त होता तो नेहा अकेली आ जाती. दोनों मिल कर शॉपिंग करने जाते तो कभी कहीं घूमने निकल जाते.

सौम्या को नितिन और नेहा के रूप में मनचाहे साथी या कहिए रिश्तेदार मिल गए थे. वहीं, नितिन और नेहा के लिए सौम्या दोस्त, बहन, मां, दादी, गाइड और दोस्त जैसे किरदार निभा रही थी. वे सौम्या से दोस्त की तरह अपनी हर बात शेयर करते. सौम्या कभी बहन की तरह प्यार लुटाती तो कभी मां की तरह उन की फिफ्र करती. कभी दादी की तरह आज्ञा देती तो कभी गाइड की तरह सही रास्ता दिखाती. उन दोनों को कोई भी समस्या आती, तो वे बेखटके सौम्या के पास पहुंच जाते. सौम्या उन के लिए हमेशा तैयार रहती. वैसे भी वह पूरे दिन घर में अकेली होती थी. सो, इन दोनों के साथ खुल कर समय बिताती.

एक दिन दोपहर के समय नेहा सौम्या के घर आई. दरवाजा खुलते ही वह सौम्या के सीने से लग कर रोने लगी. सौम्या घबरा गई. उसे बैठा कर पानी ले आई. नेहा की आंखें सूजी हुई थीं. वह अब भी रो रही थी.

नेहा का कंधा थपथपाते हुए सौम्या ने कारण पूछा तो नेहा ने बताया, “सौम्या

इन्हें आजमाइए

✓ अपने बैडरूम के डैकोरेशन के लिए रैक लगाएं जिस में आप की किताबें, कौस्मेटिक्स, एक्सेसरीज, सबकुछ आसानी से फिट हो जाएगा. आजकल बाजार में बहुत सारे रंग और डिजाइन में ये उपलब्ध होते हैं और कमरे की लुक को बिल्कुल बदल देते हैं.

✓ ऐक्सरसाइज और सैर को अपने मौर्निंग रूटीन का जरूरी हिस्सा बनाएं. हर रोज कम से कम 10 मिनट ही सही, सैर जरूर करें. इस से आप एनर्जेटिक महसूस करेंगे, फिट भी रहेंगे और बीमारियों से भी दूर रहेंगे.

✓ सुबह चेहरे पर मौइश्चराइजर या सीरम का उपयोग करने से पहले गुलाब जल को अपने चेहरे पर स्प्रे करें. यह त्वचा को हाइड्रेट करने का एक शानदार तरीका है, साथ ही फिनिशिंग टच के साथ मेकअप को फिक्स करने में भी मदद करता है.

✓ सदा खुश रहिए. यह वह परफ्यूम है जिस की खुशबू दूसरों तक पहुंचाने के लिए पहले इसे अपने पर छिड़किए.

✓ बालों को टाइट बांधना, हौट रोलर्स व ब्लो ड्रायर व आयरन के ज्यादा इस्तेमाल करने से भी बाल डैमेज हो जाते हैं. इसीलिए कोशिश करें कि बालों को प्राकृतिक ही रहने दें और बालों पर बहुत ज्यादा एक्सपैरिमेंट करने से बचें. ●

दीदी, मैं अब नितिन से कभी बात नहीं करूंगी."

"अरे, ऐसा क्या हो गया?" चौंकते हुए सौम्या ने पूछा.

"कुछ नहीं दीदी. वह मुझे से सच्चा प्यार नहीं करता. उसे तो कोई भी लड़की चलती है."

“यह कैसी बकवास कर रही है तू?" डांटते हुए सौम्या ने कहा तो वह फूट पड़ी, "दीदी, आज मुझे कालेज जाने में थोड़ी देर हो गई थी. 12 बजे के करीब पहुंची, तो पता है मैं ने क्या देखा?"

"क्या देखा?"

"मैं ने देखा कि नितिन एक नई लड़की के साथ कैटीन में बैठा कौफी पी रहा है. यह दृश्य देखते ही मैं अपसैट हो गई और बाहर लौन में आ कर एक बेंच पर बैठ गई. जानती हूँ फिर क्या हुआ?"

"क्या हुआ?"

"फिर नितिन उस लड़की का बैग उठाए लौन में आया और दोनों एक बेंच पर बैठ कर बातें करने लगे. नितिन ने मुझे देखा नहीं था. उस का ध्यान तो पूरी तरह उस लड़की पर था. जाने कितनी देर दोनों एकदूसरे की आंखों में देखते हुए बातें करते रहे. मेरा दिल जल उठा और मैं वहां से उठ कर चली आई. क्लास में जाने का भी दिल नहीं हुआ." नेहा की आंखें फिर से भर आई थीं.

सौम्या हंसती हुई बोली, "बस, इतनी सी बात है?"

"दीदी, यह इतनी सी बात नहीं. आज नितिन ने दिखा दिया कि वह जरा भी वफादार नहीं है."

"पागल है तू, ऐसा कुछ नहीं," सौम्या ने नेहा को समझाना चाहा कि तब तक सौम्या की बेटी आरुषि घर में दाखिल हुई.

"अरे, क्या हुआ बेटे, आप जल्दी आ गए?"

"हां मम्मा, तबीयत ठीक नहीं थी. फीवर है."

"ओह, रुक, मैं आती हूँ."

तब तक नेहा उठ खड़ी हुई, "दीदी, आप आरुषि को संभालो. मैं अभी चलती हूँ. फिर आऊंगी."

"ठीक है नेहा, पर इस बात को सीरियसली मत लेना. हो सकता है वह लड़की नितिन की जानपहचान की हो."

"जी दीदी, मैं अभी चलती हूँ." नेहा चली गई और सौम्या आरुषि की देखभाल में लग गई.

अगले 3-4 दिनों तक सौम्या आरुषि में ही लगी रही क्योंकि उसे तेज बुखार था. चौथे दिन जब वह थोड़ी ठीक हुई तो उसे नेहा का ध्यान आया. उस ने नेहा को फोन किया तो उस ने उठाया नहीं. घबरा कर सौम्या ने नितिन को फोन लगाया और नितिन से नेहा के बारे में पूछा.

नितिन ने उदास स्वर में कहा, "हमारा ब्रेकअप हो गया है दीदी. 3 दिन हो गए मेरी नेहा से कोई बात नहीं हुई."

"पर ऐसा क्यों?"

"दीदी, नेहा बहुत शक्की लड़की है. अजीब तरह से रिऐक्ट करती है. मैं अब उस से कभी बात नहीं करूंगा."

"पागल हो क्या? ऐसे नहीं करते. कल मेरे पास आओ. मुझे मिलना है तुम से."

"ठीक है दीदी. कल 3 बजे आता हूँ."

अगले दिन सौम्या ने नेहा को फिर से फोन लगाया. उस ने उदास स्वर में 'हैलो' कहा तो सौम्या ने उसे 3 बजे घर आने को कहा.

फिर 3 बजे के करीब नितिन और नेहा दोनों ही सौम्या के घर पहुंचे. एकदूसरे को देखते ही उन्होंने मुंह बनाया और

खामोशी से बैठ गए. सौम्या ने कमान संभाली और नेहा से पूछा, “नेहा, तुम्हारी क्या शिकायत है?”

नेहा ने ठंडा सा जवाब दिया, “यह दूसरी लड़कियों के साथ घूमता है.”

नितिन ने घूर कर नेहा को देखा और नजरें फेर लीं. सौम्या ने अब नितिन से पूछा, “तुम्हें क्या कहना है इस बारे में नितिन?”

“दीदी, इस ने मुझे से इतने रूखे तरीके से बात की जो मैं आप को बता नहीं सकता. 2 दिन तो मेमसाहब मुझे से मिलीं नहीं और न ही फोन उठाया. जब तीसरे दिन जबरदस्ती मैं ने बात करनी चाही और इस रवैये का कारण पूछा तो मुझे पर सीधा इलजाम लगाती हुई बोली कि तुम्हें दूसरी लड़कियों के साथ गुलछर्चे उड़ाना पसंद है न, तो ठीक है, करो जो करना है. पर मुझे से बात मत करना. अब बताइए दीदी, मुझे कैसा लगेगा?” नितिन फूट पड़ा था.

सौम्या ने उसे शांत करते हुए पूछा, “नितिन, वह लड़की कौन थी?”

“दीदी, वह मेरे शहर की थी और उस के विषय भी सेम मेरे वाले थे. वह हमारी बिंदु मैडम की भतीजी थी. उन्होंने ही मुझे उस का ध्यान रखने और गाइड करने को कहा था. बस, वही कर रहा था और इस ने पता नहीं क्याक्या समझ लिया.”

सौम्या ने हंस कर कहा, “नेहा, मुझे नहीं लगता कि नितिन की कोई गलती है. तुम्हें इस तरह रिएक्ट नहीं करना चाहिए था. जिस से आप प्यार करते हैं उस पर पूरा भरोसा रखना चाहिए. नितिन, तुम्हें भी नेहा की बात का बुरा नहीं मानना चाहिए था. जहां प्यार होता है वहां जलन और शक होना स्वाभाविक है. नेहा ने जलन की वजह से ही ऐसा बरताव किया. अब तुम दोनों



पैसा

जब आप के हाथ में पैसा होता है तो केवल आप भूलते हैं कि आप कौन हैं लेकिन जब आप के हाथ खाली होते हैं तो संपूर्ण संसार भूल जाता है कि आप कौन हैं. —बिल गेट्स

सरिता

एकदूसरे को सौरी कहो और मेरे आगे एकदूसरे के गले लगे.”

नेहा और नितिन मुसकरा पड़े. एकदूसरे को सौरी बोलते हुए वे सौम्या के गले लग गए. सौम्या का दिल खिल उठा था. नितिन और नेहा में उसे अपने बच्चे नजर आने लगे थे. सब ने मिल कर शाम तक बातें कीं और साथ मिल कर चायनाश्ते का आनंद लिया.

दिन इसी तरह बीतने लगे. समय के साथ सौम्या नितिन और नेहा के और भी करीब आती गई. इस बीच नितिन को जौब मिल गई थी और नेहा एक ट्रेनिंग में बिजी हो गई.

इधर नितिन और नेहा के घर में उन की शादी की बातें भी चलने लगी थीं. सौम्या के कहने पर उन्होंने अपने घरवालों से एकदूसरे के बारे में बताया और अपने प्यार की जानकारी दी. नेहा के घरवाले तो थोड़े नानुकर के बाद तैयार हो गए मगर

नितिन के पेंस ने गैरजाति की लड़की को बहू बनाने से साफ इनकार कर दिया।

नितिन ने नेहा को सारी बात बताते हुए भाग कर शादी करने का औपान दिया। तब नेहा ने एक बार सौम्या से सलाह लेने की बात की। नितिन तैयार हो गया और दोनों एक बार फिर सौम्या के पास पहुंचे। सौम्या ने सारी बातें सुनीं और थोड़ी देर सोचती रही। भाग कर शादी करने की बात सिर से नकारते हुए सौम्या ने मन ही मन एक प्लान बनाया। सौम्या ने नितिन से अपनी मां का नंबर देने को कहा और उस के रिश्तेदारों के बारे में भी जानकारी ली।

नंबर ले कर सौम्या ने नितिन की मां को फोन लगाया। उधर से 'हैलो' की

आवाज सुनते ही सौम्या बोली, “बहनजी, मैं सौम्या बोल रही हूं। आप का नंबर मुझे अपने पति से मिला है। मेरे पति आप के एक रिश्तेदार के साथ ऑफिस में काम करते हैं। असल में बहनजी, हम भी आप की ही बिरादरी के हैं। आप के रिश्तेदार ने बताया कि आप का बेटा शादी लायक है। बहुत जहीन और प्यारा बच्चा है। तो मुझे लगा मैं अपनी बिटिया की शादी की बात चलाऊं। हम भी राजपूत हैं और हमारी बिटिया बहुत संस्कारशील व खूबसूरत है। आप को जरूर पसंद आएगी।”

“हां जी, आप मिल लीजिए हम से。”

“मैं तो कहती हूं बहनजी, आप आ जाओ हमारे घर। बिटिया को तबीयत से देख लेना आप। मैं एड्रेस भेजती हूं。”

अगले ही दिन नितिन की मां नेहा को

वार्षिक ग्राहक बनें! घर बैठे पाएं

भारत की
सर्वाधिक पढ़ी
जाने वाली
महिलाओं की
हिंदी पत्रिका

**वार्षिक
₹1000 में**

कृष्ण विशेष

गृहशोभा

ऑनलाइन
खरीदारों
के स्मार्ट
टिप्स

त्योहारों
में फिर
खिल उठे
जीवन

इस बार
आली
मिट्टाई

अपने घर
को
सज्ज
कर लें

सर्वाधिक पढ़ी जाने वाली पत्रिका

सर्िता

हाथरस
मैंगरोप

तुलसीमरती, झड़कियां

विश्वसनीय,
निर्भीक,
सुखद,
सदा युवा
पत्रिका

**वार्षिक
₹ 999 में**

अब निश्चित डिलीवरी रजिस्टर्ड डाक से कहीं भी

सौम्या ने तुरंत बाजी अपने हाथ में लेते हुए कहा, “कोई बात नहीं समझनजी. एकदो दिनों में मैं खुद ही अपनी बच्ची को आप के यहां भेज दूंगी. अब तो यह आप की बच्ची भी है. नितिन से मिलवा दीजिएगा. आप चाहें तो नितिन और उस के पापा यहां आ कर भी बच्ची को देख सकते हैं.”

घर जा कर नितिन ने औपचारिक रूप से लड़की के लिए अपनी सहमति दे दी. अब तो नेहा 4-6 दिन में एक बार नितिन के यहां हो ही आती थी. इधर उन की सगाई का दिन एक महीने बाद का तय कर दिया गया था. नितिन चाहता था कि सगाई से पहले वह मां को हर बात सचसच बता दे. पर सौम्या ने उसे फिलहाल खामोश रहने की सलाह दी.

आफर क्रमांक	पत्रिका	प्रतियों की संख्या	अंक	अवधि	प्रति मूल्य	वार्षिक मूल्य	सब्सक्रिप्शन आफर (एजेंसिड्स अंक)	विहित करें
1.	गृहशोभा	1	पाक्षिक	1 वर्ष	50.00	1200.00	1000.00	☐
2.	सरिता	1	पाक्षिक	1 वर्ष	50.00	1200.00	999.00	☐

नाम: जन्मतिथि: DD MM YY

पिन:

--	--	--	--	--

मोबाइल नं.: फोन नं.: ई-मेल:

चैक / डी.डी. नं.: तिथि:

DELHI PRAKASHAN VITRAN PRIVATE LIMITED के पक्ष में देय होगा.

क्रेडिट कार्ड: अमेक्स वीसा मास्टर कार्ड अंतिम तिथि:

जारी करने वाले बैंक का नाम:

हस्ताक्षर तिथि

नियम व शर्तें : कृपया इस फार्म को चेक/डीडी के साथ इस पते पर भेजें-

DELHI PRAKASHAN VITRA PVT. LTD. ई-8, कन्वेंशन प्लॉट, माउंट पौरी, ग्रीन हाथी मार्ग, नई दिल्ली - 110055
4-5 एवरी का समय दे, पत्रिका की प्रति आपको रजिस्टर्ड कर के द्वारा प्राप्त होगी। हमारा विवाद केवल दिल्ली न्यायाधिकरण के अधिकार क्षेत्र के अर्थात् है, अधिक जानकारी के लिए दिल्ली प्रैस के सस्क्रिप्शन विभाग से संपर्क करें।
फोन-टोल फ्री नंबर 1800 103 8880 फोन नंबर: 31938888 (सभी तैनातियां और मोबाइल द्वारा गान्य, समायार से शामिल सुबह 10:00 से शाम 6:00 तक) ईमेल : scribption@delhipress.in, आप ऑनलाइन <http://www.delhipress.in> सब्सक्रिप्शन कर सकते हैं।

इस घटना के करीब 20-22 दिन बाद की बात है। उस दिन नितिन ऑफिस के काम से शहर के बाहर था। अचानक शाम के समय ऑफिस से लौटते ही नितिन के पिता के सीने में तेज दर्द होने लगा। नितिन की मां के हाथपैर फूल गए, उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि अब क्या करें। वे बहुत घबरा गई थीं। रोतेरोते उन्होंने नितिन को फोन किया। नितिन ने तुरंत नेहा से अपने घर पहुंचने की गुजारिश की। नेहा दौड़दौड़ी नितिन के घर पहुंची। रास्ते में ही उस ने एंबुलेंस वाले को फोन कर दिया था।

घर पहुंच कर उस ने एक तरफ नितिन की मां को संभाला तो दूसरी तरफ पिता को। उस ने पिता के टाइट कपड़े ढीले कर उन्हें आराम से बिस्तर पर लिटा दिया। पैर नीचे की तरफ और सिर थोड़ा ऊपर की ओर उठा कर रखा ताकि ब्लड की सप्लाई हार्ट तक होती रहे।

तब तक एंबुलेंस पहुंच गई। वह तुरंत उन्हें एंबुलेंस में ले कर अस्पताल पहुंची और आईसीयू में ऐडमिट करवाया। उन्हें हार्टअटैक आया था। नेहा सब से सीनियर डाक्टर से रिव्यू कर ले लगी कि वे ही इस केस को हैंडल करें। आननफानन सारे इंतजाम हो गए। नितिन की मां एक कोने में बैठी नेहा की दौड़भाग देखती रहीं। नेहा नितिन के पिता की केयर अपने पिता जैसी कर रही थी। यह सब देख कर नितिन की मां की आंखें भर आई थीं।

नेहा रातभर जाग कर पिता का ध्यान रखती रही। हर तरह की दौड़भाग करती रही। अगले दिन उन की सर्जरी की बात उठी। नेहा ने रुपयों का इंतजाम किया। कुछ नितिन की मां से लिया और कुछ अपनी तरफ से मिला कर फटाफट रुपए जमा करा दिए। ऑपरेशन कामयाब रहा। शाम तक नितिन भी आ गया।

2 दिनों बाद जब नितिन के पिता थोड़े नॉर्मल हुए तो उन्होंने रंधे गले से नेहा की तारीफ की। उसे बेटी कह कर गले लगा लिया। 4-6 दिन में उन्हें छुट्टी दे दी गई। वे घर आ गए। अब तक सगाई का दिन भी नजदीक आ गया था। सगाई से 2 दिन पहले नितिन ने अपने पेरेंट्स को सचाई बताने की सोची।

नितिन ने कांपती जबान से कहा, “पापा, मां, मैं आप लोगों से झूठ बोल कर शादी नहीं कर सकता। दरअसल, नेहा हमारी जाति की नहीं है और वह सौम्या दीदी की बेटी भी नहीं है। नेहा तो वही लड़की है जिसे मैं... प्यार करता था।”

नितिन ने सच बता कर निगाहें झुका लीं। वह डर रहा था कि शायद अब उस के पेरेंट्स नाराज हो उठेंगे। पर ऐसा नहीं हुआ। दोनों मुसकरा रहे थे।

नितिन के पिता ने कहा, “बेटा, इस बात का एहसास हमें हो गया था। जिस प्यार और अपनेपन से नेहा हमारी देखभाल कर रही थी और फिक्रमंद थी, उसी से पता चल रहा था कि वह तुम से कितना प्यार करती है। तुम दोनों के इस प्यार के बीच हम कतई नहीं आ सकते। वैसे भी, नेहा किसी भी जाति की हो, उसे हम ने बेटी तो मान ही लिया है न।”

नितिन की आंखें खुशी से भर उठीं। उस की मां ने स्नेह के साथ कहा, “बेटे, तुम दोनों की जोड़ी बहुत खूबसूरत है और इस खूबसूरत रिश्ते को जोड़ने में मदद करने वाली सौम्याजी भी हमारी रिश्तेदार हैं। कल हम सब उन के घर मिठाई ले कर चलेंगे।”

अगले दिन सौम्या का घर हंसी और ठहाकों से गूंज रहा था। खिलेखिले चेहरों के बीच बैठी सौम्या के पास अब रिश्तेदारों की कमी नहीं थी। ●



मेरे पापा

हम 2 बहनें हैं और हमारा एक भाई है। हम जिस समाज में रहते थे वहां उस समय लड़के लड़कियों में बहुत भेदभाव किया जाता था। मगर मेरे पापा ने कभी भी किसी चीज में हम तीनों भाईबहनों में भेदभाव नहीं किया। आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के बावजूद वे हमारी अच्छी शिक्षा की खातिर गांव छोड़ कर शहर आ गए। एक बार हमारे एक रिश्तेदार ने उन से कहा, “आप इन बेटियों पर बेकार में इतना खर्च कर रहे हैं। पैसे बचा कर रखिए, आगे चल कर काम आएंगे। बेटियां तो अपने-अपने घर चली जाएंगी।”

इस पर मेरे पापा ने जवाब दिया, “मेरे तीनों बच्चे ही मेरा बैंक बैलेंस हैं। आज मैं निवेश कर रहा हूं ताकि कल वह मेरे बच्चों के काम आए और मुझे संतुष्ट मिले।”

अपने पापा की इसी सोच ने सदैव हम भाईबहनों का हौसला बढ़ाया।

आरती प्रियदर्शिनी (सर्वश्रेष्ठ)

मेरे पापा अनुशासनप्रिय थे। हम भाईबहन बचपन से अनुशासन में रहे।

मैं चारों भाईबहनों में सब से छोटी थी, सब की लाडली थी और इसी बात का फायदा उठा कर अकसर अपनी मनमानी करती। घर में बिना परमिशन के कहीं आनाजाना नहीं था। मैं 10वीं कक्षा में थी। बोर्ड की परीक्षा जिस दिन खत्म हुई, सब सहेलियों ने एग्जाम के बाद फिल्म देखने का प्रोग्राम बना लिया।

मैं ने मना कर दिया कि पापा गुस्सा करेंगे, लेकिन सब मुझे जबरदस्ती ले गईं। मैं चली तो गई लेकिन शाम को जब शो खत्म हुआ और घर वापस जाना था तो मुझे डर लगने लगा। पता था घर में जबरदस्त डांट पड़ेगी। मैं ने अपनी सहेलियों से कहा कि तुम सब मेरे साथ मेरे घर चलो और कहो कि तुम मुझे जबरदस्ती अपने साथ फिल्म देखने ले गई थीं।

सब सहेलियां आई और मेरे पापा से सौरी बोलते हुए कहने लगीं कि रश्मि की कोई गलती नहीं। उसे मत डांटिएगा। तब पापा बोले, “बेटा, तो क्या हुआ, परीक्षा खत्म हो गई। घूमफिर लिए तो क्या हुआ। तुम सब आराम से बैठो, चायपानी पियो। मस्ती करो। ये दिन बारबार नहीं आते।” पापा की बात सुन मैं हैरान थी। उस दिन मुझे पता चला कि पापा स्थिति के अनुरूप चलने वाले व्यक्ति हैं। तब से मैं पापा की हर बात मानने लगी।

रश्मि पंवार •

आप भी भेजें

इस स्तंभ के लिए पाठकों के अनुभव आमंत्रित हैं। प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ अनुभव को 100 रुपए का नकद पुरस्कार दिया जाएगा। पता : सरिता, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-55.

अपना अनुभव नाम व पते सहित आप नीचे लिखे नंबर पर एसएमएस या व्हाट्सएप के जरिए भेजें/ ऑडियो भी कर सकते हैं।

08527666772





जूता और जूते जी

• अशोक गौतम

जूते पांव में पहने जाते हैं. आप भी मेरी इस बात से सहमत हैं न, लेकिन भई, आज कह दिया, फिर ऐसा मत कहना. जूते जी के तेवर सह नहीं पाओगे...

सच पूछो तो बड़े दिनों से फटे जूतों से काम चला रहा हूं. जूते तलवों से बिलकुल फट चुके हैं. पर उन का अपर ठीक है. मेरे जूतों को ले कर सब को लगता है कि वे नए हैं. पर असल में मैं ही जानता हूं कि... आह री ऊपर से दिखावे की जिंदगी.

महीने से नए जूते खरीदने का साहस न जुटा पाने की वजह से अपने ही जूते अपने ही मुंह खा रहा हूं. नए जूतों के चक्कर में बड़े दिनों से अपनी चिरपरिचित जूते की दुकान पर सीना

चौड़ा कर जूते लेने जाता हूं. पर वहां जा, जूतों को अपने पर घूरता देख, जूतों से जूते खा, दुम दबाए चला आता हूं. जूते चाहे पहनने के हों या खाने के. दोनों मुझे बहुत परेशान करते आए हैं. पर जानता हूं, दोनों ही प्रकार के जूतों के बिना जिंदगी नीरस है. दोनों के बिना गुजारा नहीं.

हिम्मत कर आज जनता शू स्टोर पर पहुंच ही गया जूते लेने. जूते खाने को दुकान में जाने की जरूरत नहीं होती. कहीं भी मजे से खाए जा सकते हैं. कारण, बेकारण. वैसे, जूते खाने की सब से बेहतर

जगह आजकल रैली है। जहां कोई भी मजे से अपने पांव का कटाफटा जूता निकाल मनमाफिक उछाल हर किसी को लोकप्रिय बना, खुद मीडिया की सुखी हो, एक पांव में जूता पहने नायक बन घर हो लेता है। जूता निशाने पर लगा कि नहीं, इस से उसे कोई लेनादेना नहीं होता। लग गया तो तुक्का, नहीं लगा तो जूता।

अपने परिचित जूता स्टोर वाले के जूतों के ढेर में शान से गरदन अकड़ाए एक जूता दिखा, तो मैं ने गुस्साए उसे तस्मे से पकड़ शूस्टर के मालिक से ऐसे पूछा जैसे आज तो हर हाल में जूता ले कर ही रहूंगा, “भाईसाहब, यह जूता कितने का है?”

उस जूते को तस्मे से बेदर्दी से पकड़ने पर पहले तो जूता मालिक ने मुझे जीभर घूरा, फिर मेरे हाथ से जूते को छीन प्यार से उस का चेहरा पुचकारता बोला, मानो मैं ने जूते को तस्मे से पकड़ उस का गला घोट दिया हो, “हद है साहब, इन के प्रति इतने असंवेदन। ये जूता नहीं, जूते जी हैं, जूते जी। आज इन का समाज में जो स्थान है उतना किसी आदरणीय का नहीं। और एक तुम हो, इन्हें पांव का मान रहे हो? जूता चाहे कितना ही कमीना क्यों न हो, आज की तारीख में वह पांव में नहीं, सिर पर चढ़ शोभा पाता है। जिस तरफ यह उछला, उस तरफ, मत पूछो, क्या होगा। यह पूछो कि क्या नहीं होता? तुम जूता खाने आए हो या खरीदने?”

“माफ करना भाईसाहब, पुराने खयालात का हूं, सो, अभी भी जूते को पांव का ही मानता हूं。”

“गया वह वक्त जब जूता पांव की जूती हुआ करता था। आज तो हर जूता एक सवाल है, एक बवाल है。”

“सवाल?”

“हां, जो सवाल अपने नेता से जनता

मुंह में जबान होने के बाद भी नहीं पूछ सकती। यह बड़े मजे से हर कहीं से उछल पूछ लेता है। यह दूसरी बात है कि उसे उस के सवाल का जवाब मिले या न。”

“तो यह उछलने वाले जूते जी कितने के हैं?” मैं ने जूतों से भरी दुकान होने के बाद भी उस जूते को जीभर मन ही मन गालियां दे अपनी गलती का एहसास होने का स्वांग किया तो जूतों के सौदागर का गुस्सा कुछ ठंडा हुआ और जूते जी ने भी चैन की सांस ली।

“पूरे 5 हजार रुपए का,” उस ने जूते जी के गाल सहलाते कहा तो जूते जी का घमंड सातवें आसमान पर।

“क्या खासीयत है इस जूते जी की?”

“जूते जी नहीं साहब, मिसाइल कहिए इन्हें, मिसाइल। बस, संकेतभर की जरूरत है। अपने निशाने पर खुद जा लगे। पलक झपकते। यह उन आम जूतों से बिलकुल अलग है जो उछलनेभर के लिए उछलते हैं। इन जनाब की सब से बड़ी विशेषता यह है कि इन के निशाने का संधान हाथ से नहीं, मन से होता है। साहब जी, अगर निशाने पर न लगे तो इन्हें पैदा करने वाली कंपनी का दावा है कि पूरे पैसे वापस。”

“कोई छूट?”

“एक पैसा कम नहीं। छूट वाले जूते वे हैं सामने, जो अर्जुन के हाथ में भी दे दो तो भी निशाने पर नहीं लगते। कोरी बदनामी करवाते हैं。”

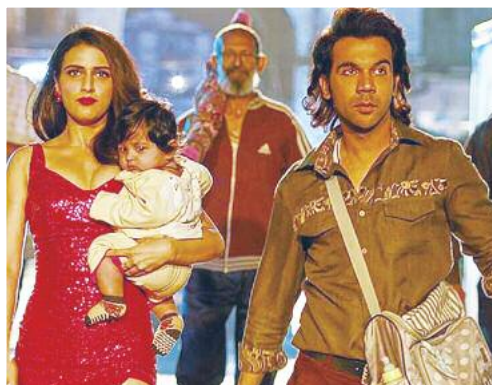
“पर भाईसाहब, मुझे तो जूते पहनने को चाहिए। उछलने को नहीं। कोई बेहतर से पहनने वाले जूते हों, तो बताओ,” मैं ने कहा तो वह जूता मुझे ऐसे घूरा मानो वह अभी मुझे अपनी चपेट में ले लेगा।

उस ने कहा, “वे तो शोकेस में लगे हैं। कोई लेता ही नहीं है। 200-250 दे दो और ले जाओ。” ●



★★★★ अति उत्तम ★★★★★ उत्तम

★★★ मध्यम ★★ साधारण ★ औसत



खेल की तरह फिल्म भी दिलचस्प

लूडो ★★

बचपन में लूडो का खेल हम सब ने खेला होगा। रंगबिरंगी गीटियों के साथ प्रतिद्वंद्वी खिलाड़ी को मात देना अच्छा लगता है। फिल्म 'लूडो' की कहानी भी लूडो के खेल की तरह है।

यह फिल्म पिछले 3 सालों से बन रही थी। फिल्म दिलचस्प है। इस में कहानियों का कौकटेल है। कहानी के अंदर कहानी, हर कहानी में मसाला, कौमेडी, रोमांस, ऐक्शन और ड्रामा है। जितनी कहानियां हैं उतने ही ज्यादा किरदार हैं। फिल्म की शुरुआत में इसे समझने में दिक्कत तो होती है, मगर शीघ्र ही दर्शकों को पता चल जाता है कि कहानी का केंद्रबिंदु कौन है। निर्देशक ने फिल्म का संपादन इतनी कुशलता से किया है कि दर्शकों को सारी कहानियां आसानी से समझ आ जाती हैं। उन्होंने सभी कहानियों को जोड़े रखने की कोशिश की है।

अनुराग बसु ने इस से पहले 'काइट्स', 'बर्फी' और 'जग्गा जासूस' फिल्मों बनाई थीं। 'बर्फी' फिल्म तो

ऑस्कर के लायक थी, मगर 'लूडो' को डार्क कौमेडी कहना ज्यादा उपयुक्त होगा। इस फिल्म में लंबीचौड़ी कास्ट भी है, और प्यारा सा रोमांस भी है। मगर यह फिल्म बड़े बच्चों के साथ बैठ कर देखने लायक नहीं है। फिल्म में भरपूर गालियां हैं, साथ ही, कहानी के केंद्रबिंदु में डोन की भूमिका में पंकज त्रिपाठी दर्शकों का दिल लूट ले जाते हैं।

हिंदी फिल्मों में शतरंज के खेल के रेफरेंस पर कई फिल्में अमूमन बनती रहती हैं, लेकिन अनुराग बसु की यह फिल्म लूडो रेफरेंस के साथ यूनीक और नई है। जो नाम से ही हमें थोड़ा देशज के करीब ले आती है। भारत के पौराणिक ग्रंथों में पासों का खेल चर्चित रहा है, जहां चाल चलने और सबकुछ गंवाने के किस्से मुहावरों में बदल कर कसीदे बन गए हैं। हाल ही में लूडो खेल की लोकप्रियता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि लौकडाउन में यह भारत में सब से ज्यादा खेले जाने वाला खेल रहा है। ऐसे में फिल्म के नाम के सलैक्शन में अनुराग बसु कुछ हट कर और अपनापन ले कर आए हैं।

लूडो के खेल में 4 रंग होते हैं, लाल,



हरा, नीला व पीला. गेम में चारों रंगों की गोटियों को अपने घर में पहचाना होता है. पासा फेंका जाता है और इन रंगों की आपसी जद्दोजेहद शुरू हो जाती है. यही जद्दोजेहद पूरे खेल को रोचक बनाती है, कभी उतार तो कभी चढ़ाव. ठीक लूडो खेल की ही तरह यह फिल्म 4 अलगअलग कहानियां बयां करती है. खेल के चारों रंगों की तरह इन की अपनी कहानी के अपने अलग रंग हैं. इन चारों के केंद्र में पासा फेंकने वाला एक मुख्य किरदार है. जिस से सभी की कहानी जुड़ती दिखाई देती है. इन कहानियों को निर्देशक के मुंह से कहलवाया गया है. मुख्य कहानी दूसरी के ऊपर फिसलती चलती है, परंतु प्रवाह में बाधा नहीं आने पाती.

एक कहानी, आकाश (आदित्य राय कपूर) और अहाना (सान्या मलहोत्रा) की है. दोनों एकदूसरे से प्यार करते हैं. लेकिन दोनों के होश तब उड़ जाते हैं जब उन्हें पता चलता है कि उन की एक सैक्स वीडियो क्लिप इंटरनेट पर वायरल हो रही है. कुछ दिनों में अहाना की शादी होने वाली है. आकाश को वायरल हो रहे

वीडियो को इंटरनेट से हटवाना है. इस के लिए वह शहर के डौन सत्तू भैया (पंकज त्रिपाठी) के पास जाता है.

दूसरी कहानी, बिट्टू (अभिषेक बच्चन) की है जो 6 साल के बाद जेल से छूट कर आया है. उस की पत्नी व बेटी अब अपनीअपनी जिंदगी में आगे बढ़ चुके हैं. अब उसे उसी एहसास के साथ जीना है.

तीसरी कहानी, पिंकी (फातिमा शेख) की है. उसे पता चलता है कि उस का पति हत्यारा है. वह अपने बचपन के दोस्त आलोक उर्फ आलू (राजकुमार राव) के साथ भाग जाती है.

इन सब से अलग चौथी कहानी राहुल (रोहित सराफ) की है. वह सेल्समैन है. उस के संबंध एक नर्स शीला से हैं. अचानक उस की जिंदगी बदल जाती है.

इन चारों कहानियों को निर्देशक ने अंत में सफाई से बांधा है. चारों कहानियों के किरदारों को सत्तू भैया के इर्दगिर्द इकट्ठा किया गया है. सत्तू भैया के अड्डे पर जबरदस्त विस्फोट होता है. सत्तू भैया अस्पताल पहुंच जाता है. राहुल भी जख्मी हो कर अस्पताल में भरती हो जाता है. राहुल और नर्स शीला सत्तू भैया

के नोटों से भरा बैग ले कर भाग जाते हैं। वे सत्तू को मरने के लिए छोड़ जाते हैं परंतु किसी तरह सत्तू बच जाता है। खूब भागमभाग होती है। पुलिस सत्तू भैया के पीछे हो जाती है। पिंकी का पति मारा जाता है, तो वह आलोक के साथ हो लेती

है। बिट्टू की पत्नी भी उस के पास वापस लौट आती है। राहुल और शीला भी एकदूसरे के साथ हो लेते हैं। परंतु, कहानी का केंद्रबिंदु सत्तू भैया मारा जाता है।

फिल्म का कलाइमैक्स बढ़िया है। निर्देशक ने अंत में कुछ सरप्राइज सीन भी

सूरज पे मंगल भारी ★★

फिल्म 'सूरज पे मंगल भारी' ग्रहनक्षत्रों पर नहीं है। हालांकि, इस में जन्मकुंडली के मिलान जैसे अनेक अधविश्वास हैं। फिर भी यह हलकीफुलकी कौमेडी से दर्शकों का दिल लगाए रखती है। कोरोनाकाल में 9 महीनों तक अवसाद झेल रहे दर्शकों को इस फिल्म के सिनेमाघरों में रिलीज होने से थोड़ीबहुत राहत तो महसूस हुई है।

'तेरे बिन लादेन' जैसी कौमेडी फिल्म और 'परमाणु द स्टोरी औफ पोखरण' जैसी फिल्में निर्देशित करने वाले निर्देशक अभिषेक शर्मा ने इस फिल्म में मनोज वाजपेयी को कौमेडी का रोल दिया है। साथ ही, दिलजीत दोसांझ तो कौमेडी में माहिर है ही। दोनों ने एकदूसरे को शह और मात देने की कोशिश की है। अगर आप इस फिल्म को देखने सिनेमाघर नहीं जाना चाहते, तो जीप्लैक्स ओटीटी प्लेटफॉर्म पर घर पर ही देख सकते हैं। फिल्म साफसुथरी है, फूहड़ता से परे।

फिल्म की कहानी 90 के दशक की मुंबई में शुरू होती है। मुंबई शहर को हमेशा से ही सपनों की नगरी माना जाता रहा है। सूरज सिंह दिल्ली (दिलजीत दोसांझ) का परिवार 25 साल पहले पंजाब के मोगा शहर से मुंबई आया था।

यहां आ कर सूरज के पिता (मनोज पाहवा) ने दूध का व्यापार शुरू किया था। मंगल को अपने लिए एक सुंदर, सुशील, घरेलू लड़की की तलाश है जो उस के लिए करवाचौथ का व्रत रख कर भूखी रहे और पतिव्रता धर्म निभाए।

दूसरी ओर मराठी परिवार का मधुमंगल राणे (मनोज वाजपेयी) है, जो मैरिज डिटैक्टिव है। वह जासूसी कर के कसबे के युवकों के नुकस निकालता है और उन की शादियां तुड़वाता है। असल में उस की प्रेमिका काव्या (नेहा पेंडसे) की शादी किसी और से हो गई थी। यही वजह है कि राणे ने सारी लड़कियों को गलत लड़कों से बचाने का जिम्मा लिया है।

कहानी में ट्विस्ट तब आता है जब वह सूरज की शादी तुड़वा देता है। बदला लेने के लिए सूरज मंगल की बहन तुलसी राणे (फातिमा सना शेख) से प्यार करता है। राणे को पता ही नहीं है कि उस के अपने ही घर में क्या गुल खिल रहा है। तुलसी कालेज के बहाने एक क्लब में डीजे का काम करती है।

राणे को जब सूरज और तुलसी के प्यार का पता चलता है तो वह उन्हें दूर करने के लिए प्रपंच रचता है और सूरज व तुलसी की सगाई तुड़वा कर बहन की शादी सरकारी नौकरी वाले से तय कर देता है। मगर जब क्लाइमैक्स में उसे अपनी गलती का एहसास होता है तो वह दोनों को दोबारा मिलवाने की कोशिश करता है। तब

डाले हैं. फिल्म का निर्देशन अच्छा है. फिल्म में सब से बढ़िया अभिनय अभिषेक बच्चन और राजकुमार राव का है. फिल्म की सब से कमजोर कड़ी आदित्य राय कपूर और सान्या मलहोत्रा हैं.

फिल्म में गाने नहीं हैं, परंतु पार्श्व संगीत

अनुकूल है. मसाला फिल्म होते हुए भी यह फिल्म आम मसाला फिल्मों से अलग है. अनुराग बासु की अपनी एक अलग स्टाइल है. अगर इस में से गालियों को निकाल दिया जाए, तो फिल्म को खूब एंजौय कर सकते हैं. सिनेमेटोग्राफी अच्छी है.



तक सूरज का परिवार बदनामी की वजह से अपना कारोबार समेट मुंबई लौटने की तैयारी करता है. उधर तुलसी की बरात आ चुकी होती है, इधर राणे मंगल को रोकने के लिए स्टेशन पहुंच कर उस के परिवार को चलती ट्रेन से रोक लेता है और माफी मांगता है. तुलसी का हाथ मंगल के हाथ में दे दिया जाता है. काव्या का पति भी तलाकनामे के कागजों पर साइन कर के उसे तलाक दे देता है और काव्या राणे का हाथ थाम लेती है.

मध्यांतर से पहले यह फिल्म काफी

सुस्त रफ्तार से चलती है. मध्यांतर के बाद फिल्म में रफ्तार आती है और दर्शकों का खासा मनोरंजन भी होता है. फिल्म के संवादों में पैनापन नहीं है. निर्देशन साधारण है.

निर्देशक ने फिल्म में स्टेज पर मराठी नाटक का मंचन दिखाया है, जोकि गैरजरूरी है. जिस फिल्म में मनोज वाजपेयी हो, उस में गणपति विसर्जन न हो, ऐसा तो, शायद, हो ही नहीं सकता. इस प्रसंग से भी बचा जा सकता था. वैसे भी, गणेश विसर्जन के कार्यक्रमों और जुलूसों से मुंबई की लाइफ बुरी तरह प्रभावित हो जाती है.

फिल्म जिस दौर की कहानी कहती है, उस दौर को परदे पर रीक्रिएट करने में कला विभाग नाकाम रहा है. इनडोर शूटिंग वाले दृश्य कमजोर हो गए हैं. दिलजीत दोसांझ आकर्षित नहीं कर पाया है. मनोज वाजपेयी भी हंसाने में नाकाम रहा है. फातिमा सना शेख को ऐसा किरदार करने की क्या जरूरत थी. गीतसंगीत पक्ष कमजोर है. सिनेमेटोग्राफी ठीक है.

छलांग ★

फिल्म 'छलांग' को हंसल मेहता ने बनाया है जिन्होंने 'शाहिद' जैसी बेहतरीन फिल्म बनाई थी. लेकिन इस बार उन्होंने बासु चटर्जी और हृषिकेश मुखर्जी स्टाइल की फिल्म बनाने की कोशिश की है, हालांकि वे छलांग लगा पाने में पूरी तरह सफल नहीं हो सके हैं.

यह अच्छी बात है कि राजकुमार राव ने मसाला फिल्मों से बाहर निकल कर 'छलांग' जैसी सीधीसादी फिल्म की है लेकिन यह फिल्म उस के कैरियर में शायद ही कोई टर्निंग प्वाइंट ला पाए,

हंसल मेहता ने खेलों के बहाने जीवन को समझाने की कोशिश की है। इस में उन्होंने बताने की कोशिश की है कि अपनी हालत को बेहतर बनाने, आगे



बढ़ाने, जीवन में इज्जत पाने और मिसाल कायम करने के लिए आप को खुद ही अपने पैर बढ़ाने होते हैं।

स्पोर्ट्स पर बेस्ट इस फिल्म की पटकथा में ज्यादा उतारचढ़ाव नहीं है। इसलिए फिल्म बहुत सिंपल है। कहानी हरियाणा बेस्ट है। मोंटू (राजकुमार राव) हरियाणा के एक स्कूल में पीटी टीचर है। वह मस्तीखोर और सुस्त है। उस के पिता (सतीश कौशिक) ने स्कूल की प्रिंसिपल (इला अरुण) से सिफारिश कर मोंटू को टीचर की नौकरी लगवाई थी।

मोंटू स्कूल के ही एक अन्य मास्टरजी (सौरभ शुक्ला) के आगेपीछे घूमता रहता है। वैंलेंटाइन डे पर वह युवा जोड़ों को पार्क में पकड़ता है और उन्हें नैतिकता की सीख देता है। एक दिन वैंलेंटाइन डे पर

पार्क में सैर कर रहे एक दंपती को वह बेइज्जत करता है। लेकिन जब उसी दंपती की युवा बेटी नीलिमा (नुसरत भरूचा) मोंटू के स्कूल में ही कंप्यूटर टीचर बन कर आती है तो वह शर्मिदा हो जाता है। धीरेधीरे मोंटू और नीलिमा में नजदीकियां बढ़ती हैं और मोंटू नीलिमा को चाहने लगता है।

एक दिन स्कूल में नया पीटी टीचर मि. सिंह (जीशान अय्यूब) जौइन करता है तो मोंटू को अपनी नौकरी खतरे में लगने लगती है। मि. सिंह की निकटता नीलिमा से होती है। मोंटू से यह बरदाश्त नहीं होता। वह प्रिंसिपल को सुझाव देता कि मि. सिंह और उस के बीच स्पोर्ट्स गेम्स का मुकाबला कराया जाए, जिस की टीम जीते वह स्कूल का पीटी टीचर और दूसरा स्कूल से आउट।

स्कूल में बच्चों के बीच कबड्डी और बास्केटबॉल का मुकाबला होता है और जाहिर सी बात है मोंटू की टीम इस में जीत जाती है। लेकिन मोंटू दिल बड़ा कर, मि. सिंह को साथ में रह कर स्कूल के बच्चों के स्पोर्ट्स में बेहतर भविष्य के लिए काम करने को कहता है। नीलिमा मोंटू का हाथ थाम लेती है। फिल्म की पटकथा साधारण है। क्लाइमैक्स का अंदाजा पहले से ही हो जाता है। संवाद साफसुथरे हैं।

हंसल मेहता ने इस फिल्म को प्यारी सी लवस्टोरी बनाने की कोशिश तो की मगर फिल्म इस लव ट्राइएंगल को छू कर निकल जाती है। सभी कलाकार अपनीअपनी भूमिकाओं में फिट हैं, कोई खास करिश्मा नहीं कर पाए हैं। गाने हैं पर दोनों पंजाबी में हैं। सिनेमेटोग्राफी अच्छी है। ●

“रिएलिटी शो में पैसे बहुत अच्छे मिलते हैं”

डेलनाज ईरानी

• सोमा घोष

‘कल हो ना हो’ फिल्म में चुलबुली और हंसमुख स्वीटू का किरदार डेलनाज पर ऐसा जमा कि लंबे समय तक दर्शक उन की क्यूटनेस के कायल हो गए और उन्हें महिला कौमेडियन कलाकार के रूप में पहचान मिली. अपनी भूमिका को संजीदगी से जीने वाली डेलनाज ईरानी ने ऐक्टिंग के हर क्षेत्र में काम किया है.

हिंदी फिल्म ‘कल हो ना हो’ में स्वीटू की भूमिका निभा कर चर्चित हुई अभिनेत्री डेलनाज ईरानी ने फिल्में ही नहीं, कई टैलीविजन शो में भी काम किया है. उन की कौमेडी के अंदाज की दर्शक हमेशा तारीफ करते हैं. उन्होंने मनोरंजन की दुनिया में लंबी पारी खेली है, पर अभी भी खुद को नया समझती हैं. उन्हें हर नया किरदार प्रेरित करता है. उन्होंने हर भूमिका को संजीदगी के साथ जिया है. हंसमुख और खूबसूरत डेलनाज जीवन में टैलीविजन को काफी महत्व देती हैं, जिस की वजह से वे घरघर में जानी गई. उन्होंने अपनी जर्नी के बारे में बात की, जानते हैं उन की कहानी उन की ही जबानी.

डेलनाज ने टैलीविजन इंडस्ट्री में बहुत काम किया है. जब पूछा कि पहले और आज के टैलीविजन शो में वे क्या अंतर पाती हैं और टैलीविजन के भविष्य को कैसे देखती हैं, तो उन्होंने कहा, “टैलीविजन हमेशा लोगों के बीच में रहा है और रहेगा. मैं ने



अपनी मां को लौकडाउन में टैलीविजन के अलावा कुछ दूसरे शोज दिखाने की कोशिश की, लेकिन उन्होंने सिरे से मना कर दिया. इस से टैलीविजन की अहमियत समझी जा सकती है. पहले से अब टैलीविजन की तकनीक में काफी विकास हुआ है. दर्शकों के लिए यह उन के घर का गोल्डन हाउस है.

“मैं ने टैलीविजन पर भी बहुत काम किया है और लोग मुझे फिल्मों से अधिक टीवी अभिनेत्री के तौर पर पहचानते हैं. इतना ही नहीं, टैलीविजन में काम करते हुए मैं ने मुंबई में अपना घर बनाया है. मेरा लगाव टीवी के प्रति बेहद है, इसे मैं कभी छोड़ नहीं सकती.”

“90 के दशक में मैं ने शो ‘कमांडर’ से काम करना शुरू किया. यह श्री अधिकारी ब्रदर्स का पहला शो था. उस समय वह जमाना बहुत अलग था. डेली सोप का जमाना नहीं था. तब कहानी से ले कर शो को फिल्माने तक सारी चीजों को महत्त्व दिया जाता था. अब टीआरपी का जमाना है.

“जब मैं ने काम शुरू किया था, तब एक कहानी, जो पहले से थी और वह कभी बदलती नहीं थी, क्योंकि वह एक सैट स्क्रिप्टेड हुआ करती थी. उस का शुरू से अंत तक के किरदार के बारे में मुझे पता होता था और उस में कोई बदलाव नहीं होता था. अब तो टीआरपी बादशाह है. कंटेंट के बदलाव पसंद न होने पर भी काम करना पड़ता है और इसे कलाकार से ले कर लेखक, निर्देशक सभी भुगतते हैं.”

जब डेलनाज से पूछा गया कि टीआरपी होड़ में ऐक्टर को काम करना कितना मुश्किल होता है तो वे कहती हैं, “एक अच्छा कलाकार किन्हीं भी हालात में काम कर लेता है, क्योंकि स्क्रिप्ट

ताबड़तोड़ वाली आती है, जिस में कल या अगले हफ्ते क्या होने वाला है, किसी को पता नहीं होता. एक जमाना था जब निर्देशक का काम एक कलाकार को सही माने में निर्देश देना होता था. लेकिन अब कलाकार को क्रिएटिविटी के साथ एक बार समझ लेना है और फिर खुद उसे अपना काम करना है. निर्देशक आ कर सिर्फ ‘एक्शन’ और ‘कट’ बोलता है.”

आज के वर्क कल्चर में नए कलाकारों को कितनी मुश्किलें आती हैं, यह पूछने पर वे कहती हैं, “नए कलाकार को अभिनय करने में बहुत मुश्किल होती है. वे काम करतेकरते ही सीखते हैं. डेली सोप में एक चेहरे को रोज एक समय पर देखने से कुछ दिनों में वह चेहरा आप को पसंद आ जाएगा. आज के दर्शक इन सब चीजों से परिचित हैं.

“आज एक कलाकार एक रात में चर्चित हो जाता है. इस के अलावा, आज शो को बनाने में तकनीक बहुत सारा सहयोग देती है. कलाकार अगर अच्छा न भी हो, तो तकनीक उसे संभाल लेती है. पहले स्क्रिप्ट और कलाकार का महत्त्व होता था, जिस में निर्देशक ‘कैप्टन ऑफ द शिप’ होता था. आज तो एक शो के निर्देशक भी बदलते रहते हैं. आज टीवी के शो फिल्म की तरह बन रहे हैं.”

रिएलिटी शो, डेली शो या फिल्मों में से उन की रुचि क्या है, इस पर वे बताती हैं, “मैं सही बात बोलूं तो रिएलिटी शो में पैसे बहुत अच्छे मिलते हैं. 3 से 4 महीने में एक अच्छा अमाउंट मिल जाता है, इसलिए सब को वह पसंद आता है. मैं जब बिग बौस 6 में गई थी तो मुझे कुछ प्रूव नहीं करना था. लोग मुझे जानते थे और दर्शक मेरा रियल रूप देखना चाहते थे.

“आज लोग रिएलिटी शो में जाने पर

कुछ और बनना चाहते हैं. खुद के व्यक्तित्व को एन्हांस नहीं करते. उन्हें लगता है कि रोमांटिक होने, चिल्लमचिल्ली करने या गालीगलौज देने पर वे अधिक दिनों तक अंदर टिक सकते हैं. आज के दर्शकों की रुचि भी वैसी हो चुकी है, इसलिए शो चल रहा है.”

जब उन से जानना चाहा कि वे रियल लाइफ में कैसी हैं, तो वे कहती हैं, “मैं कौमेडियन की भूमिका निभा चुकी हूँ, पर रियल लाइफ में एक जोक भी नहीं सुना पाती. मैं बहुत पौजिटिव स्वभाव की हूँ और हर बात को सकारात्मक रूप में व नए रूप में शुरू करना पसंद करती हूँ.”

ऐक्टिंग आप का पैशन था या इत्फाक? इस पर उन का कहना है, “मुझे बचपन से ही अभिनय का शौक था. मैं बहुत कम उम्र से ड्रामा, इलोक्यूशन आदि किया करती थी. मुझे कौन्फिडेंस तो स्कूल और कालेज से आ गया था. कालेज के बाद मैं ने काम शुरू कर दिया और इस में परिवार ने बहुत सहयोग दिया.”

इन दिनों मनोरंजन की दुनिया में मनोरंजन कम और रिऐलिटी का प्रवेश अधिक हो चुका है, इस बात पर जब उन के विचार पूछे गए तो उन्होंने कहा, “हर चीज का एक फेज होता है. इस का भी एक समय है, जो कुछ दिनों बाद निकल कर कुछ और हो जाएगा. वैंब में इतनी लिबर्टी है, जो दिखती है. मारधाड़, वौयलेंस बहुत

होता है, जिसे देखना भी कई बार मुश्किल होता है, लेकिन इसे व्यक्ति अकेले देख सकता है. सर्टिफिकेशन आने पर अच्छा इसलिए होगा क्योंकि रियलरियल बोल कर लोग एक सीमा रेखा को लांघ जाते हैं, उस पर लगाम लग सकेगी.”

ऐक्टिंग के अलावा अपनी पसंद पर वे कहती हैं, “मुझे डांस का बहुत शौक है. मेरा वर्षों से डांस का पैशन रहा है. लौकडाउन के बाद तो कुकिंग का भी शौक लग गया है. समय मिलता है, तो मूवी देखती हूँ. मैं अपनी मां और फियांस पर्सों के साथ रहती हूँ.”

अपनी ऐक्टिंग जर्नी को ले कर वे कहती हैं, “मैं अपनी जर्नी से बहुत खुश हूँ. लेकिन अभी बहुत सारे काम करने हैं. रियल सिनेमा का अभी युग है और मैं इस में मां की भूमिका करने की इच्छा रखती हूँ. कौमेडी के अलावा मैं ने टीवी शो ‘छोटी सरदारनी’ में नैगेटिव भूमिका निभाई है. मैं अलगअलग काम अलग प्लेटफॉर्म पर करना चाहती हूँ. मुझे चुनौतीपूर्ण काम पसंद है.”

अपने प्रशंसकों को मैसेज देती हुई वे कहती हैं, “मैं बौडी पोजिटिविटी पर अधिक महत्व देती हूँ. जिस काम में आप को खुशी मिले, उसे करें और खुश रहें क्योंकि यह लाइफ आप की है. सब का ध्यान रखने के चक्कर में खुद को न भूलें.” ●



मासिक पत्रिका
कीमत्त 40 रु.

हिंदी की लोकप्रिय कथा पत्रिका

मनोहर कहानियाँ

1 साल के लिए 440 रु. 2 साल के लिए 880 रु.

विशेष छूट

रजिस्टर्ड डाक
खर्च फ्री

दिल्ली प्रेस कार्यालय फोन नं. : 011-41398888, एक्सटेंशन नं. : 221, 281, टोल फ्री फोन नं. : 1800-103-8880
ईमेल - subscription@delhipress.in / circulation@delhipressgroup.com

वर्गीकृत विज्ञापन

जासूसी सेवा

शक, धोखा, तलाश, विवाह, तलाक चरित्र (कोर्ट सबूत) व्यापार, पीछा संबंधी जांच/तहकीकात (देश/विदेश) गुप्त कराएं Intelligence Detective Bureau #9810426431, 9810796560.

वैधानिक चेतावनी

पाठकों को आगाह किया जाता है कि वे इन विज्ञापनों पर कोई पहल करने से पहले तथ्यों का पता अवश्य लगा लें. यह पत्रिका विज्ञापनदाताओं द्वारा विज्ञापनों में दी गई वर और वधू की उम्र, आय और सामाजिक स्थिति के दावों की पुष्टि नहीं करती.

विज्ञापनदाताओं के लिए सूचना : सरिता में वैवाहिक विज्ञापनों एवं गोद विज्ञापनों की दर रु. 20 प्रति शब्द है. कम से कम 20 शब्द अवश्य होने चाहिए. अन्य व्यवसायी एवं व्यक्तिगत विज्ञापनों की दर सरिता में 15 रुपए प्रति शब्द है कम से कम 16 शब्द होने आवश्यक हैं. *आप अपना वैवाहिक विज्ञापन और शुल्क निम्न पते पर भेजें :* दिल्ली प्रेस भवन, ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. फोन : 011-41398888, 41540004, फैक्स : 011-41540714. *अन्य कार्यालयों के पते व फोन नंबर सूची में पृष्ठ नं. 6 पर दिए गए हैं.*

दिल्ली प्रेस



पाक्षिक पत्रिका

गृहशोभा
सचेत, सक्षम, सफल, स्मार्ट

स्वतंत्र चट्टान से
विश्वास का आईना बनाए,
तैयार करे हर कल के लिए.

संपर्क करें या <http://www.delhipress.in/subscribe> देखें.

DELHI
PRESS
MAGAZINES



पाक्षिक पत्रिका

सरस सलिल जनजन की आवाज

राजनीति | समाज | अंधविश्वास | सैक्स | खेल | फिल्म
लेख, कहानियां व स्थानीय स्तंभ

ज्ञाहक बनने के लिए <http://www.delhipress.in/subscribe> देखें.

करोड़ो लोगो का आजमाया



झुर्रियां

काले घेरे

छाईया

MYFAIR

रूप संवारे, त्वचा निखारे

- ▲ क्रीम
- ▲ साबुन
- ▲ फेस वाश
- ▲ सन स्क्रीन

सम्पूर्ण कॉस्मेटिक रेंज
हर प्रमुख दवा विक्रेता के यहां उपलब्ध
9896134500

A Product of
ZEE LABORATORIES LTD.

Online Shopping:
www.myfair.in

रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाए



MultipreX™

Advanced Formula For
Strong Immunity

कैप्सूल, सिरप,
ओरल ड्राप्स, पाउडर

Multivitamin, Multiminerals
& Antioxidants

रोजाना सेवन करें
9896134500
हर प्रमुख दवा विक्रेता के यहां उपलब्ध

प्रतिरक्षा में सुधार, विटामिन और मिनरल की कमी को पूरा कर रोगों से बचाए



क्या आपको पार्ले पसंद है?
तो आपको हमारी स्नैक्स और
बेकरी की रेंज भी ज़रूर पसंद आएगी.



पेश है स्वादिष्ट स्नैक्स और बेकरी प्रोडक्ट्स की विशाल रेंज हाउस ऑफ पार्ले की ओर से.
चाहे क्रिकेट मैच हो या पार्टी, हमारे प्रोडक्ट्स हर लम्हे को यादगार बना देते हैं.

हमारी रेंज:

- चैटकीन्स - 15 वैरिएंट्स • पार्लेज वेफर्स - 7 फ्लेवर्स • फुलटॉस - 4 फ्लेवर्स
- हैप्पी हैप्पी केक्स - 3 फ्लेवर्स • रस्क - 2 फ्लेवर्स

